विक्रम संवत् 2082 ▪ भाद्रपद/आश्विन (क्वॉर) मास (07) ▪ 01 सितंबर 2025 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

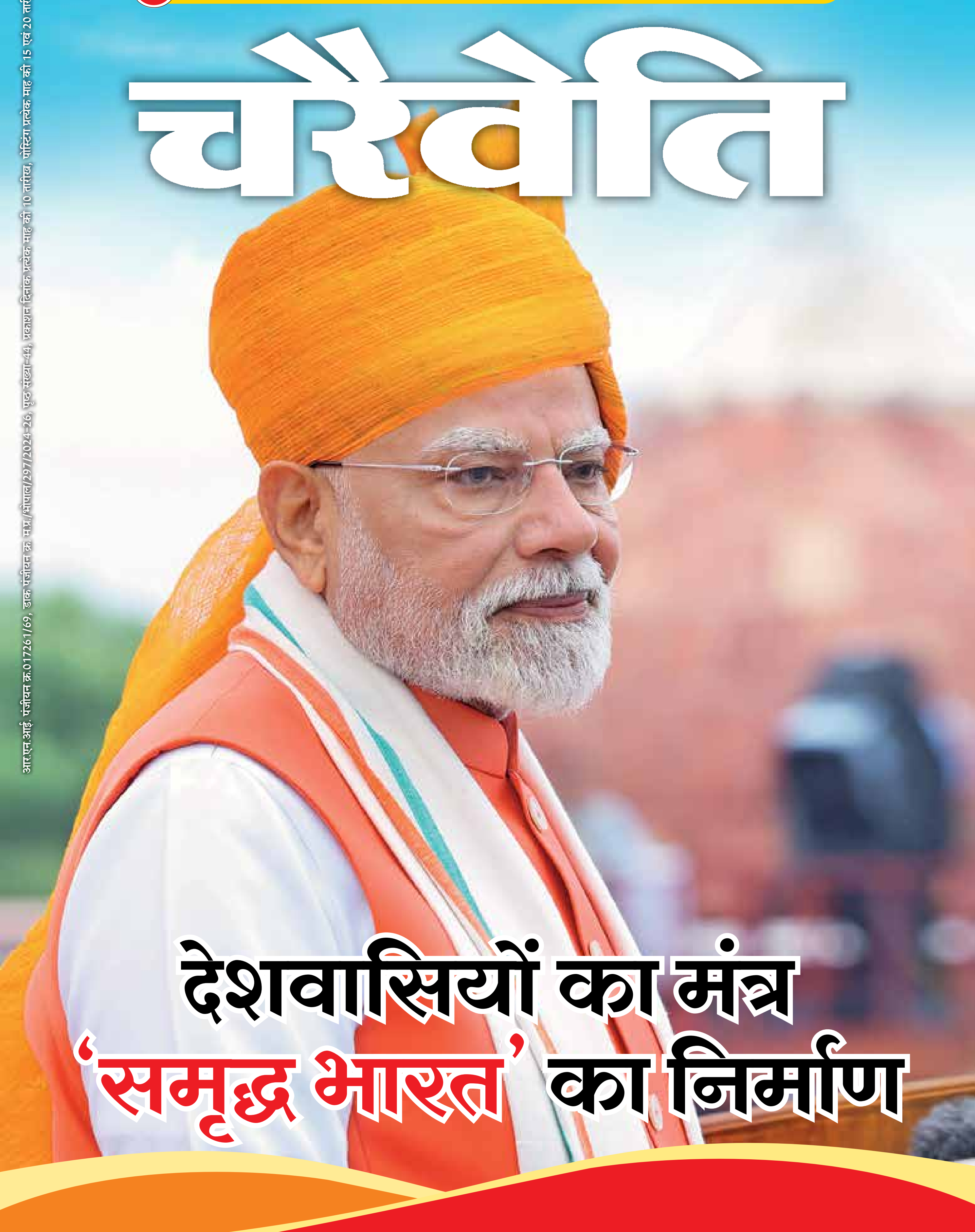

देशवासियों का मंत्र 'समृद्ध भारत' का निर्माण

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर महात्मा गांधी जी की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की पुण्यतिथि पर सदैव अटल पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की पुण्यतिथि पर सदैव अटल पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

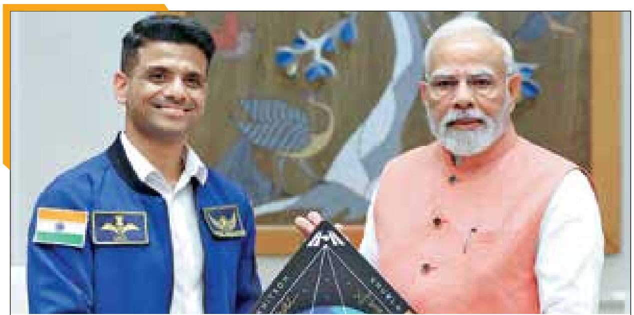

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला ने मुलाकात की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने फिलीपींस के राष्ट्रपति से मुलाकात की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भाजपा मुख्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बच्चों के साथ रक्षा बंधन का त्यौहार मनाया।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी.नड्डा जी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस की स्मृति में मौन जुलूस में भाग लिया और प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

अनुक्रमणिका

» **संपादकीय** - संजय गोविन्द खोचे 04
- समृद्ध भारत का निर्माण ही एक मात्र रास्ता

» **कवर स्टोरी** - 05
- देशवासियों का मंत्र "समृद्ध भारत" का निर्माण - पीएम मोदी

05

21

- **79 वाँ स्वतंत्रता दिवस** 14
  » आत्मनिर्भर और विकसित भारत बनाएंगे- डॉ. यादव
- **कार्यकर्ताओं की बैठक** 18
  » मोदी जी ने बदल दी राजनीति की संस्कृति...
- **परफॉर्मेंस की राजनीति** 21
  » मोदी सरकार ने अभूतपूर्व विकास और उत्थान किया है...
- **दुनिया की उम्मीद भारत से** 26
  » भारत दुनिया के लिए आशा की किरण-नरेन्द्र मोदी
- **कविता : अटल बिहारी वाजपेयी** 28
  » आओ फिर से दिया जलाएँ
- **130 वाँ संवैधानिक संशोधन बिल** 29
  » भाजपा और एनडीए हमेशा नैतिक मूल्यों के पक्षधर...
- **माता सीता मंदिर भूमि पूजन** 31
  » मिथिला संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र- अमित शाह
- **मन की बात** 33
  » "वोकल फॉर लोकल"- त्योहारों को स्वदेशी गर्व के साथ...
- **शिक्षक दिवस** 38
  » संपूर्ण शिक्षक बिरादरी के सम्मान का दिन है शिक्षक दिवस
- **पुण्यतिथि** 40
  » देश सेवा में डॉ. विश्वेश्वरैया
- **विचार प्रवाह** 41
  » राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

• मुख्य व्रत-त्यौहार

1. श्रीचंद्र नवमी 2. तेजा दशमी 3. जलझूलनी (डोल) एकादशी 4. श्रवण द्वादशी 5. प्रदोष व्रत 6. अनंत चतुर्दशी, पा. गणेश वि. 7. स्नान दान व्रत पूर्णिमा, गुर्जर रोट पूजन, 8 से 21 तक पितृपक्ष 10. गणेश चतुर्थी व्रत 14. महालक्ष्मी, जिऊतिया व्रत 17. इंदिरा एकादशी व्रत 19. प्रदोष व्रत 20. शिव चतुर्दशी व्रत 21. स्नान दान पितृमोक्ष अमावस 22. शारदीय नवरात्रारंभ, बैठकी 23. चद्रंदर्शन 25. विनायकी चतुर्थी व्रत 26. उपांग ललिता व्रत 29. सरस्वती आवाहृ, निशा पूजा 30. दुर्गाष्टमी, महाष्टमी व्रत

• मुख्य जयंती-दिवस

5. शिक्षक दिवस, डॉ. राधाकृष्णन जयंती 6. सद्गुरु धनीदेव परमधाम वास दिवस 8. विश्व साक्षरता दिवस 13. स्वा. ब्रह्मानंद लोधी निर्वाण दिवस 14. राष्ट्रीय हिन्दी दिवस 15. इंजीनियर डे, इं. विश्वश्वैरिया ज. 20. म. प्राणनाथ प्रगटन महोत्सव 25. पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती 27. विश्व पर्यटन दिवस 28. लता मंगेशकर जयंती 29. विश्व हृदय दिवस

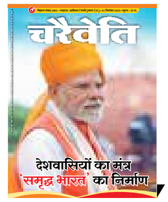

वर्ष-57, अंक : 07, भोपाल, सितंबर 2025

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

हमने धर्म के आधार पर लोक पालन और राज्य की व्यवस्था का विधान किया। केवल सत्ता भोग के लिए राज स्थापना अपने जीवन का लक्ष्य नहीं। धर्म के लिए राज्य की आवश्यकता हुई इसलिए धर्म से प्रेरणा जरूरी है। राजा धर्म रक्षण के लिए उत्तरदायी है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•

सम्पादक
मुद्रक एवं प्रकाशक
संजय गोविंद खोचे*

•

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

•

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

समृद्ध भारत का निर्माण ही एक मात्र रास्ता

भारतीय नागरिकों का 2014 का निर्णय भारत के सुनहरे भविष्य के आधार को तैयार कर चुका है, 2014, 2019 व 2024 के निर्णयों के बाद अब भारत ना तो डरता है, ना डराता है, आंखों में आंखें डालकर बात करता है।

आत्मनिर्भर भारत ही वह मंत्र है जिसके द्वारा भारत समय-समय पर आने वाली चुनौतियों का डटकर मुकाबला कर सकता है। भारत के पास चुनौतियों का सामने से मुकाबला करने के लिए श्री नरेंद्र मोदी जी जैसा सक्षम नेतृत्व है, युवा शक्ति है, ज्ञान का भंडार है, सनातन संस्कृति है, विविधताओं की ताकत है,140 करोड़ लोगों का देश-140 करोड़ लोगों की ताकत रखता है, मजबूत लोकतंत्र है, परिवारवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद व तुष्टीकरण के दायरे से देश बाहर आ चुका है। कानून का शासन है, देश का प्रधानमंत्री स्वयं खुद को कानून की मर्यादा का पालन करने के लिए प्रस्तावित करता है, ऐसी सभी विविधताओं से भरा देश अपने नागरिकों के प्रति दायित्वों का निर्वहन करने के लिए सक्षम है। बस आवश्यकता है देश की आवश्यकताओं को समझ कर सरकार व आम जनता का गठजोड़ चुनौतियों को परास्त कर, तात्कालिक, मध्य अवधि एवं दीर्घ अवधि के लिए कमर कस कर देश निर्माण के लिए, देश के लिए, मजबूत व समृद्ध भारत का निर्माण करे, निराशा, अंधकार व भविष्य के प्रति प्रश्न चिन्ह तो 2014 में समाप्त हो चुके हैं।

भारतीय नागरिकों का 2014 का निर्णय भारत के सुनहरे भविष्य के आधार को तैयार कर चुका है, 2014, 2019 व 2024 के निर्णयों के बाद अब भारत ना तो डरता है, ना डराता है, आंखों में आंखें डालकर बात करता है।

देश को अपने नेतृत्व व देश की शक्ति पर अडिग विश्वास है, 11वीं अर्थव्यवस्था से चौथी अर्थव्यवस्था तक की यात्रा सहज भाव में ही पूरी हो गई है। अब विकसित भारत@2047 का पड़ाव बाकी है, तीसरी अर्थव्यवस्था का पड़ाव शीघ्र पूरा होने वाला है।

वैश्विक परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ-साथ समस्याएं तो आना स्वाभाविक हैं। देश ने तय कर लिया है राष्ट्रीय हितों के साथ कोई समझौता संभव नहीं है और विशेष कर किसानों, पशुपालकों, छोटे उद्योगों को सरकार का संरक्षण सदैव जारी रहेगा। सरकार के साहसिक निर्णय की जितनी प्रशंसा की जावे वह कम है।

सरकार ने अपने नागरिकों, किसानों, पशुपालकों व छोटे-छोटे उद्योगों को चलाने वाले उद्यमियों पर भरोसा दिखाया है और वैश्विक ताकतों के आगे झुकने से इनकार कर दिया है। यही नए भारत की ताकत है। यह प्रगतिशील भारत की ताकत है। यही एकजुट भारत की ताकत है। यह सिद्ध करता है कि सरकार को अपने नागरिकों, युवा शक्ति, ज्ञान, व कौशल पर अटूट विश्वास है।

भारत ने अपनी विदेश नीति, अर्थनीति को बनाते वक्त देश के हितों, देश की आवश्यकताओं व देश को सामने रखकर नीति निर्धारण किया है। इस बात से यह भी सिद्ध होता है देश का नेतृत्व स्वतंत्र निर्णय लेने में सक्षम है। भारत अब विदेशी दबाब से मुक्त हो चुका है।

यूक्रेन युद्ध के संकट के दौर में भारत ने न सिर्फ अपनी जनता को युद्ध के परिणामों से बचाया, अपितु ''वसुधैव कुटुंबकम'' का पालन करते हुए विश्व के तमाम देशों को संभालने में मदद की तथा विश्व के तमाम देशों को आर्थिक मंदी के दौर में जाने से बचाया। युद्ध की विभीषिका से बचाने में भारत ने अग्रणी भूमिका का निर्वाहन किया। इसके लिए भारत का नेतृत्व प्रशंसा का, सम्मान का व वैश्विक नेतृत्व का हकदार है।

चुनौतियों के इस दौर में भी प्रधानमंत्री जी ने बिना दबाव में आए देश के नागरिकों के हितों को सर्वोपरि रखकर 15 अगस्त को लाल किले से अपने संबोधन में कहा कि - दशकों से आतंक को झेलने वाले देश ने, आतंक से निपटने के लिए न्यू नॉर्मल स्थापित कर दिए हैं, अब आतंक को पालने पोसने वाले और आतंकियों को ताकत देने वाले में कोई अंतर नहीं है। दोनों मानवता के समान दुश्मन हैं, खून व पानी एक साथ नहीं बहेगा, भारत के किसानों के हिस्से का पानी भारत के किसानों के काम आएगा। किसान हित, राष्ट्र हित सर्वोपरि है, मेड इन इंडिया की ताकत को ऑपरेशन सिंदूर में सिद्ध किया जा चुका है। यह मेड इन इंडिया की ही ताकत है जिसके बल पर ऑपरेशन सिंदूर का सफल संचालन संभव हो पाया और दुश्मन को घुटनों के बल आने के लिए मजबूर होना पड़ गया।

सरकार के निर्णय लेने की क्षमता, निर्णय की गति व निर्णयों की पारदर्शिता का ही परिणाम है 50-60 वर्षों से पेंडिंग सेमीकंडक्टर निर्माण की फाइल अब अपने मुकाम पर पहुंच पाई है। चार नए यूनिट को सरकार हरी झंडी दिखा चुकी है तथा इस वर्ष के अंत तक भारत के लोगों द्वारा बनी हुई मेड इन इंडिया चिप्स बाजार में आ जावेगी।

प्रधानमंत्री जी को शासन प्रमुख के रूप में 25 वर्ष का अनुभव हो चुका है। निश्चित रूप से देश प्रधानमंत्री जी के अनुभवों का लाभ उठा रहा है। हर क्षेत्र में आए परिवर्तन व विकास की नई परिभाषा ही देश को आत्मनिर्भर भारत व समृद्ध भारत बनाने में सक्षम है। संबोधन में प्रधानमंत्री जी ने बहुत ही प्रेरणादायी ''परिश्रम में जो तपा है- उसने ही समय को मोड़ा है'' प्रेरक व युवाओं के लिए आदर्श स्थापित करने का मार्ग बताया।

79 वे स्वतंत्रता दिवस पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आत्मनिर्भर व विकसित भारत के निर्माण में मध्य प्रदेश की हिस्सेदारी को सुनिश्चित की है, मध्य प्रदेश सरकार गरीब, युवा, अन्नदाता व नारी कल्याण के लिए संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है। मध्य प्रदेश सरकार ने अगले चार वर्षों में अपने बजट को दुगना करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। ग्लोबल इन्वेस्टर सम्मिट- 2025 में नवकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में 5.75 लाख करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जिससे 1.85 लाख रोजगार का सृजन संभावित है।

प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी के नेतृत्व में पार्टी संगठन का प्रयास है कि हर दिल में भाजपा रहे, कोई बूथ, विधानसभा न छूटे, कोई समाज पहुंच से दूर ना रहे, प्रदेश के सभी कार्यकर्ता हर बूथ में कमल खिलाने के लिए जुटे हुए हैं, प्रदेश के कोने-कोने में भाजपा को पहुंचाने का कार्य जारी है। हर व्यक्ति को भाजपा से जोड़ने का प्रयास हो रहा है।

भाजपा 17 सितंबर से 2 अक्टूबर ''सेवा पखवाड़ा'' मना रही है। सेवा पखवाड़े में स्वच्छता अभियान, एक पेड़ मां के नाम के साथ-साथ एक बगिया मां के नाम एवं नमो वन व नमो पथ अभियान को आगे बढ़ाया जाएगा। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

देशवासियों का मंत्र 'समृद्ध भारत' का निर्माण - पीएम मोदी

140 करोड़ देशवासी तिरंगे के रंग में रंगे हैं। हर घर तिरंगा, भारत के हर कोने से चाहे रेगिस्तान हो, या हिमालय की चोटियां, समुद्र के तट हो या घनी आबादी वाले क्षेत्र, हर तरफ से एक ही गूंज है, एक ही जयकारा है, हमारे प्राण से भी प्यारी मातृभूमि का जयगान है।

आजादी का महापर्व 140 करोड़ संकल्पों का पर्व है। आजादी का पर्व सामूहिक सिद्धियों का, गौरव का पल है और हृदय उमंग से भरा हुआ है। देश एकता की भावना को निरंतर मजबूती दे रहा है। 140 करोड़ देशवासी तिरंगे के रंग में रंगे हैं। हर घर तिरंगा, भारत के हर कोने से चाहे रेगिस्तान हो, या हिमालय की चोटियां, समुद्र के तट हो या घनी आबादी वाले क्षेत्र, हर तरफ से एक ही गूंज है, एक ही जयकारा है, हमारे प्राण से भी प्यारी मातृभूमि का जयगान है।

सन् 1947 में अनंत संभावनाओं के साथ, कोटि-कोटि भुजाओं के सामर्थ्य के साथ, हमारा देश आजाद हुआ। देश की आकांक्षाएं उड़ानें भर रही थीं, लेकिन चुनौतियां उससे भी कुछ ज्यादा थी। पूज्य बापू के सिद्धांतों पर चलते हुए, संविधान सभा के सदस्यों ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण दायित्व निभाया। भारत का संविधान 75 वर्ष से एक प्रकाश स्तंभ बनकर के हमें मार्ग दिखाता रहा है। भारत के संविधान निर्माता अनेक महापुरुष डॉ. राजेंद्र प्रसाद, बाबा साहब अंबेडकर, पंडित नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी, इतना ही नहीं हमारी नारी शक्ति का भी योगदान कम नहीं था। हंसा मेहता जी, दक्षयानी वेलायुद्धन जैसी विदुषियों ने भी भारत के संविधान को सशक्त करने में अपनी भूमिका निभाई थी। मैं लाल किले के प्राचीर से देश का मार्गदर्शन करने वाले, देश को दिशा देने वाले, संविधान के निर्माताओं को आदरपूर्वक नमन करता हूं।

हम डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125 वीं जयंती भी मना रहे हैं। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारत के संविधान के लिए बलिदान देने वाले देश के पहले महापुरुष थे। संविधान के लिए बलिदान, धारा 370 की दीवार गिराकर, एक देश एक संविधान के मंत्र को जब हमने साकार किया, तो हमने डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि दी। लाल किले पर कई विशेष महानुभाव उपस्थित हैं, दूर-सुदूर गांव के पंचायतों के सदस्य हैं, ड्रोन दीदी के प्रतिनिधि हैं, लखपति दीदी के प्रतिनिधि है, खेल जगत से जुड़े लोग हैं, राष्ट्र जीवन में कुछ ना कुछ देने वाले यहां महानुभाव उपस्थित हैं, एक प्रकार से यहां मेरी आंखों के सामने, लघु भारत के दर्शन कर रहा हूं और टेक्नोलॉजी के माध्यम से विशाल भारत के साथ भी आज लाल किला जुड़ा हुआ है। मैं आजादी के इस महापर्व पर देशवासियों का, विश्व भर में फैले हुए भारत प्रेमियों का, हमारे मित्रों का,

हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं।

प्रकृति हम सब की परीक्षा ले रही है। पिछले कुछ दिनों में प्राकृतिक आपदाएं, भूस्खलन, बादलों का फटना, न जाने कितनी-कितनी आपदाएं हम झेल रहे हैं। पीड़ितों के साथ हमारी संवेदना है, राज्य सरकारें और केंद्र सरकार मिलकर के बचाव के काम, राहत के काम, पुनर्वासन के काम में पूरी शक्ति से जुटे हुए हैं।

15 अगस्त का एक विशेष महत्व भी देख रहा हूं। बहुत गर्व हो रहा है, मुझे लाल किले की प्राचीर से ऑपरेशन सिंदूर के वीर जांबाजों को सैल्यूट करने का अवसर मिला है। हमारे वीर जांबाज सैनिकों ने, दुश्मनों को उनकी कल्पना से परे सजा दी है। 22 अप्रैल को पहलगाम में सीमा पार से आतंकियों ने आकर के जिस प्रकार का कत्लेआम किया, धर्म पूछ-पूछ करके लोगों को मारा गया, पत्नी के सामने पति को गोलियां मार दी, बच्चों के सामने अपने पिता को मौत के घाट उतार दिया गया, पूरा हिंदुस्तान आक्रोश से भरा हुआ था, पूरा विश्व भी इस प्रकार के संहार से चौंक गया था।

ऑपरेशन सिंदूर उसी आक्रोश की अभिव्यक्ति है। 22 तारीख के बाद हमने हमारे सेना को खुली छूट दे दी। रणनीति वो तय करें, लक्ष्य वो तय करें, समय भी वो चुने और हमारी सेना ने वो करके दिखाया, जो कई दशकों तक कभी हुआ नहीं था। सैकड़ों किलोमीटर दुश्मन की धरती पर घुसकर के आतंकी हेडक्वार्टर्स को मिट्टी में मिला दिया, आतंकी इमारतों को खंडहर बना दिया। पाकिस्तान की नींद अभी भी उड़ी हुई है। पाकिस्तान में हुई तबाही इतनी बड़ी है कि रोज नए-नए खुलासे हो रहे हैं, नई-नई जानकारियां आ रही हैं।

हमारा देश कई दशकों से आतंक को झेलता आया है। देश के सीने को छलनी कर दिया गया है। अब हमने एक न्यू नॉर्मल स्थापित किया, आतंक को और आतंकी को पालने-पोसने वालों को, आतंकियों को ताकत देने वालों को, अब हम अलग-अलग नहीं मानेंगे। वो मानवता के समान दुश्मन हैं, उनके बीच कोई फर्क नहीं है। अब भारत ने तय कर लिया है, कि इन न्यूक्लियर की धमकियों को अब हम सहने वाले नहीं हैं, न्यूक्लियर ब्लैकमेल लंबे अरसे से चला आया है, अब वो ब्लैकमेल नहीं सहा जाएगा। आगे भी अगर दुश्मनों ने ये कोशिश जारी रखी, हमारी सेना तय करेगी, सेना की शर्तों पर, सेना जो समय निर्धारित करे उस समय पर, सेना जो तौर तरीके तय करें उस तौर तरीके से, सेना जो लक्ष्य तय करे उस लक्ष्य को अब हम अमल में लाकर के रहने वाले हैं। हम मुंह तोड़ जवाब देंगे।

भारत ने तय कर लिया है, खून और पानी एक साथ नहीं बहेंगे। देशवासियों को भली-भांति पता चला है कि सिंधु का समझौता कितना अन्याय पूर्ण है, कितना एक तरफा है। भारत से निकलती नदियों का पानी, दुश्मनों के खेत को सींच रहा है और मेरे देश के किसान, मेरे देश की धरती पानी के बिना प्यासी है। ये ऐसा समझौता था, जिसने पिछले 7 दशक से मेरे देश के किसानों का अकल्पनीय नुकसान किया है। अब हिंदुस्तान के हक का जो पानी है उस पर अधिकार सिर्फ और सिर्फ हिंदुस्तान का है, हिंदुस्तान के किसानों का है। भारत ने सिंधु समझौते को, उस स्वरूप को दशकों तक सहा है, उस स्वरूप को आगे नहीं सहा जाएगा। किसान हित में, राष्ट्रहित में, यह समझौता हमें मंजूर नहीं है।

आजादी के लिए असंख्य लोगों ने बलिदान दिए, पूरी जवानी खपा दी, जेलों में जिंदगी गुजारी है, फांसी के तख्त पर लटके हैं, कुछ लेने, पाने, बनने के लिए नहीं, मां भारती के स्वाभिमान के लिए, कोटि-कोटि जनों की आजादी के लिए, गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए और मन में एक ही भाव था, स्वाभिमान।

गुलामी ने हमें निर्धन बना दिया, गुलामी ने हमें निर्भर भी बना दिया, औरों पर हमारी निर्भरता बढ़ती गई। आजादी के बाद कोटि-कोटि जनों के पेट भरना बड़ी चुनौती थी, और यही मेरे देश के किसान हैं जिन्होंने खून पसीना एक करके देश के अन्न के भंडार भर दिए। अनाज के संबंध में देश को आत्मनिर्भर बना दिया। एक राष्ट्र के लिए आत्मसम्मान की सबसे बड़ी कसौटी आज भी उसकी आत्मनिर्भरता है।

विकसित भारत का आधार भी है आत्मनिर्भर भारत। जो दूसरों पर ज्यादा निर्भर रहता है, उसकी आजादी पर उतना ही बड़ा प्रश्न चिन्ह लग जाता है और दुर्भाग्य तो तब बन जाता है, जब निर्भरता की आदत लग जाए, पता ही ना चले, हम कब आत्मनिर्भरता छोड़ रहे हैं और कब किसी के निर्भर हो जाते हैं, यह आदत खतरे से खाली नहीं है, और इसलिए प्रतिपल जागरूक रहना पड़ता है आत्मनिर्भर होने के लिए।

आत्मनिर्भरता का नाता सिर्फ आयात और निर्यात, रुपया, पैसे, पाउंड, डॉलर, यहां तक सीमित नहीं है, इतना सीमित अर्थ उसका नहीं है। आत्मनिर्भरता का नाता हमारे सामर्थ्य से जुड़ा हुआ है और जब आत्मनिर्भरता खत्म होने लगती है, तो सामर्थ्य भी निरंतर क्षीण होता जाता है और इसलिए हमारे सामर्थ्य को बचाए रखने, बनाए रखने और बढ़ाए रखने के लिए, आत्मनिर्भर होना बहुत अनिवार्य है!

ऑपरेशन सिंदूर में देखा है, मेड इन इंडिया की कमाल क्या थी। दुश्मन को पता तक ना चला, कि कौन से शस्त्र-अस्त्र हैं, ये कौन सा सामर्थ्य है, जो पलक भर में उनको नष्ट कर रहा है। सोचिए अगर हम आत्मनिर्भर ना होते, तो क्या ऑपरेशन सिंदूर इतनी त्वरित गति से हम कर पाते, पता नहीं कौन सप्लाई देगा नहीं देगा, साजो सामान मिलेगा नहीं मिलेगा, इसी के चिंता बनी रहती। लेकिन मेड इन इंडिया की शक्ति हमारे हाथ में थी, सेना के हाथ में थी, इसलिए बिना चिंता, बिना रुकावट, बिना हिचकिचाहट, हमारी सेना अपना पराक्रम करती रही और यह पिछले 10 साल से लगातार डिफेंस के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता पर हम एक मिशन लेकर के चलें हैं, उसके नतीजे नजर आ रहे हैं।

एक और विषय पर ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। यह बात से कोई इनकार नहीं कर सकता है, कि 21 वीं सदी टेक्नोलॉजी ड्रिवन सेंचुरी है और जब टेक्नोलॉजी ड्रिवन है और इतिहास की तरफ नजर करें तो पता है इतिहास गवाह है, जिन-जिन देशों ने टेक्नोलॉजी में महारथ हासिल की, वो देश विकास की ऊंचाइयों को पार कर गए, शिखर पर पहुंच गए, आर्थिक शक्ति नए पैमाने पर पहुंचती है। हम जब टेक्नोलॉजी के अलग-अलग आयामों की बात करते हैं। आपका ध्यान आकर्षित करता हूं सेमीकंडक्टर पर, उदाहरण के तौर पर बताता हूं। लाल किले से किसी की भी, किसी सरकार की आलोचना करने के लिए खड़ा नहीं हूं और ना ही मैं करना चाहता हूं, लेकिन देश की युवा पीढ़ी को जानकारी होना भी उतना जरूरी है। देश में 50-60 साल पहले

सेमीकंडक्टर को लेकर के फाइलें शुरू हुई। 50-60 साल पहले फैक्ट्री का विचार चालू हुआ। नौजवान जान करके हैरान हो जाएंगे, आज सेमीकंडक्टर जो पूरी दुनिया की एक ताकत बन गया है। 50-60 साल पहले वो विचार, वो फाइलें अटक गई, लटक गई, सेमीकंडक्टर के विचार की ही भ्रूण हत्या हो गई, 50-60 साल गँवा दिए। हमारे बाद कई देश सेमीकंडक्टर में आज महारत हासिल करके दुनिया में अपनी ताकत को प्रस्थापित कर रहे हैं।

आज हमने उस बोझ से मुक्त होकर के मिशन मोड में सेमीकंडक्टर के काम को आगे बढ़ाया है। 6 अलग-अलग सेमीकंडक्टर के यूनिट्स जमीन पर उतर रहे हैं, चार नए यूनिट्स को हमने ऑलरेडी हरी झंडी दिखा दी है, ग्रीन सिग्नल दे दिया है। और देशवासियों और मेरे खास करके नौजवानों और विश्व भर में भारत की टेक्नोलॉजी की ताकत को समझने वाले लोगों को भी कहना चाहूंगा। इसी वर्ष के अंत तक मेड इन इंडिया भारत की बनी हुई, भारत में बनी हुई, भारत के लोगों द्वारा बनी हुई मेड इन इंडिया चिप्स, बाजार में आ जाएगी।

दूसरा उदाहरण देना चाहता हूं, अब ऊर्जा के क्षेत्र में हम सब जानते हैं, कि हम एनर्जी के लिए बहुत सारे देशों पर डिपेंडेंट है, पेट्रोल हो, डीजल हो, गैस हो, लाखों करोड़ रुपए हमें खर्च करके लाना पड़ता है। हमें इस संकट से देश को आत्मनिर्भर बनाना, ऊर्जा में आत्मनिर्भर बनाना बहुत जरूरी है। हमने बीड़ा उठाया और आज 11 वर्ष में सोलर एनर्जी 30 गुणा बढ़ चुकी है। हम नए-नए डैम बना रहे हैं, ताकि हाइड्रो का विस्तार हो और हमें क्लीन एनर्जी उपलब्ध हो। भारत मिशन ग्रीन हाइड्रोजन लेकर के आज हजारों करोड़ रुपए इन्वेस्ट कर रहा है। भविष्य की ऊर्जा को ध्यान में रखकर के, ऊर्जा के क्षेत्रों को ध्यान में रखकर के, भारत न्यूक्लियर एनर्जी पर भी बहुत बड़े इनीशिएटिव ले रहा है। न्यूक्लियर एनर्जी में 10 नए न्यूक्लियर रिएक्टर तेजी से काम कर रहे हैं। 2047 तक, जोकि हमने विकसित भारत का लक्ष्य तय किया है। जब देश की आजादी के 100 साल होंगे, हम परमाणु ऊर्जा क्षमता 10 गुना से भी अधिक बढ़ाने का संकल्प लेकर के आगे बढ़ रहे हैं।

रिफॉर्म एक निरंतर प्रक्रिया है, समय अनुकूल परिस्थितियों के अनुसार रिफार्म्स करते जाना होता है, हम न्यूक्लियर एनर्जी के क्षेत्र में बहुत बड़े रिफॉर्म लेकर के आए हैं। अब हमने प्राइवेट सेक्टर के लिए भी परमाणु ऊर्जा के द्वार खोल दिए हैं, हम शक्ति को जोड़ना चाहते हैं।

दुनिया आज ग्लोबल वार्मिंग के लिए चिंता करती है, तब मैं विश्व को भी बताना चाहता हूं, कि भारत ने तय किया था, कि हम 2030 तक क्लीन एनर्जी भारत में 50 प्रतिशत तक पहुंचा देंगे। यह लक्ष्य हमारा 2030 तक था। मेरे देशवासियों का सामर्थ्य देखिए, मेरे देशवासियों की संकल्प शक्ति

देखिए, मेरे देशवासियों को विकसित भारत बनाने का संकल्प को पूर्ण करने के लिए उनकी दौड़ देखिए, हमने जो लक्ष्य 2030 में तय किया था, वो 50 प्रतिशत क्लीन एनर्जी का लक्ष्य 2025 में हमने कर लिया, 5 साल पहले हमने अचीव कर लिया। क्योंकि विश्व के प्रति भी हम संवेदनशील हैं, प्रकृति के प्रति भी हम जिम्मेदार हैं।

बजट का बहुत बड़ा हिस्सा यह पेट्रोल, डीजल, गैस, इन सबको लाने के लिए खर्च होता था। लाखों करोड़ रुपए चले जाते थे। अगर हम ऊर्जा में डिपेंड ना होते तो वो धन मेरे देश के नौजवानों के भविष्य के लिए काम आता, वो धन मेरे देश के गरीबों को गरीबी के खिलाफ लड़ाई लड़ने में काम आता, वो धन मेरे देश के किसानों के कल्याण में काम आता, वो धन मेरे देश के गांव की परिस्थितियों को पलटने के लिए काम आता, लेकिन हमें विदेशों को देना पड़ता था। अब हम आत्मनिर्भर बनने की दिशा में काम कर रहे हैं। देश को विकसित बनाने के लिए हम अब समुद्र मंथन की तरफ भी जा रहे हैं। हमारे समुद्र के मंथन को आगे बढ़ाते हुए, हम समुद्र के भीतर के तेल के भंडार, गैस के भंडार, उसको खोजने की दिशा में एक मिशन मोड में काम करना चाहते हैं और इसलिए **भारत नेशनल डीप वाटर एक्सप्लोरेशन मिशन शुरू करने जा रहा है**। यह ऊर्जा इंडिपेंडेंट बनने के लिए यह हमारी महत्वपूर्ण घोषणा है।

आज पूरा विश्व क्रिटिकल मिनरल को लेकर के बहुत ही सतर्क हो गया है, उसके सामर्थ्य को लोग भली-भांति समझने लगे हैं। कल तक जिस तरफ ज्यादा ध्यान नहीं था, वो आज सेंट्रल स्टेज पर आ गया है। हमारे लिए भी क्रिटिकल मिनरल्स में आत्मनिर्भरता बहुत अनिवार्य है। एनर्जी का सेक्टर हो, इंडस्ट्री का सेक्टर हो, रक्षा क्षेत्र हो, टेक्नोलॉजी का हर क्षेत्र हो, आज क्रिटिकल मिनरल्स की टेक्नोलॉजी के अंदर बहुत अहम् भूमिका है और इसलिए नेशनल क्रिटिकल मिशन हमने लॉन्च किया है, 1200 से अधिक स्थानों पर खोज का अभियान चल रहा है, और हम क्रिटिकल मिनरल में भी आत्मनिर्भर बनने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

स्पेस सेक्टर का कमाल तो हर देशवासी देख रहा है, गर्व से भरा जा रहा है। और हमारे ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला स्पेस स्टेशन से लौट चुके हैं और आने वाले कुछ दिनों में वो भारत भी आ रहे हैं। हम स्पेस में भी अपने दम पर आत्मनिर्भर भारत गगनयान की तैयारी कर रहे हैं। हम अपने बलबूते पर हमारा अपना स्पेस स्टेशन बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। और पिछले दिनों स्पेस में जो रिफॉर्म किए गए, मुझे बहुत गर्व हो रहा है, मेरे देश के 300 से ज्यादा स्टार्टअप्स अब सिर्फ और सिर्फ स्पेस सेक्टर में काम कर रहे हैं और उन 300 स्टार्टअप्स में हजारों नौजवान पूरे सामर्थ्य के साथ जुटे हैं। ये है मेरे देश के नौजवानों की ताकत और ये है हमारा हमारे देश के नौजवानों के प्रति विश्वास।

140 करोड़ भारतवासी 2047 में जब आजादी के 100 साल होंगे, विकसित भारत के संकल्प को परिपूर्ण करने के लिए पूरी ताकत से जुटे हैं। इस संकल्प की पूर्ति के लिए भारत आज हर सेक्टर में आधुनिक इकोसिस्टम तैयार कर रहा है और आधुनिक इकोसिस्टम हर क्षेत्र में हमारे देश को आत्मनिर्भर बनाएगा। लाल किले की प्राचीर से, देश के युवा वैज्ञानिकों को, टैलेंटेड यूथ को, इंजीनियर्स को और प्रोफेशनल्स को, और सरकार के हर विभागों को भी मेरा आव्हान है, क्या हमारा अपना मेड इन इंडिया फाइटर जेट्स के लिए जेट इंजन हमारा होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए? हम फार्मा ऑफ द वर्ल्ड माने जाते हैं। वैक्सीन में हम नए-नए कीर्तिमान स्थापित करते हैं, लेकिन क्या समय की मांग नहीं है, कि हम रिसर्च और डेवलपमेंट में और ताकत लगाएं, हमारे अपने पेटेंट हो, हमारे अपनी बनाई हुई मानव जाति के कल्याण की सस्ते से सस्ती और सबसे कारगर नई-नई दवाइयों की शोध हो, और संकट में साइड इफेक्ट के बिना मानव जाति के कल्याण में काम आए, BioEx पॉलिसी भारत सरकार ने बनाई

है, मैं देश के नौजवानों को कहता हूं आइये, BioEx पॉलिसी का अध्ययन करके आप कदम उठाइए, देश का भाग्य बदलना है, आपका सहयोग चाहिए।

आज आईटी का युग है, डेटा की ताकत है क्या समय की मांग नहीं है? ऑपरेटिंग सिस्टम से लेकर के साइबर सुरक्षा तक, डिप टेक से लेकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक, सारी चीजें हमारी अपनी हो, जिस पर हमारे ही लोगों का सामर्थ्य जुटा हुआ हो, उनकी सामर्थ्य शक्ति का विश्व को परिचय कराएं।

आज दुनिया में सोशल मीडिया कहो, बाकी प्लेटफार्म कहो, दुनिया के प्लेटफार्म पर हम काम कर रहे हैं। दुनिया को हमने दिखा दिया है, यूपीआई का हमारा अपना प्लेटफार्म आज दुनिया को अजूबा कर रहा है। हमारे में सामर्थ्य है रियल टाइम ट्रांजैक्शन में 50 प्रतिशत अकेला भारत यूपीआई के माध्यम से कर रहा है। इसका मतलब की ताकत है, क्रिएटिव वर्ल्ड हो, सोशल मीडिया हो, ये जितने भी प्लेटफॉर्म्स हैं, देश के नौजवानों चुनौती करता हूं, आइए हमारे अपने प्लेटफार्म क्यों ना हो, हम क्यों दूसरों पर निर्भर रहें, क्यों भारत का धन बाहर जाए और मुझे आपके सामर्थ्य पर भरोसा है।

जैसे ऊर्जा के क्षेत्र में हम डिपेंडेंट है, वैसा ही देश का दुर्भाग्य है कि फर्टिलाइजर, उसमें भी हमें दुनिया पर निर्भर रहना पड़ता है। देश के किसान भी फर्टिलाइजर का सही उपयोग कर करके धरती माता की सेवा कर सकते हैं। अनाप-शनाप उपयोग से भी धरती मां को बहुत नुकसान पहुंचा रहे हैं। लेकिन साथ-साथ देश के नौजवानों को कहना चाहता हूं, देश के उद्योग जगत को कहना चाहता हूं, देश के प्राइवेट सेक्टर को कहना चाहता हूं, आइए हम फर्टिलाइजर के भंडार भर दें, हम नए-नए तौर तरीके खोजें और भारत की आवश्यकता के अनुसार हम अपना फर्टिलाइजर तैयार करें, हम औरों पर निर्भर ना रहे।

आने वाला युग ईवी का है। अब ईवी बैटरी क्या हम नहीं बनाएंगे, हम निर्भर रहेंगे। सोलर पैनल की बात हो, इलेक्ट्रॉनिक व्हीकल्स के लिए जिन-जिन चीजों की आवश्यकताएं है, वो हमारी अपनी होनी चाहिए।

मैं ये इसलिए कहने की हिम्मत करता हूं, क्यों, क्योंकि मुझे देश के नौजवानों के सामर्थ्य पर भरोसा है और भरोसा सिर्फ वह मेरे देश के नौजवान है, इसलिए मात्र नहीं है, कोविड के समय हम बहुत सारी चीजों पर निर्भर थे, जब मेरे देश के नौजवानों को कहा गया, कि वैक्सीन हमारी अपनी चाहिए, देश ने करके दिखाया। कोविन प्लेटफार्म हमारा अपना होना चाहिए, देश ने करके दिखाया। करोड़ों-करोड़ों लोगों की जिंदगी बचाने का काम हमने किया है। वही स्पिरिट, वही जज्बा, हमें जीवन के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए अपना सब कुछ देना है, अपना जो बेस्ट है, हमें देखकर के रहना है।

पिछले 11 साल में एंटरप्रेन्योरशिप, उद्यमशीलता को बहुत बड़ी ताकत मिली। आज लाखों स्टार्टअप टीयर-2, टीयर-3 सिटी में देश की अर्थशक्ति को, देश के इनोवेशन को, ताकत दे रहे हैं। उसी प्रकार से मुद्रा योजना से हमारे देश के करोड़ों नौजवान उसमें भी हमारी बेटियां करोड़ों-करोड़ों लोग मुद्रा से लोन लेकर के अपना खुद का कारोबार कर रहे हैं। खुद तो अपने पैरों पर खड़े हुए हैं, लेकिन औरों को भी पैरों पर खड़े रहने की ताकत देते हैं। ये भी एक प्रकार से हर व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाने का अवसर दे रही है।

वूमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप, किसी का ध्यान नहीं था, पिछले 10 साल में वूमेन सेल्फ हेल्प ग्रुप ने कमाल करके दिखाया। आज उनका प्रोडक्ट दुनिया के बाजार में जाने लगे हैं। लाखों करोड़ों का कारोबार हमारे वूमेन सेल फाइल्स ग्रुप कर रहे हैं। मैंने एक बार मन की बात में खिलौने की बात कही थी। हम करोड़ों करोड़ों रुपए के खिलौने विदेश से लाते थे। मैंने ऐसे ही मन की बात में कहा, कि अरे मेरे देश के नौजवानों ऐसा भी करेंगे क्या, खिलौने भी बाहर से लाएंगे और आज मैं गर्व से कहता हूं, कि मेरा देश खिलौने एक्सपोर्ट करने लग गया है। यानी देश के सामर्थ्य को हर प्रकार के अवसर मिले, हर रूकावटों से मुक्ति मिले, उसको सर्वाधिक करने के लिए प्रेरित किया जाए, देश कर सकता है। मैं देश के युवाओं से कहता हूं, आईये आप इनोवेटिव आईडियाज लेकर के आए, आपके आइडियाज को मरने मत देना दोस्तों, आज का आपका आईडिया हो सकता है आने वाली पीढ़ी का भविष्य बना सकता है। मैं आपके साथ खड़ा हूं, मैं आपके लिए काम करने के लिए तैयार हूं, आपका साथी बनकर काम करने को तैयार हूं। आप आईये, हिम्मत जुटाईये, इनीशिएटिव लीजिए। जो युवा मैन्युफैक्चरिंग के बारे में सोचते हैं, आईये आगे बढ़िये। सरकार के नियमों में बदलाव करना है, मुझे बताइए, अब देश रुकना नहीं चाहता है। 2047 दूर नहीं है, एक-एक पल की कीमत है और हम एक भी पल गवाना नहीं चाहते दोस्तों।

ये आगे बढ़ने का अवसर है, बड़े सपने देखने का अवसर है, संकल्प के लिए समर्पित होने का अवसर है। जब सरकार आपके साथ है और मैं स्वयं आपके साथ हूं, अब हम नया इतिहास बना सकते हैं।

आज नेशनल मैन्युफैक्चरिंग मिशन पर बहुत तेजी से काम हो रहा है। हमारे MSMEs, उसका लोहा दुनिया मानती है, जो दुनिया में बड़ी-बड़ी चीजें बनती है ना, कुछ ना कुछ तो औजार हमारे देश के MSMEs के द्वारा जाते हैं। बड़े गर्व के साथ जाते हैं, लेकिन हम कंप्रिहेंसिव इंटीग्रेटेड विकास की राह पर जाना चाहते हैं, और इसलिए उनकी शक्ति बढ़े और उसमें भी मैंने पहले एक बार लाल किले से कहा था, जीरो डिफेक्ट जीरो इफेक्ट। मैं आज कहना चाहता हूं कि हमें विश्व बाजार में अपने सामर्थ्य का लोहा मनवाना है, तो हमें क्वालिटी में निरंतर नई ऊंचाइयों को पार करना है, दुनिया क्वालिटी को स्वीकार करती है। हमारी गुणवत्ता सबसे ज्यादा हो और सरकार के भी प्रयास हो, raw मटेरियल की भी उपलब्धि हो, हमारे प्रोडक्शन की कास्ट कम हो। हम सभी जो उत्पादन के क्षेत्र में लगे हैं, उन सबका मंत्र होना चाहिए, दाम कम लेकिन दम ज्यादा। हमारी हर प्रोडक्ट का दम ज्यादा हो, लेकिन दाम कम हो, इस भाव को लेकर के हमें आगे बढ़ना है। आजादी के लिए अनगिनत लोगों ने बलिदान दिए हैं। मैंने पहले भी कहा, जवानी खपा दी, फांसी पर लटक गए, क्यों स्वतंत्र भारत के लिए। 75-100 साल पहले का वो कालखंड याद कीजिए, पूरा देश स्वतंत्र भारत के मंत्र को लेकर के जीता था। आज समय की मांग है, स्वतंत्र भारत का मंत्र लेकर के जीने वालों ने हमें स्वतंत्र भारत दिया। आज 140 करोड़ देशवासियों का एक ही मंत्र होना चाहिए समृद्ध भारत। अगर कोटि-कोटि लोगों के बलिदान से स्वतंत्र भारत हो सकता है, तो कोटि-कोटि लोगों के संकल्प से, पुरुषार्थ से, आत्मनिर्भर बनने से, वोकल

फॉर लोकल की बात करने से, स्वदेशी के मंत्र को जापने से, समृद्ध भारत भी बन सकता है, वो पीढ़ी स्वतंत्र भारत के लिए खप गई थी, ये पीढ़ी समृद्ध भारत के लिए नए कदम उठाए यही समय की मांग है। और इसलिए मैं बार-बार आग्रह करता हूं और मैं देश के सभी influencers को कहना चाहता हूं। इस मंत्र को आगे बढ़ाने में मेरी मदद कीजिए। मैं सभी राजनीतिक दलों को, राजनेताओं को, सबसे कहता हूं कि आईये, यह किसी राजनीतिक दल का एजेंडा नहीं है, भारत हम सब का है, हम मिलकर के वोकल फॉर लोकल, उस मंत्र को हर नागरिक के जीवन का मंत्र बनाएं।

भारत में बनी हुई, भारत के नागरिकों के पसीने से बनी हुई वो चीजें, जिसमें भारत की मिट्टी की महक हो और जो भारत की आत्मनिर्भरता के संकल्प को ताकत देता हो, हम उसी को खरीदेंगे, हम उसी का उपयोग करेंगे, हम उस दिशा में आगे आए, यह हमारा सामूहिक संकल्प हो, देखते ही देखते हम दुनिया बदल देंगे।

हर छोटे-मोटे व्यापारी को, दुकानदार से आग्रह करना चाहता हूं, आपकी भी जिम्मेदारी है, हम छोटे थे, हमने बाजार में कभी देखा नहीं क्या, कि शुद्ध घी की दुकान, ऐसे ही लिखा जाता था कि घी की दुकान, लेकिन समय रहते लोग लिखने लगे शुद्ध घी की दुकान। मैं चाहता हूं, देश में ऐसे व्यापारी आगे आए, ऐसे दुकानदार आए, कि यहां स्वदेशी माल बिकता है, वो बोर्ड लगाए। हम स्वदेशी का गर्व करने लगे, हम स्वदेशी मजबूरी में नहीं, मजबूती के साथ उपयोग करेंगे। मजबूती के लिए उपयोग करेंगे और जरूरत पड़ी तो औरों को मजबूर करने के लिए उपयोग करेंगे, यह हमारी ताकत होनी चाहिए। यह हमारा मंत्र होना चाहिए।

मुझे बहुत लंबे समय से सरकार में काम करने का अवसर मिला। मैंने कई सारे उतार चढ़ाव देखे हैं। सरकारों की मुसीबतों से भी मैं परिचित हूं, व्यवस्थाओं की मर्यादाओं से भी परिचित हूं, लेकिन उसके बावजूद भी हमारी जिम्मेदारी है कि हम किसी की लकीर को छोटी करने में अपनी ताकत बर्बाद ना करें। मैं बड़े अनुभव से कहता हूं, किसी दूसरे की लकीर छोटी करने के लिए अपनी ऊर्जा हमें नहीं खपानी है, हमें पूरी ऊर्जा के साथ हमारी लकीर को लंबा करना है। हम अगर अपनी लकीर लंबी करते हैं, तो दुनिया भी हमारा लोहा मानेंगी। आज जब वैश्विक परिस्थितियों में आर्थिक स्वार्थ दिनों दिन बढ़ रहा है, तब समय की मांग है कि हम उन संकटों के रोते-बैठने की जरूरत नहीं है, हिम्मत के साथ हम अपनी लकीर को लंबी करें। और मैं 25 साल के शासन के अनुभव से कह सकता हूं, अगर यह रास्ता हमने चुन लिया, हर किसी ने चुन लिया, तो फिर कोई स्वार्थ हमें अपनी चंगुल में नहीं फंसा सकता है।

बीता दशक रिफॉर्म, परफॉर्म, ट्रांसफार्म का रहा है। लेकिन अब हमें और नई ताकत से जुड़ना है। पिछले दिनों हमने कई रिफॉर्म्स किए हैं, एफडीआई हो, इंश्योरेंस कंपनी की बात हो, विश्व की यूनिवर्सिटीज को भारत के अंदर स्थान देने की बात हो, कई रिफॉर्म्स किए हैं। 40000 से ज्यादा अनावश्यक कंप्लायंसेस को हमने खत्म किया है। इतना ही नहीं, 1500 से अधिक पुराने कानून जो बाबा आदम के जमाने के थे, उन सबको हमने खत्म कर दिया है। हमने दर्जनों कानूनों को सरल करने के लिए संसद में जाकर के जनता के हितों को सर्वोपरि रख करके बदलाव किए हैं। इस बार भी हो-हल्ला के बीच लोगों तक बात पहुंची नहीं होगी। लेकिन एक बहुत बड़ा रिफॉर्म इनकम टैक्स एक्ट में हुआ है। करीब 280 से ज्यादा धाराएं हमने समाप्त करने का निर्णय किया है। सिर्फ आर्थिक मोर्चे पर ही रिफॉर्म नहीं, हमने नागरिक के जीवन को भी आसान बनाने के लिए रिफॉर्म किए हैं। इनकम टैक्स रिफंड की बात हो, रिफॉर्म का परिणाम है। कैशलेस असेसमेंट की बात हो, रिफॉर्म का परिणाम है। 12 लाख तक आज इनकम टैक्स से मुक्ति दे देना, देश का जो भविष्य बनाने में उत्सुक है ऐसे मेरा मध्यम वर्ग का परिवार, आज फूला नहीं समा रहा है, कभी किसी ने सोचा नहीं था कि 12 लाख रुपए तक का इनकम टैक्स जीरो कर दिया जाएगा, आज कर लिया है।

जब देश का सामर्थ्य बढ़ता है, तो देशवासियों को लाभ मिलता है। अंग्रेजों के जमाने से दंड संहिता में हम दबे पड़े थे, दंड का भय दिखाकर के जीवन चल रहा था, 75 साल आजादी के ऐसे ही गए, हमने दंड संहिता को खत्म कर दिया, न्याय संहिता को ले आए हैं। न्याय संहिता में भारत के नागरिक के प्रति विश्वास का भाव है। भारत के नागरिक के अंदर अपनेपन का भाव है, संवेदनशीलताओं से भरा हुआ है। हमने रिफॉर्म की यात्रा को तेज करने के लिए बीड़ा उठाया है, हम बहुत तेजी से आगे बढ़ना चाहते हैं। मैं चाहता हूं देशवासियों, देश के लिए कर रहा हूं, मैं मेरे लिए नहीं कर रहा हूं, किसी का बुरा करने के लिए नहीं कर रहा हूं। मेरे राजनीतिक दल, मेरे प्रतिस्पर्धी साथी भी, देश के इस उज्ज्वल भविष्य के लिए आगे आएं, हमारा साथ दें। स्ट्रक्चरल रिफॉर्म्स की बात हो, रेगुलेटरी रिफॉर्म्स की बात हो, पॉलिसी रिफॉर्म की चर्चा हो, प्रोसेस रिफॉर्म की चर्चा हो, कांस्टीट्यूशनल रिफॉर्म करने की जरूरत हो, हर प्रकार के रिफॉर्म्स, ये आज हम मकसद बनाकर के चले हैं।

नेक्स्ट जनरेशन रिफॉर्म्स के लिए हमने एक टास्क फोर्स गठित करने का निर्णय किया है। यह टास्क फोर्स समय सीमा में इस काम को पूरा करें। वर्तमान नियम, कानून, नीतियां, रीतियां 21वीं सदी के अनुकूल, वैश्विक वातावरण में अनुकूल और भारत को 2047 में विकसित राष्ट्र बनाने के संदर्भ में नए सिरे से तैयार हो और उसका समय सीमा में अपना कार्य पूरा करने के लिए टास्क फोर्स की रचना की है।

इन रिफॉर्म्स के कारण जो नए लोग अपना भविष्य बनाना चाहते हैं उनको तो हिम्मत मिलेगी। हमारे स्टार्टअप्स हो, हमारे लघु उद्योग हो, हमारे गृह उद्योग हो, उन उद्यमियों को उनकी कंप्लायंस कास्ट बहुत कम हो जाएगी और उसके कारण उनको एक नई ताकत मिलेगी। जो एक्सपोर्ट की दुनिया में उनको लॉजिस्टिक सपोर्ट के कारण, व्यवस्थाओं में बदलाव के कारण उनको एक बहुत बड़ी ताकत मिलेगी।

ऐसे-ऐसे कानून हैं हमारे देश में, छोटी-छोटी चीजों के लिए जेल में डालने के कानून हैं, आप हैरान हो जाएंगे, किसी ने नजर नहीं दौड़ाई। मैं पीछे लगा हूं, ये मेरे देश के नागरिकों को जेल में बंद करने वाले जो अनावश्यक कानून हैं, वो खत्म होने चाहिए। हम संसद में पहले भी बिल लाए थे, इस बार भी लेकर के आए हैं।

इस दिवाली में आपके डबल दिवाली का काम मैं करने वाला हूं। इस दिवाली मैं आपको एक बहुत बड़ा तोहफा देशवासियों को मिलने वाला है। पिछले 8 साल से हमने जीएसटी का बहुत बड़ा रिफॉर्म किया, पूरे देश में टैक्स के बर्डन को काम किया, टैक्स की व्यवस्थाओं को सरल किया और 8 साल के बाद समय की मांग है, कि हम एक बार इसको रिव्यू करें, हमने हाई पावर कमेटी को बिठाकर के

रिव्यू शुरू किया, राज्यों से भी विचार विमर्श किया।

हम नेक्स्ट जनरेशन जीएसटी रिफॉर्म्स लेकर के आ रहे हैं, ये दिवाली के अंदर आपके लिए तोहफा बन जाएंगे, सामान्य मानवीय की जरूरत के टैक्स भारी मात्रा में कम कर दिए जाएंगे, बहुत बड़ी सुविधा बढ़ेंगी। हमारे एमएसएमई, हमारे लघु उद्यमी, इनको बहुत बड़ा लाभ मिलेगा। रोजमर्रा की चीजें बहुत सस्ती हो जाएगी और उससे इकोनामी को भी एक नया बल मिलने वाला है।

आज देश तीसरी बड़ी इकोनॉमी बनने की दिशा में तेज गति से आगे बढ़ रहा है। हम दरवाजे खटखटा रहे हैं और बहुत तेजी से हम उसको अचीव भी कर लेंगे और कोई तो दिन होगा, मैं आपके बीच जाकर के लाल किले के प्राचीर से यह खबर भी सुनाऊंगा। आज भारत की अर्थव्यवस्था और आर्थिक स्थिति से पूरी दुनिया आश्वस्त है। इतनी अस्थिरता के बीच आशा की किरण बना हुआ भारत का फाइनेंशियल डिसिप्लिन, भारत की फाइनेंस की ऊर्जा। संकट के घेरे में जब विश्व की अर्थव्यवस्था पड़ी हुई है, तब भारत ही उससे बाहर निकल गया यह भरोसा दुनिया में पनपा है। आज इन्फ्लेशन कंट्रोल में है, फॉरेक्स एक्सचेंज रिजर्व हमारे बहुत मजबूत हैं, हमारे मैक्रोइकोनॉमिक इंडिकेटर्स बहुत मजबूत हैं, ग्लोबल रेटिंग एजेंसी भी लगातार भारत की सराहना करती है, भारत की अर्थव्यवस्था पर ज्यादा से ज्यादा विश्वास व्यक्त कर रही है। यह बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था का लाभ मेरे देश के गरीबों को मिले, मेरे देश के किसानों को मिले, मेरे देश की नारी शक्ति को मिले, मेरे देश के मध्यम वर्ग को मिले, मेरे देश की विकास धारा को ताकत देने वाला बने, उस दिशा हम नए प्रयास कर रहे हैं।

आज युवाओं के लिए नए-नए सेक्टर्स में हमारे नौजवानों के लिए अवसर बन रहे हैं। स्किल डेवलपमेंट, स्वरोजगार, बड़ी-बड़ी कंपनी में इंटर्नशिप, इस पर एक बहुत बड़े स्तर पर अभियान चल रहा है और इसलिए देश के नौजवानों, आज मैं आपके लिए भी एक खुशखबरी लेकर के आया हूं, मेरे देश के नौजवानों के लिए लाया हूं। आज 15 अगस्त है, आज 15 अगस्त के ही दिन मेरे देश के युवाओं के लिए एक लाख करोड़ रुपए की योजना हम चालू कर रहे हैं, लागू कर रहे हैं। आज से **प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना आज ही 15 अगस्त को लागू हो रही है,** ये आपके लिए बहुत खुशखबरी है। इस योजना के तहत निजी क्षेत्र में पहले नौकरी पाने वाले नौजवान को बेटे- बेटी को 15000 रुपया सरकार की तरफ से दिए जाएंगे। कंपनियों को भी नए रोजगार देने के अवसर जो भी ज्यादा जुटाएगा, उनको भी प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना करीब- करीब साढ़े तीन करोड़ नौजवानों को रोजगार के नए अवसर बनाएगी। मैं सभी नौजवानों

को इसके लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

आज भारत में नारी शक्ति का लोहा हर कोई मानने लगा है। बढ़ती इकोनॉमी की लाभार्थी हमारी नारी है, लेकिन बढ़ती इकोनॉमी को गति देने में भी हमारी नारी का बहुत बड़ा योगदान भी है, हमारी मातृशक्ति का योगदान है, हमारी स्त्री शक्ति का योगदान है। स्टार्टअप से लेकर स्पेस सेक्टर तक हमारी बेटियां छाई हुई हैं। खेल के मैदान में छाई हुई है, फौज में चमक रही है, आज गर्व के साथ नारी कंधे से कंधा मिलाकर के देश की विकास यात्रा में भागीदार हो रही है। देश गर्व से भर गया, जब एनडीए की वूमेन कैंडिडेट्स उनका पहला पास आउट हुआ था। पूरा देश गर्व से भर गया था, सारे टीवी चैनल उसी के पीछे लगे हुए थे। कितने बड़े गौरव की पल थे। सेल्फ हेल्प ग्रुप, 10 करोड़ सेल्फ हेल्प ग्रुप की बहनें, क्या कमाल कर रही हैं। नमो ड्रोन दीदी नारी शक्ति की एक नई पहचान बनी। गांव में मुझे एक बहन मिली, वो कहती मुझे अब तो गांव वाले पायलट कहकर बुलाते हैं। बड़े गर्व से कह रही थी, ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं थी, लेकिन उसका रुतबा पैदा हुआ है।

हमने 3 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का संकल्प लिया था। 3 करोड़ और मुझे संतोष है कि हम तेज गति से काम कर रहे हैं। समय से पहले 3 करोड़ का लक्ष्य पार कर लेंगे और आज मैं खुशी से देश को बताना चाहता हूं, कि मेरी नारी शक्ति का सामर्थ्य देखिए, देखते ही देखते दो करोड़ महिलाएं लखपति दीदी बन चुकी हैं। आज कुछ लखपति दीदी हमारे सामने बैठी हैं। यह है मेरा सामर्थ्य, और मेरा विश्वास है दोस्तों, भारत की विकास यात्रा में उनकी भागीदारी बढ़ने वाली है।

मेरे देश के किसानों का भारत की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा योगदान है। भारत के किसानों की मेहनत रंग ला रही है। पिछले साल अनाज के उत्पादन में, मेरे देश के किसानों ने पुराने सारे रिकार्ड तोड़ दिए, ये सामर्थ्य है मेरे देश का। उतनी ही जमीन लेकिन व्यवस्थाएं बदलीं, पानी पहुंचने लगा, अच्छे सीड्स मिलने लगे, किसानों को अच्छी सुविधाएं मिलने लगी हैं, तो वो अपना सामर्थ्य देश के लिए बढ़ा रहा है। आज भारत दूध, दाल, जूट जैसे उत्पादन में नंबर वन है दुनिया में। आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा फिश प्रोड्यूसर मेरे मछुआरे भाई बहनों की ताकत देखिए, फिश प्रोड्यूसर में दुनिया में हम दूसरे नंबर पर पहुंच चुके हैं। आज भारत चावल, गेहूं, फल और सब्जी के उत्पादन में भी दुनिया में दूसरे नंबर पर पहुंच चुका है।

आपको खुशी होगी मेरे देश के किसान जो उपज देते हैं आज वह उत्पादन दुनिया के बाजार में पहुंच रहा है। 4 लाख करोड़ रूपया एग्रो प्रोडक्ट का एक्सपोर्ट हुआ है। ये मेरे देश के किसानों ने हमें ताकत दिखाई है। हमारे छोटे किसान हों, पशुपालक हों, मछुआरे हों, देश के विकास की योजनाओं का लाभ आज हम उन तक पहुंचा रहे हैं। पीएम किसान सम्मान निधि हो, रेन वाटर हार्वेस्टिंग हो, सिंचाई की योजनाएं हो, क्वालिटीज सीड्स हो, फर्टिलाइजर की आवश्यकता हो, हर क्षेत्र में आज और किसान को एक भरोसा हो गया है फसल बीमा का। वह साहसिक बन रहा है, उसका परिणाम भी देश को मिल रहा है। यह पहले कल्पना की बात थी, आज हकीकत बन गई है।

हमारे देश के पशुधन को बचाने के लिए, हम एक कोविड की वैक्सीन मुफ्त में मिली वो तो हमें याद है, लेकिन हम पशुधन के लिए भी अब तक 125 डोज मुफ्त में पशुओं को लगा चुके हैं। फुट एंड माउथ एंड डिजीज से मुक्ति पाने के लिए जो हमारे यहां उत्तर भारत में उसे खुरपका-मुंहपका बीमारी कहते हैं, उससे बचने के लिए 125 करोड़ डोज हम लगा चुके हैं और मुफ्त में लगा चुके हैं। हम खेती के मामले में देश के वो जिले जहां के किसान औरों से पीछे रह गए, किसी न किसी कारण से 100 जिले ऐसे हैं, जहां अपेक्षाकृत कम खेती है और इसलिए हमने 100 जिले आईडेंटिफाई किए पूरे देश में से और वहां के किसानों को एमपावर करना, किसानों को शक्ति देना है, किसानों को मदद करने का एक अभियान चलाया है, और इसके लिए पीएम धन-धान्य कृषि योजना का आरंभ किया है। पीएम धन-धान्य कृषि योजना वो देश के 100 जिले जहां थोड़ी सी मदद कर देंगे, तो वहां का किसान भी भारत के अन्य किसानों की बराबरी कर देगा।

भारत के किसान, भारत के पशुपालक, भारत के

मछुआरे, ये हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता है। भारत के किसान, भारत के मछुआरे, भारत के पशुपालक, उनसे जुड़ी किसी भी अहितकारी नीति के आगे मोदी दीवार बनके खड़ा है। भारत अपने किसानों, अपने पशुपालकों, अपने मछुआरों के संबंध में कभी भी कोई समझौता नहीं स्वीकार करेगा।

गरीबी क्या होती है, यह मुझे किताबों में पढ़ना नहीं पड़ा है। मैं जानता हूं, सरकार में भी रहा हूं और इसलिए मेरी कोशिश रही है, कि सरकार फाइलों में नहीं होनी चाहिए। सरकार देश के नागरिकों के लाइफ में होनी चाहिए। दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, उनके लिए सकारात्मक रूप से सरकारें प्रोएक्टिव हो, सरकारें प्रो पीपल हो, उस दिशा में हम निरंतर प्रयास कर रहे हैं। समाज के हर जरूरतमंद व्यक्ति के लिए कुछ लोगों को लगता है, कि सरकार की योजनाएं पहले भी आती थी, जी नहीं, हम सरकार की योजनाओं को जमीन पर उतार रहे हैं, सैचुरेशन पर बल देते हैं और सामाजिक न्याय का अगर कोई सच्चा से सच्चा एक्जीक्यूशन है, तो सैचुरेशन में है, जिसमें कोई हकदार छूटे नहीं, हकदार के घर तक सरकार जाए और उसे अपने हक की चीजें मिले, उसके लिए हम काम कर रहे हैं।

जनधन अकाउंट जब खोले गए ना, वह सिर्फ बैंक का अकाउंट था ऐसा नहीं है उससे एक स्वाभिमान मिला था, कि बैंक के दरवाजे मेरे लिए भी खुलते हैं, मैं भी बैंक के दरवाजे में जाकर के टेबल पर हाथ रखकर के बात कर सकता हूं, यह विश्वास हमने जगाया है। आयुष्मान भारत ने बीमारी को सहने की आदत से मुक्ति दिलाने का और उनको अच्छे स्वास्थ्य के लिए मदद करने का काम और जब हम वरिष्ठ नागरिकों को 500,000 से ज्यादा मदद कर करके उनके आरोग्य की चिंता करते हैं, आज पीएम आवास 4 करोड़ गरीबों को घर मिलना, मतलब जिंदगी के नए सपने वहां बसते हैं। वो सिर्फ चार दीवारें नहीं है दोस्तों। रेहड़ी पटरी वालों के लिए पीएम स्वनिधि योजना जो कभी ब्याज के चक्कर में फंसा रहता था, आज पीएम स्वनिधि से रेहड़ी पटरी वाला भी और आपने देखा होगा वह यूपीआई से पैसे लेता है, यूपीआई से पैसे देता है, यह बदलाव, आखिरी व्यक्ति तक चिंता, लोगों की लाइफ में सरकार होनी चाहिए, उसी के कारण ये जमीन से जुड़ी योजनाएं बनती हैं और जमीन से जुड़ी योजनाएं जमीन पर उतरती है और जमीन से उतरी हुई योजनाएं जीवन में बदलाव लाने का एक सशक्त माध्यम बन जाती है। एक समय था, गरीब हो, पीड़ित हो, आदिवासी हो, वंचित हो, दिव्यांग हो, हमारी विधवाऐं माताऐं बहनें हों, अपने हक के लिए दर-दर भटकते रहते थे, सरकारी दफ्तरों में चक्कर लगाते लगाते जिंदगी पूरी हो जाती थी। आज सरकार आपके दरवाजे पर आती है, सैचुरेशन की अप्रोच को लेकर के आती है, करोड़ों लाभार्थियों को सरकारी योजनाओं का लाभ

मिल रहा है, डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर एक बहुत बड़ा क्रांतिकारी काम हुआ है।

गरीबी हटाओ के नारे देश ने बहुत सुने हैं, लाल किले से भी सुने हैं और देश सुन सुन करके थक गया था और देश ने मान लिया था, कि गरीबी हट नहीं सकती है, लेकिन जब हम योजनाओं को गरीब के घर तक ले जाते हैं, विश्वास को गरीब के मन में हम पैदा करते हैं, तो मेरे देश के 25 करोड़ गरीब, गरीबी को परास्त कर करके, गरीबी से बाहर निकल करके एक नया इतिहास बनाते हैं। 10 वर्ष में 25 करोड़ से ज्यादा गरीब गरीबी को परास्त कर करके गरीबी से बाहर निकले है और एक नियो मिडिल क्लास तैयार हुआ है।

यह नियो मिडिल क्लास और मिडिल क्लास एक ऐसी जुगलबंदी है, जिसमें एस्पिरेशन भी है, एफर्ट्स भी हैं, वह देश को आगे बढ़ाने के लिए बहुत बड़ा सामर्थ्य बनने वाली हैं।

बहुत ही निकट भविष्य में महान समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले जी की 200 वीं जयंती आ रही है। हम उस जयंती के समारोह शुरू करने जा रहे हैं और महात्मा ज्योतिबा फुले के सिद्धांत, उन्होंने जो मंत्र दिए उसमें हमारे लिए प्रेरणा है- पिछड़े को प्राथमिकता। पिछड़े को प्राथमिकता देते हुए हम परिवर्तन की ऊंचाइयों को प्राप्त करना चाहते हैं। हम इसके लिए परिश्रम की पराकाष्ठा करना चाहते हैं। हम पारदर्शी नीतियों के द्वारा पिछड़ों को प्राथमिकता, ये हम धरती पर उतारना चाहते हैं, हर पिछड़े के जीवन में उतारना चाहते हैं।

रेहड़ी पटरी वालों के लिए स्वनिधि योजना हो या हमारे हुनर वाले हाथ से काम करने वाले विश्वकर्मा योजना की बात हो आदिवासी में भी जो पिछड़े रह गए हैं उनके लिए पीएम जन मन की योजना की बात हो, हमारे पूर्वी भारत को विकास में पूरे देश के अंदर बराबरी में लाना और उनको नेतृत्व देने की दिशा में काम हो, हम सिर्फ समाज पिछड़े हो, उनकी चिंता में अटकने वाले नहीं है, जो क्षेत्र पिछड़े हैं, उनको भी हम प्राथमिकता देना चाहते हैं। जो जिले पिछड़े रहे हैं हम उनको प्राथमिकता देना चाहते हैं, जो ब्लॉक पिछड़े रहे हैं उनको प्राथमिकता देना चाहते हैं, हमने 100 एस्पिरेशनल डिस्ट्रक्ट, 500 एस्पिरेशनल ब्लॉक, उसी मिशन में काम किया है। हमने पूर्वी भारत के विकास के लिए हजारों करोड़ रुपए के इंफ्रास्ट्रक्चर के प्रोजेक्ट पर बल दिया है, हमने पूर्वी भारत के जीवन को बदलकर के देश की विकास यात्रा में भागीदार बनने का अवसर दिया है।

जीवन के हर क्षेत्र में विकास होना चाहिए। विकास के लिए खेल का भी महत्व होता है। और हमने और मुझे खुशी है कि एक जमाना था जब बच्चे खेल में अगर समय लगाते हैं, तो मां-बाप ज्यादा पसंद नहीं करते थे। आज एकदम से उलट गया है। अगर बच्चे खेलकूद में आगे आते हैं, रुचि लेते हैं, तो मां-बाप गर्व से भर जाते हैं। मैं इसे एक शुभ संकेत मानता हूं। मेरे देश के परिवार के अंदर खेल को प्रोत्साहन का वातावरण में देखता हूं, मेरा मन गर्व से भर जाता है। मैं इसे देश के भविष्य के लिए बहुत शुभ संकेत मानता हूं।

इस खेल को बढ़ावा देने के लिए हमने नेशनल स्पोर्ट्स पॉलिसी, कई दशकों के बाद हम देश में खेलो भारत नीति को लेकर के आए हैं, ताकि ये खेल जगत का सर्वांगीण विकास का प्रयास हो। स्कूल से लेकर के ओलंपिक तक हम एक पूरा इकोसिस्टम डेवलप करना चाहते हैं, चाहे कोचिंग की व्यवस्था हो, फिटनेस की बात हो, खेल के मैदान हों, खेल की व्यवस्थाएं हो, खेल के लिए आवश्यक साधन हों, लघु उद्योगों को भी खेल के साधन बनाने में मदद करने के बात हो। यानी एक प्रकार से पूरा इकोसिस्टम हम दूर-दराज के बच्चों तक पहुंचाना चाहते हैं।

जब मैं फिटनेस की बात करता हूं, जब मैं खेलकूद की बात करता हूं, तब मैं एक चिंता भी आपके सामने रखना चाहता हूं। हमारे देश के हर परिवार को चिंता करनी चाहिए, मोटापा हमारे देश के लिए बहुत बड़ा संकट बनता जा रहा है। आने

वाले वर्षों में जो पंडित लोग हैं, वो कहते हैं, जो जानकार लोग हैं, वो कहते हैं, हर तीसरे व्यक्ति में एक व्यक्ति मोटापे का शिकार होगा। हमें मोटापे से बचाना है, ओबेसिटी से बचाना है। और इसलिए मैंने, बाकी सब करना पड़ेगा, लेकिन एक छोटा सा सुझाव दिया था कि परिवार तय करें कि जब खाने का तेल घर में आएगा 10 परसेंट कम ही आएगा और 10 परसेंट कम ही उपयोग करेंगे, और हम ओबेसिटी के खिलाफ लड़ाई को जीतने की दिशा में हम अपना योगदान देंगे।

हमारा देश भाग्यवान है, हजारों साल की विरासत के हम धनी हैं, और वो हमें निरंतर ऊर्जा मिलती है, प्रेरणा मिलती है, त्याग और तपस्या की राह मिलती है। आज ये वर्ष, गुरु तेग बहादुर जी का 350 वां शहीदी वर्ष है, देश की संस्कृति की रक्षा, भारत के मूल्यों की रक्षा के लिए उन्होंने अपना सब कुछ निछावर कर दिया। मैं आज उनको नमन करता हूं।

हमारी संस्कृति की ताकत हमारी विविधता है, हम विविधता को सेलिब्रेट करना चाहते हैं, हम विविधता को सेलिब्रेट करने की आदत बनाना चाहते हैं। यह हमारा गौरव है कि भारत मां ये बगीचा कितने विविध प्रकार के फूलों से सजा हुआ है, कितनी विविधताएं हैं,ये विविधता हमारे लिए एक बहुत बड़ी हमारी विरासत है, बहुत बड़ा गौरव है। हमने प्रयागराज के महाकुंभ में देखा है, भारत की विविधता को कैसे जिया जाता है। एक स्थान पर करोड़ों लोग एक ही भाव, एक ही प्राण, एक ही प्रयास, दुनिया के लिए बहुत बड़ा अजूबा है। महाकुंभ की वो सफलता भारत की एकता के, भारत के सामर्थ्य की दुहाई देती है।

हमारा देश भाषाओं की विविधता से बहुत ही भरा हुआ है, पुलकित है। और इसलिए हमने मराठी, असमिया, बांग्ला, पाली, प्राकृत को क्लासिकल लैंग्वेज का दर्जा दिया है। और मेरा मत है, हमारी भाषाएं जितनी विकसित होंगी, हमारी सभी भाषाएं जितनी समृद्धि होगी, हमारे नॉलेज के सिस्टम को भी उतना ही बल मिलने वाला है। और हमारी वो ताकत है, और जब डेटा का जमाना है ना तो ये ताकत दुनिया के लिए भी बड़ी ताकत बन सकती है, इतना सामर्थ्य हमारी लैंग्वेज में है। हमें हमारी सभी भाषाओं पर गर्व होना चाहिए, हमारी सभी भाषाओं के विकास के लिए हर किसी को प्रयास करना चाहिए।

पांडुलिपि में हमारे ज्ञान के भंडार पड़े है, लेकिन उसके प्रति उदासीनता रही है। इस बार हमने **''ज्ञान भारतम् योजना''** के तहत देशभर में जहां भी हस्तलिखित ग्रंथ है, जहां पांडुलिपियां हैं, सदियों पुराने जो दस्तावेज हैं, उनको खोज-खोज करके आज की टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुए, उस ज्ञान की समृद्धि को आने वाली पीढ़ियों के लिए काम आए, उस दिशा में काम कर रहे हैं।

हमारा स्पष्ट मत है, ये देश सिर्फ सरकारें नहीं बनाती है, ये देश राजसत्ता पर विराजमान लोग ही नहीं बनाते हैं, ये देश शासन की विधा संभालने वाले नहीं बनाते हैं, ये देश बनता है कोटि-कोटि जनों के पुरुषार्थ से, ऋषियों के, मुनियों के, वैज्ञानिकों के, शिक्षकों के, किसानों के, जवानों के, सेना के, मजदूरों के, हर किसी के प्रयास से देश बनता है। हर किसी का योगदान होता है। व्यक्ति का भी होता है, संस्थाओं का भी होता है। बहुत गर्व के साथ एक बात का जिक्र करना चाहता हूं:- **आज से 100 साल पहले एक संगठन का जन्म हुआ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ**, 100 साल की राष्ट्र की सेवा, एक बहुत ही गौरवपूर्ण स्वर्णिम पृष्ठ है। व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण के संकल्प को लेकर के 100 साल तक मां भारती का कल्याण का लक्ष्य लेकर के लक्ष्यावधि स्वयं सेवकों ने मातृभूमि के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। सेवा, समर्पण, संगठन और अप्रतिम अनुशासन, यह जिसकी पहचान रही है, ऐसा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दुनिया का यह सबसे बड़ा एनजीओ है एक प्रकार से, 100 साल का उसका समर्पण का इतिहास है। मैं आज यहां लाल किले के प्राचीर से 100 साल की इस राष्ट्र सेवा की यात्रा में योगदान करने वाले सभी स्वयंसेवकों को आदरपूर्वक स्मरण करता हूं और देश गर्व करता है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस 100 साल की भव्य, समर्पित यात्रा को और हमें प्रेरणा देता रहेगा।

हम समृद्धि की ओर जा रहे हैं, लेकिन समृद्धि का रास्ता सुरक्षा से गुजरता है। पिछले 11 वर्षों में राष्ट्र सुरक्षा, राष्ट्र रक्षा, राष्ट्र के नागरिकों की रक्षा, इन सभी मोर्चों पर हमने पूरे समर्पण भाव से काम किया है। हम बदलाव लाने में सफल हुए हैं। यह देश जानता है कि हमारे देश का बहुत बड़ा जनजातीय क्षेत्र नक्सलवाद की चपेट में, माओवाद की चपेट में पिछले कई दशकों से लहूलुहान हो चुका था। सबसे ज्यादा नुकसान मेरे आदिवासी परिवारों को हुआ। आदिवासी माताओं-बहनों ने अपने होनहार बच्चों को खो दिया। नौजवान बेटे गलत रास्ते पर खींच लिए गए, भटकाए गए, उनके जीवन को तबाह कर दिया गया। हमने फौलादी हाथ से काम लिया। एक समय था, कभी सवा सौ से ज्यादा जिलों में नक्सलवाद अपनी जड़ें जमा चुका था। माओवाद की चंगुल में हमारे जनजातीय क्षेत्र, हमारे जनजातीय नौजवान फंसे हुए थे और आज सवा सौ जिलों में से कम होते-होते हम 20 पर ले आए हैं। उन जनजातीय समाज की हमने सबसे बड़ी सेवा की है और आप देखिए एक जमाना था जब बस्तर को याद करते ही माओवाद नक्सलवाद बम-बंदूक की आवाज सुनाई देती थी। उसी बस्तर में माओवाद नक्सलवाद से मुक्त होने के बाद जब बस्तर के नौजवान ओलंपिक करते हैं, हजारों नौजवान भारत माता के जय बोलकर के खेल के मैदान में उतरते हैं, पूरा वातावरण उत्साह से भर जाता है, यह बदलाव देश देख रहा है। जो क्षेत्र कभी रेड कॉरिडोर के रूप में जाने जाते थे, वह आज विकास के ग्रीन कॉरिडोर बन रहे हैं, हमारे लिए गर्व की बात है। भारत के नक्शे में जिन क्षेत्रों को लहू लुहान कर दिया गया था, लाल रंग से रंग दिया गया था, हमने वहां संविधान, कानून और विकास का तिरंगा फहरा दिया है।

यह भगवान बिरसा मुंडा की 150 वीं जयंती का अवसर है, तब इन जनजातीय क्षेत्रों को नक्सल से मुक्त करके, जनजातीय परिवार के नौजवानों की जिंदगी बचा करके, हमने भगवान बिरसा मुंडा को एक सच्ची श्रद्धांजलि दी है।

मैं आज देश के सामने एक चिंता, एक चुनौती के संबंध में आगाह करना चाहता हूं। षड्यंत्र के तहत, सोची समझी साजिश के तहत देश की डेमोग्राफी को बदला जा रहा है। एक नए संकट के बीज बोए जा रहे हैं और यह घुसपैठिए, मेरे देश के नौजवानों की रोजी-रोटी छीन रहे हैं। यह घुसपैठिए मेरे देश की बहन बेटियों को निशाना बना रहे हैं, यह बर्दाश्त नहीं होगा। यह घुसपैठिए भोले भाले आदिवासियों को भ्रमित करके उनकी जमीनों पर कब्जा कर

रहे हैं। यह देश सहन नहीं करेगा और इसलिए मेरे प्यारे देशवासियों जब डेमोग्राफी परिवर्तन होता है, सीमावर्ती क्षेत्रों में डेमोग्राफी में परिवर्तन होता है, तब राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संकट पैदा होता है। देश की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए यह संकट पैदा करता है। सामाजिक तनाव के बीज बो देता है और कोई देश, अपना देश घुसपैठियों के हवाले नहीं कर सकता है। दुनिया का कोई देश नहीं कर सकता है, तो हम भारत को कैसे कर सकते हैं? हमारे पूर्वजों ने त्याग और बलिदान से आजादी पाई है। हमें स्वतंत्र भारत दिया है, उन महापुरुषों के प्रति हमारा कर्तव्य है कि हम हमारे देश में ऐसी हरकतों को स्वीकार न करें, उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी और इसलिए मैं आज लाल किले को प्राचीर से कहना चाहता हूं। हमने एक हाई पावर डेमोग्राफी मिशन शुरू करने का निर्णय किया है। यह मिशन, इस मिशन के द्वारा यह जो भीषण संकट नजर आ रहा है, भारत पर मंडरा रहा है यह जो संकट है, उसको निपटाने के लिए तय समय में सुविचारित निश्चित रूप से अपने कार्य को करेगा, उस दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं।

जन्माष्टमी का पावन पर्व, भगवान श्री कृष्ण का जन्मोत्सव देश में मनाया जाता है। जब मुझे भगवान श्री कृष्ण याद आते हैं, तो हम देख रहे हैं कि पूरे विश्व में आज युद्ध के तौर-तरीके बदल रहे हैं। हमने देखा है कि भारत युद्ध के हर नए तौर तरीकों से निपटने में समृद्ध है। हमने ऑपरेशन सिंदूर में दिखा दिया है, टेक्नोलॉजी में जो भी महारत थी। पाकिस्तान ने हमारे सैन्य ठिकानों पर, हमारे एयरबेस पर, हमारे संवेदनशील स्थानों पर, हमारे आस्था के केंद्रों पर, हमारे नागरिकों पर मिसाइल्स, ड्रोन अनगिनत मात्रा में उन्होंने वार किया। देश ने देखा है, लेकिन देश को सुरक्षित रखने के जो प्रयास पिछले 10 साल में हुए हैं, उस ताकत का परिणाम था कि उनके हर हमले को हमारे जाबाजों ने और हमारी टेक्नोलॉजी ने तिनके की तरह बिखेर दिया। रत्ती भर नुकसान नहीं कर पाए और इसलिए जब युद्ध के मैदान में टेक्नोलॉजी का विस्तार हो रहा है, टेक्नोलॉजी हावी हो रही है, तब राष्ट्र की रक्षा के लिए, देश के नागरिकों की सुरक्षा के लिए हमें भी हमने जो आज महारत पाई है, उस महारत का और विस्तार करने की जरूरत है। हमने आज जो महारत पाई है, उसको लगातार अपग्रेड करते रहने की आवश्यकता है। और इसलिए मैंने एक संकल्प लिया है। मुझे आपके आशीर्वाद चाहिए, कोटि-कोटि देशवासियों का आशीर्वाद चाहिए, क्योंकि समृद्धि कितनी ही क्यों ना हो, अगर सुरक्षा के प्रति उदासीनता बरतते हैं, तो समृद्धि भी किसी काम की नहीं रहती है और इसलिए सुरक्षा का महात्मय बहुत बड़ा है।

और इसलिए मैं आज लाल किले की प्राचीर से कह रहा हूं, आने वाले 10 साल में, 2035 तक राष्ट्र के सभी महत्वपूर्ण स्थलों, जिनमें सामरिक के साथ-साथ सिविलियन क्षेत्र भी शामिल हैं, जैसे अस्पताल हो, रेलवे हो, जो भी आस्था के केंद्र हो, उन्हें टेक्नोलॉजी के नए प्लेटफॉर्म द्वारा पूरी तरह सुरक्षा का कवच दिया जाएगा। यह सुरक्षा का कवच लगातार विस्तार होता जाए, देश का हर नागरिक सुरक्षित महसूस करे, किसी भी प्रकार की टेक्नोलॉजी हम पर वार करने आ जाए, हमारी टेक्नोलॉजी उससे बेहतर सिद्ध हो और इसलिए आने वाले 10 साल, 2035 तक मैं यह राष्ट्रीय सुरक्षा कवच का विस्तार करना चाहता हूं, मजबूती देना चाहता हूं, आधुनिक बनाना चाहता हूं और इसलिए भगवान श्री कृष्ण से प्रेरणा पाकर के हमने श्री कृष्ण का जो सुदर्शन चक्र था, उस सुदर्शन चक्र की राह को चुना है। आप में से बहुत लोगों को याद होगा, जब महाभारत की लड़ाई चल रही थी, श्री कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से सूर्य के प्रकाश को रोक दिया था और दिन में ही अंधेरा कर दिया था। सूर्य प्रकाश को सुदर्शन चक्र से रोक दिया था और तब अर्जुन ने जो शपथ ली थी, जयद्रथ का वध करने की, उस प्रतिज्ञा को अर्जुन पूर्ण कर पाए थे। वह सुदर्शन चक्र के पराक्रम और रणनीति का परिणाम है। अब देश सुदर्शन चक्र मिशन लॉन्च करेगा। यह मिशन सुदर्शन चक्र एक पावरफुल वेपन सिस्टम दुश्मन के हमले को न्यूट्रलाइज तो करेगा ही करेगा, लेकिन कई गुना ज्यादा दुश्मन पर हिट बैक करेगा।

हमने भारत के इस मिशन सुदर्शन चक्र के लिए कुछ मूलभूत बातें भी तय की हैं, आने वाले 10 सालों में हम उसको प्रखरता से आगे बढ़ाना चाहते हैं। एक तो यह पूरी आधुनिक सिस्टम, इसके लिए रिसर्च, डेवलपमेंट, उसके मैन्युफैक्चरिंग हमारे देश में ही हो, हमारे देश के नौजवानों के टैलेंट से हो, हमारे देश के लोगों के द्वारा बनी हो। दूसरा एक ऐसी व्यवस्था होगी, जो वॉरफेयर के हिसाब से भविष्य में क्या-क्या संभावनाएं हैं, उसका हिसाब-किताब लगा करके प्लस वन की स्ट्रेटेजी वर्क आउट करेगी। और तीसरा सुदर्शन चक्र की एक ताकत थी, वह बहुत ही प्रिसाइज, जहां जाना था, वहीं जाता था और वापस श्री कृष्ण के पास लौट कर आता था। हम इस सुदर्शन चक्र के द्वारा भी टारगेटेड प्रिसाइज एक्शन के लिए भी व्यवस्था को विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे और इसलिए युद्ध के बदलते तौर-तरीकों में राष्ट्र की सुरक्षा, नागरिकों की सुरक्षा के लिए मैं बड़ी प्रतिबद्धता के साथ इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए वचन देता हूं।

जब हम लोकतंत्र की बात करते हैं, स्वतंत्र भारत की बात करते हैं, तब हमारा संविधान हमारे लिए सर्वोत्तम दीप स्तंभ होता है, हमारा प्रेरणा का केंद्र होता है, लेकिन आज से 50 साल पहले भारत के संविधान का गला घोंट दिया गया था। भारत के संविधान की पीठ में छुरा घोंप दिया गया था, देश को जेल खाना बना दिया गया था, आपातकाल लगा दिया गया था, इमरजेंसी थोप दी गई थी। इमरजेंसी के 50 साल हो रहे हैं, देश की किसी भी पीढ़ी को संविधान की हत्या के इस पाप को कभी भूलना नहीं चाहिए। संविधान की हत्या करने वाले पापियों को नहीं भूलना चाहिए और हमें भारत के संविधान के प्रति अपने समर्पण को और मजबूती देते हुए आगे बढ़ना चाहिए, वह हमारी प्रेरणा है।

मैंने इसी लाल किले से पंच प्रण की बात कही थी। मैं आज लाल किले से फिर से एक बार मेरे देशवासियों का पुनः स्मरण जरूर करना चाहता हूं।

विकसित भारत बनाने के लिए ना हम रुकेंगे, ना हम झुकेंगे, हम परिश्रम की पराकाष्ठा करते रहेंगे और अपनी आंखों के सामने 2047 में विकसित भारत बना करके रहेंगे।

हमारा दूसरा प्रण है कि हम हमारे जीवन में, हमारी व्यवस्थाओं में, हमारे नियम कानून परंपराओं में, गुलामी का एक भी कण अब बचने नहीं देंगे। हम हर प्रकार की गुलामी से मुक्ति पाकर के ही रहेंगे।

हम अपनी विरासत पर गर्व करेंगे। हमारी इस पहचान का सबसे बड़ा आभूषण, सबसे बड़ा गहना, सबसे बड़ा मुकुटमणि, हमारी विरासत है, हम विरासत का गर्व करेंगे।

इन सबके लिए एकता, यह मंत्र सबसे बड़ा शक्तिशाली मंत्र है और इसलिए एकता की डोर को कोई काट ना सके यह हमारा सामूहिक संकल्प होगा।

मां भारती के प्रति कर्तव्य निभाना, यह पूजा से कम नहीं है, तपस्या से कम नहीं है, आराधना से कम नहीं है और उसी भाव से हम सब मातृभूमि के कल्याण के लिए, परिश्रम की पराकाष्ठा करते हुए, 2047 विकसित भारत के लक्ष्य को पार करने के लिए अपने आप को खपा देंगे, अपने आप को झोंक देंगे, जो भी सामर्थ्य हैं, कोई भी अवसर को छोड़ेंगे नहीं, इतना ही नहीं, नए अवसरों का निर्माण करेंगे और निर्मित करने के बाद हम 140 करोड़ देशवासियों के सामर्थ्य से आगे बढ़ते ही रहेंगे, बढ़ते ही रहेंगे, बढ़ते ही रहेंगे।

हमें याद रखना है, 140 करोड़ देशवासियों को याद रखना है,

परिश्रम में जो तपा है,
परिश्रम में जो तपा है,
उसने ही तो इतिहास रचा है।
परिश्रम में जो तपा है,
उसने ही तो इतिहास रचा है।
जिसने फौलादी चट्टानों को तोड़ा है,
जिसने फौलादी चट्टानों को तोड़ा है,
उसने ही समय को मोड़ा है।
जिसने फौलादी चट्टानों को तोड़ा है,
उसने ही समय को मोड़ा है। और
समय को मोड़ देने का भी
समय को मोड़ देने का भी
यही समय है, सही समय है। ▪

आत्मनिर्भर और विकसित भारत बनाएंगे- डॉ. यादव

स्वदेशी के प्रति समर्पण के साथ हम आत्मनिर्भर और विकसित भारत बनाएंगे। देशवासियों को बस अपनी शक्ति और सामर्थ्य पहचानने की आवश्यकता है।

मध्यप्रदेश उन करोड़ों भारतवासियों के उस संकल्प को पूर्ण करने का माध्यम बन रहा है, जिस स्वप्न को हम आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत कहते हैं।

- प्रधानमंत्री श्री मोदी के वोकल फॉर लोकल और लोकल फॉर ग्लोबल के आव्हान के लिए प्रतिबद्ध हैं प्रदेशवासी।
- औद्योगिक गतिविधियों और सिंचाई सुविधा के विस्तार से होगा स्वदेशी मंत्र साकार।
- राज्य सरकार गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी कल्याण के लिए संकल्पबद्ध होकर कर रही है कार्य।
- मध्यप्रदेश की माटी ऐसे अनगिनत जननायकों की जन्मभूमि रही है, जिन्होंने मां भारती की रक्षा में सर्वस्व न्यौछावर किया।
- ऑपरेशन सिंदूर से विश्व, भारत की शक्ति और सामर्थ्य से हुआ परिचित।
- आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत का रास्ता स्वदेशी के प्रति समर्पण से ही संभव होगा।
- इस संकल्प का भी दिन है कि हमारा पुरुषार्थ और हमारा पराक्रम स्वदेश के हित में स्वदेशी को स्वीकारे और स्वदेशी का प्रसार करे।
- अगले चार वर्ष में बजट को दोगुना करना राज्य सरकार का लक्ष्य।
- मध्यप्रदेश के निर्यात में 6 प्रतिशत की हुई बढ़ोत्तरी।
- मध्यप्रदेश जन विश्वास अधिनियम लागू करने वाला देश का पहला राज्य।
- प्रदेश के होनहार खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन किया।
- महिलाओं की भागीदारी बढ़ी।
- किसानों को बिजली बिल से दिलाई जायेगी मुक्ति।
- मुख्यमंत्री वृंदावन ग्राम योजना से प्रदेश के ग्रामों को आत्म-निर्भर बनाया जाएगा।
- पीएम स्वनिधि योजना में 8 लाख हितग्राही लाभान्वित।
- जनजातीय नायकों की गौरव गाथाओं को शैक्षणिक पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया।
- प्रदेश में एक लाख कि.मी. सड़क और 500 रेल ओवरब्रिज-फ्लाईओवर का निर्माण किया जाएगा।
- 19 हजार से अधिक गांवों में प्रत्येक घर तक नल से जल की आपूर्ति।
- सिंचाई क्षमता में पिछले डेढ़ वर्ष में 7.56 लाख हेक्टेयर की वृद्धि।
- वर्ष 2030 तक 50 प्रतिशत अक्षय स्रोतों से ऊर्जा प्राप्त करना लक्ष्य।
- प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण में 38 लाख आवास पूर्ण कर द्वितीय स्थान पर।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हुए ऑपरेशन सिंदूर से विश्व, भारत की शक्ति और सामर्थ्य और भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम से अवगत हुआ। प्रधानमंत्री श्री मोदी के

नेतृत्व में भारत ने देश की एकता और अखंडता पर कुदृष्टि डालने वालों को कड़ा सबक सिखाया है।

स्वदेशी के प्रति समर्पण के साथ हम आत्मनिर्भर और विकसित भारत बनाएंगे। देशवासियों को बस अपनी शक्ति और सामर्थ्य पहचानने की आवश्यकता है। मध्यप्रदेश उन करोड़ों भारतवासियों के उस संकल्प को पूर्ण करने का माध्यम बन रहा है, जिस स्वप्न को हम आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत कहते हैं।

भारत की आत्मा में बसा ''स्वदेशी'' केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान, आत्म-निर्भरता और वैश्विक नेतृत्व का मंत्र है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के वोकल फॉर लोकल और लोकल फॉर ग्लोबल के आव्हान के साथ हमें हर क्षेत्र-टेक्नोलॉजी, मैन्यूफैक्चरिंग, स्टार्टअप, कृषि, ऊर्जा और रक्षा में स्वदेशी को आधार बनाना है। इसका अर्थ है कि हर उत्पाद हमारे कौशल, हमारे श्रम और हमारे संसाधनों से निर्मित हों। जिस तरह खादी के एक धागे ने स्वतंत्रता संग्राम को शक्ति दी थी, वैसे ही स्वदेशी का प्रत्येक कदम हमें विकसित भारत के संकल्प की ओर ले जाएगा।

मध्यप्रदेश का वर्ष 2025-26 का बजट प्रदेश के विकास और समृद्धि के लिए तैयार किया गया है, जिसमें कोई नया कर नहीं लगाया गया। राज्य सरकार का लक्ष्य अगले चार वर्ष में बजट को दोगुना करना है। मध्यप्रदेश की प्रति व्यक्ति आय एक लाख 39 हजार वार्षिक से बढ़कर वर्ष 2024-25 में एक लाख 52 हजार हो गई है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश सरकार गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी (GYAN) कल्याण के लिए संकल्पबद्ध होकर कार्य कर रही है। युवा कल्याण राज्य सरकार की प्राथमिकता है। प्रदेश में शुरू हुए स्वामी विवेकानंद युवा शक्ति मिशन के तहत कौशल विकास, प्रशिक्षण, नवाचार और शोध को बढ़ावा दिया जाएगा। प्रदेश के सभी शासकीय विभागों में एक लाख पदों पर भर्तियां की जा रही हैं। आगामी पांच वर्ष में 2 लाख 50 हजार भर्तियां करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।

देश के केन्द्र में स्थित होने से मध्यप्रदेश की सभी दिशाओं में आसान पहुंच, कच्चे माल की उपलब्धता, कुशल मानव संसाधन, लॉजिस्टिक सुविधा और उद्योग हितैषी 18 नीतियों के क्रियान्वयन से निवेशकों का भरोसा मध्यप्रदेश पर बढ़ा है। निवेश हितैषी औद्योगिक ईकोसिस्टम से मध्यप्रदेश के निर्यात में 6 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। मध्यप्रदेश ने वर्ष 2025 को उद्योग एवं रोजगार वर्ष घोषित किया है।

मध्यप्रदेश में 7 रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव के बाद अब खनिज और पर्यटन जैसी विषयवार कॉन्क्लेव की जा रही हैं। भोपाल में पहली बार प्रधानमंत्री श्री मोदी की उपस्थिति में अनंत संभावनाएं थीम पर ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट 2025 का आयोजन किया गया।

निवेश संवर्धन क्षेत्र में भी हमने बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। उद्योग संवर्धन नीति के तहत 5 हजार करोड़ से अधिक की सहायता उद्यमियों को दी गई है। साथ ही 15 नए औद्योगिक क्षेत्रों के विकास के लिए 2200 करोड़ का निवेश किया गया है। प्रदेश में एक हजार औद्योगिक इकाईयों को भूमि आवंटन के लिए आशय पत्र और आवंटन आदेश जारी किए गए हैं, जिससे 40 हजार करोड़ रुपये का निवेश एवं 93 हजार से अधिक व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त होने की संभावना है। स्वदेशी अभियान ''विकसित और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश'' की आधारशिला रख रहा है। रायसेन जिले के उमरिया गांव में बीईएमएल आधुनिक रेल कोच कारखाने और धार जिले में पीएम मित्रा पार्क के माध्यम से इन प्रयासों को बल मिलेगा। धार में पीएम मित्रा पार्क से मध्यप्रदेश को टेक्सटाइल इंडस्ट्री में ''फॉर्म टू फॉरेन'' तक नई दिशा मिलेगी।

केन्द्र सरकार के जन विश्वास अधिनियम, 2023 का अनुसरण करते हुए मध्यप्रदेश, ने प्रदेश में ''ईज ऑफ लिविंग'' और ''ईज ऑफ डूईंग बिजनेस'' के लिए जन विश्वास बिल अधिसूचित किया है। ऐसा करने वाला मध्यप्रदेश, देश का पहला राज्य है।

मध्यप्रदेश में 18 खेलों की 11 अकादमियां सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में संचालित हैं। इनमें 80 प्रतिशत खिलाड़ी प्रदेश से और 20 प्रतिशत अन्य राज्यों से लिए जाते हैं, जिससे ''एक भारत-श्रेष्ठ भारत'' की भावना को बढ़ावा मिले। वर्ष 2025-26 में हमारे खिलाड़ियों ने खेल के मैदान में शानदार प्रदर्शन किया है। खिलाड़ियों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 6 स्वर्ण, 9 रजत, 6 कांस्य और राष्ट्रीय स्तर पर 82 स्वर्ण, 65 रजत, 57 कांस्य पदक जीते हैं।

महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन शुरू किया गया है। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में बहनों को प्रतिमाह 1250 रुपए प्रदान किए जाते हैं। भाई-दूज से यह राशि बढ़ा कर 1500 रुपये प्रतिमाह कर दी जाएगी। लखपति दीदी की पहल से 10 लाख 74 हजार समूह सदस्यों के परिवार लखपति बने हैं। टेक्सटाईल सहित रोजगार परक उद्योगों में प्रतिमाह युवतियों एवं युवकों को पांच हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान करने का फैसला लिया गया है।

वर्तमान में किसानों को 5 रुपए में बिजली का स्थायी कनेक्शन उपलब्ध कराया जा रहा है। 3 वर्षों में 32 लाख सोलर पंप उपलब्ध करा कर किसानों को बिजली बिल से मुक्ति दिलाने का लक्ष्य रखा है। किसानों को 10 लाख कनेक्शन देकर 24 घंटे बिजली उपलब्ध कराई जाएगी। किसानों से गेहूं समर्थन मूल्य 2600 रुपये प्रति क्विंटल पर खरीदा गया है। मध्यप्रदेश में देश का सर्वाधिक प्रमाणित जैविक खेती क्षेत्र है। प्रधानमंत्री श्री मोदी की प्रेरणा से प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। प्रदेश के 14 लाख से अधिक किसानों के खातों में 1383 करोड़ रुपये फसल बीमा राशि जारी की गई है। राज्य में कृषि उद्योग समागम 2025 एक नई पहल है। इस समागम का आयोजन किसानों की आय बढ़ाने, कृषि को उद्यमिता से जोड़ने और आधुनिक तकनीकों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किया गया। मंदसौर में 3812 करोड़ रुपये के निवेश से 11 औद्योगिक इकाईयों का शिलान्यास और लोकार्पण हुआ, जिससे 6850 लोगों को रोजगार मिलेगा। इसी तरह तीन दिवसीय समागम का आयोजन नरसिंहपुर में किया गया। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि एवं मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना में डेढ़ वर्ष में किसानों को 46 हजार 700 करोड़ रुपये का वित्तीय समर्थन दिया गया।

पशुपालन और डेयरी विकास के लिए सरकार द्वारा योजनाएं प्रारंभ की गई हैं। डॉ. भीमराव अम्बेडकर कामधेनु योजना में पशुपालक को 25 दुधारू पशु गाय, भैंस, की इकाई प्रदान की जाएगी। योजना में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग के हितग्राहियों के लिए 33 प्रतिशत एवं अन्य वर्ग के लिए 25 प्रतिशत अनुदान देने की व्यवस्था है। गौ-शालाओं में प्रति गौ-वंश दी जाने वाली राशि को 20 रुपये से बढ़ाकर 40 रुपये किया गया है। मुख्यमंत्री वृंदावन ग्राम योजना से प्रदेश के ग्रामों को आत्म-निर्भर बनाया जाएगा।

पीएम स्वनिधि योजना से प्रदेश के 8 लाख से अधिक हितग्राहियों को 10 हजार से 50 हजार तक की ऋण सहायता उपलब्ध कराई गई है। स्वामित्व योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश, देश में पहले स्थान पर है। स्वामित्व योजना में 39 लाख से अधिक लोगों को भू-अधिकार पत्र वितरित किए गए हैं। श्रमिक हितों का संरक्षण हमारी प्राथमिकता है। श्रमिकों के लिए संबल योजना लागू है, जिसमें लगभग पौने दो करोड़ श्रमिक पंजीकृत हैं। श्रम कल्याण मंडल ने विभिन्न योजनाओं में 51 करोड़ रुपये की सहायता दी है। अधिक से अधिक श्रमिकों के नियोजन एवं उद्योगों की सुगमता के लिए कारखाना अधिनियम 1948, औद्योगिक विवाद अधिनियम 1947 और ठेका श्रम अधिनियम 1970 में संशोधन किए गए हैं। प्रदेश में एक करोड़ 33 लाख परिवारों को निःशुल्क खाद्यान्न वितरण किया जा रहा है। हुकुमचंद मिल की तरह रतलाम और ग्वालियर की मिल के मजदूरों को उनका हक दिलाया जाएगा।

कक्षा 1 से महाविद्यालय स्तर तक के लगभग साढ़े 15 लाख विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान की जा रही है। प्रदेश में जनजातीय वर्ग के समग्र विकास और कल्याण के लिए धरती आबा-जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान की शुरूआत की गई है। भगवान बिरसा मुंडा सहित जनजातीय समाज के नायकों की गौरव गाथाओं को शैक्षणिक पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। प्रदेश सरकार ने पेसा नियमों से ग्राम सभाओं को सशक्त किया है, जिससे बिना थाने-कोर्ट जाए आपसी चर्चा से विवाद सुलझ रहे हैं। पीएम जनमन योजना और धरती आबा अभियान से 68 करोड़ से अधिक के कार्य किए गए। इक्कीस जिलों में 66 मोबाइल मेडिकल यूनिट का संचालन किया जा रहा है। सभी 89 जनजातीय विकासखंडों में सिकलसेल हीमोग्लोबिनोपैथी मिशन लागू है। पिछड़ा वर्ग विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना में एक हजार 300 से अधिक अभ्यर्थियों को 465 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की गई है।

प्रदेश में लोक निर्माण से लोक कल्याण का लक्ष्य है। आगामी पांच वर्ष में प्रदेश में नर्मदा प्रगति पथ, विंध्य एक्सप्रेस-वे, मालवा-निमाड़ विकास पथ, अटल प्रगति पथ, बुंदेलखंड विकास पथ एवं मध्य भारत पथ का निर्माण करवाया जाएगा। प्रदेश में एक लाख किलोमीटर सड़क और 500 रेल ओवरब्रिज-फ्लाईओवर का निर्माण किया जाएगा। मजरा-टोला सड़क योजना में सुदूर बसाहटों को मुख्य मार्गों से जोड़ने के लिए 30 हजार किलोमीटर से अधिक सड़क निर्माण का लक्ष्य रखा है।

जल जीवन मिशन के माध्यम से प्रदेश के ग्रामीण अंचलों में 78 लाख से अधिक परिवारों और 19 हजार से अधिक गांवों के प्रत्येक घर तक नल से जल की आपूर्ति सुनिश्चित की गई है।

प्रदेश में 55 लाख हेक्टेयर में सिंचाई हो रही है। सिंचाई क्षमता में पिछले डेढ़ वर्ष में 7.56 लाख हेक्टेयर की वृद्धि हुई है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है, जहां नदियों को जोड़ने के अभियान की शुरुआत हुई है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान और महाराष्ट्र के साथ अंतर्राज्यीय परियोजनाओं से 25 जिले लाभान्वित होंगे। केन-बेतवा, पार्वती-कालीसिंध-चंबल और ताप्ती-बेसिन मेगा रिचार्ज जैसी योजनाएं जल स्तर बढ़ाकर किसानों को आत्मनिर्भर बनाएंगी।

प्रदेश विद्युत उत्पादन में अग्रणी है। ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025 में नवकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में लगभग पौने 6 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव मिले हैं। इन निवेशों से 1 लाख 85 हजार नए रोजगार सृजित होने की उम्मीद है। वर्ष 2030 तक 50 प्रतिशत ऊर्जा, अक्षय स्रोतों से प्राप्त करना लक्ष्य है। इस समय हमारे पास 24 हजार 600 से अधिक मेगावॉट बिजली बनाने की क्षमता है, जिसे इस वर्ष 2 हजार मेगावॉट से अधिक बढ़ाने का लक्ष्य है। भोपाल में हुई दो दिवसीय खनन कॉन्क्लेव में 11 औद्योगिक संस्थानों से 19 हजार 650 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं।

अपने सिर पर छत और अपना आंगन, हर व्यक्ति का सपना होता है। प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत मध्यप्रदेश ने 49 लाख से अधिक स्वीकृत आवासों में से लगभग 38 लाख आवास पूर्ण कर देश में द्वितीय स्थान हासिल किया है। जनजाति कल्याण के अंतर्गत पीएम जनमन योजना में प्रदेश, देश में प्रथम स्थान पर है। योजना में 1 लाख 83 हजार आवास स्वीकृत कर 76 हजार पूर्ण किए गए हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी के अंतर्गत 8 लाख से अधिक शहरी परिवारों को पक्का आवास उपलब्ध हो गया है।

जल गंगा संवर्धन अभियान में मध्यप्रदेश ने बेहतर प्रदर्शन किया है। तीन माह तक चले इस अभियान में खेतों में जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए 85 हजार से अधिक खेत-तालाब तथा एक लाख 5 हजार कुआं पुनर्भरण हुआ जो लक्ष्य से अधिक उपलब्धि है। अमृत सरोवर 2.0 में एक हजार से अधिक नए सरोवर बनाए जा रहे हैं। अविरल निर्मल नर्मदा योजना में साढ़े 5 हजार से अधिक हेक्टेयर क्षेत्र में पौधरोपण होगा। प्रदेश में पर्यावरण-संरक्षण और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए एक बगिया मां के नाम योजना की शुरुआत की जा रही है। मनरेगा योजना के माध्यम से 30 हजार से अधिक स्व-सहायता समूह की पात्र महिलाओं की 30 हजार एकड़ निजी भूमि पर 30 लाख से अधिक फलदार पौधे लगाए जाएंगे, जिस पर एक हजार करोड़ रुपये व्यय होंगे। प्रदेश में 922 करोड़ रुपए की लागत से 2400 से अधिक नए अटल पंचायत सेवा सदन स्वीकृत किए गए हैं।

प्रदेश में शहरी विकास को नई गति देते हुए दो मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र बनाए जा रहे हैं। इनमें से एक इंदौर, उज्जैन, देवास और धार जिलों के कुछ क्षेत्रों को मिलाकर तथा दूसरा भोपाल, सीहोर, रायसेन, विदिशा और राजगढ़ जिलों के क्षेत्रों को मिलाकर बनाया जा रहा है। भविष्य में जबलपुर और ग्वालियर भी मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र बनेंगे। इससे अधोसंरचना मजबूत होगी और कस्बों-नगरों में व्यापारिक और नागरिक संपर्क बढ़ेगा। प्रधानमंत्री श्री मोदी की प्रेरणा से स्वच्छता सर्वेक्षण-2024 में इंदौर, उज्जैन, भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर और बुदनी सहित 8 नगरों को स्वच्छता में राष्ट्रीय सम्मान मिला।

नक्सल उन्मूलन के लिए बालाघाट, मंडला और डिंडौरी में विशेष दस्तों में 850 पद बढ़ाए गए हैं। उत्कृष्ट प्रदर्शन पर पुलिसकर्मियों को आउट ऑफ टर्न प्रमोशन दिया जा रहा है। प्रदेश नवीन आपराधिक कानून लागू करने में अग्रणी है। डायल 100 को डायल 112 से जोड़कर 1200 आधुनिक वाहन तैनात किए गए हैं। ई-समंस शुरू करने में प्रदेश देश में प्रथम है, अब तक 10 लाख ई-समंस तामील हुए हैं।

प्रदेश में आम जनता के लिए सुगम, सुरक्षित और किफायती लोक परिवहन व्यवस्था लागू की जा रही है। मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा के तहत नगर और ग्रामीण मार्गों पर आवश्यकता अनुसार सुविधाजनक यात्री बस सेवा चलाई जाएगी।

प्रदेश में विमान सेवाओं का तेजी से विस्तार हो रहा है। रीवा, सतना और दतिया में नए एयरपोर्ट शुरू हुए हैं। बीते वर्ष में विमानतलों की संख्या 5 से बढ़कर 8 हुई है और शिवपुरी के लिए अनुबंध हो चुका है। लक्ष्य है कि हर 150 किमी पर एक हवाई अड्डा और हर 75 किमी पर एक हवाई पट्टी हो, ताकि सुदूर अंचलों तक हवाई पहुंच संभव हो सके।

''आरोग्यम् परमं भाग्यं'' अर्थात निरोगी काया सबसे बड़ा सौभाग्य है। प्रदेशवासियों को उचित स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराना प्राथमिकता है। प्रदेश में पीपीपी मोड पर नए मेडिकल कॉलेज शुरू किए जा रहे हैं। इससे ग्रामीण अंचलों की बड़ी

आबादी तक उपचार की सुविधा पहुंचेगी। पीएमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा का लाभ दूर-दराज के गांवों तक पहुंच रहा है। राहवीर योजना के तहत सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को एक घंटे में अस्पताल पहुंचाने वाले जिम्मेदार नागरिक को 25 हजार रुपये का प्रोत्साहन दिया जाएगा।

आयुष चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए जिला स्तरीय एलोपैथिक अस्पतालों में 22 एकीकृत आयुष विंग स्वीकृत किए गए हैं। राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत प्रदेश में भारत सरकार द्वारा 800 आयुष आरोग्य मंदिर संचालित हैं। प्रदेश में मानवता और सेवा भाव को समर्पित निःशुल्क शव वाहन सेवा शुरू की गई है। प्रत्येक जिला चिकित्सालय को 2 और मेडिकल कॉलेज वाले जिलों को 4 वाहन दिए गए हैं।

शिक्षा सशक्त समाज का आधार है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू करने वाला अग्रणी प्रदेश है। प्रदेश के सभी 55 जिलों में पीएमश्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शुरू किए गए हैं। स्कूल शिक्षा की गुणवत्ता के लिए सांदीपनि विद्यालय स्थापित किए जा रहे हैं। प्रदेश में 89 हजार से अधिक मेधावी विद्यार्थियों को लैपटॉप के लिए 224 करोड़ रुपये दिए गए हैं और योग्य विद्यार्थियों को निःशुल्क स्कूटी वितरित की गई हैं।

संपदा 2.0 सॉफ्टवेयर के लिए मध्यप्रदेश को राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस स्वर्ण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इससे मध्यप्रदेश डिजिटल भूमि प्रबंधन में देश का अग्रणी राज्य बना है। साइबर तहसील के माध्यम से सम्पूर्ण खसरे का नामांतरण अब फेसलेस, पेपरलेस और पूरी तरह ऑनलाइन हो गया है। पिछले डेढ़ वर्ष में पौने 2 लाख से अधिक न्यायालयीन आदेश पारित किए गए हैं।

प्रदेश का सतपुड़ा टाइगर रिजर्व देश के 53 टाइगर रिजर्व में प्रभावी प्रबंधन में दूसरे स्थान पर है, जबकि कान्हा टाइगर रिजर्व को देश का सर्वश्रेष्ठ टाइगर रिजर्व घोषित किया गया है। डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर रातापानी अभयारण्य को राज्य का आठवां और माधव राष्ट्रीय उद्यान को नौवां टाइगर रिजर्व घोषित किया गया है। चीता प्रोजेक्ट के तहत कूनो में 26 चीते मौजूद हैं और गांधी सागर अभ्यारण्य में चीतों का नया घर तैयार है। वहां चीतों की बसाहट भी कर दी गई है। वन्य जीव पर्यटन के लिए ओंकारेश्वर और जहानगढ़ अभ्यारण्य विकसित किए जाएंगे। पचमढ़ी अभ्यारण्य को राजा भभूत सिंह के नाम से जाना जाएगा। प्रदेश में नदियों के संरक्षण के लिए गंगोत्री हरित योजना शुरू की गई है। इसके तहत लगभग 100 नदियों के उद्गम स्थलों पर 10-10 एकड़ भूमि में 42 करोड़ रुपये की लागत से करीब ढाई लाख पौधों का रोपण किया जा रहा है। मध्यप्रदेश में एक पेड़ मां के नाम 2.0 योजना के तहत 5 करोड़ 40 हजार पौधे लगाए गए हैं।

प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा और ग्रामीण संस्कृति से पर्यटकों को जोड़ने के लिए ग्रामीण पर्यटन परियोजना चलाई जा रही है। इसके तहत 121 गांवों में 241 होम-स्टे विकसित किए गए हैं। हाल ही में यूनेस्को ने भोजपुर को अपनी सूची में जोड़ा है और ग्वालियर को क्रिएटिव सिटी ऑफ म्यूजिक का दर्जा दिया है। अब मध्यप्रदेश में 3 स्थायी और 15 टेंटेटिव मिलाकर कुल 18 यूनेस्को धरोहरें हैं।

ये आंकड़ा देश में सर्वाधिक है। मध्यप्रदेश में सांस्कृतिक अभ्युदय का नया दौर है। पिछले डेढ़ वर्ष में प्रदेश में मकर संक्रांति से लेकर गीता जयंती तक अनेक पर्व-त्यौहार सरकार और समाज ने मिलकर मनाए हैं। कुल 1450 किमी लंबे श्रीराम वन गमन पथ और श्रीकृष्ण लीलाओं से जुड़े तीर्थस्थलों को जोड़ते हुए श्रीकृष्ण पाथेय का निर्माण किया जाएगा।

सिंहस्थ-2028 अभूतपूर्व होगा। इसके लिये क्षिप्रा पर 30 किलोमीटर लंबाई के नवीन घाट निर्मित किए जा रहे हैं। इससे सिंहस्थ के दौरान 24 घंटे में लगभग 5 करोड़ श्रद्धालु स्नान कर सकेंगे। क्षिप्रा का जल निर्मल और प्रवाहमान बनाए रखने के लिए सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी परियोजना एवं शुद्धीकरण के लिए कान्हा डायर्वजन क्लोज डक्ट परियोजना विकसित की जा रही है।

ऑपरेशन सिन्दूर में भारतीय सेनाओं के अप्रतिम साहस और शौर्य के सम्मान में प्रदेशभर में तिरंगा यात्राएं निकाली गईं। देश में आस्था से अर्थव्यवस्था तक, परम्परा से प्रौद्योगिकी तक, सुविधा से सरोकार तक, कृषि से उद्योग तक, नौकरी से स्टार्ट-अप तक हर क्षेत्र में नए-नए कीर्तिमान रचे जा रहे हैं। मध्यप्रदेश ने स्थापना से लेकर अब तक विकास यात्रा के अनेक पड़ाव सफलतापूर्वक पार किए हैं। प्रदेश की प्रगति के निर्णयों को नागरिकों का व्यापक समर्थन मिला है और हम विकास की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। प्रदेशवासियों के सहयोग से विकास का यह कारवां निरंतर आगे बढ़ता रहेगा। ▪

प्रधानमंत्री जी के सपनों को साकार करें - हेमंत खण्डेलवाल

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आह्वान पर संपूर्ण मध्यप्रदेश में तिरंगा यात्राएं निकाली जा रही हैं। सभी भाजपा कार्यकर्ता उत्साह और उल्लास के साथ तिरंगा यात्राएं निकाल रहे हैं। तिरंगा यात्रा में शामिल हर नागरिक और प्रत्येक कार्यकर्ता को बधाई देना चाहता हूं, जो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की हर दिल में तिरंगा, हर घर में तिरंगा की भावना को साकार करने में सहभागी बने हैं। देश को आजादी बहुत संघर्षों और बलिदानों के आधार पर मिली है, हमें इसे हर कीमत पर कायम रखना होगा। हम सभी को सबसे पहले देश की भावना से आगे बढ़ते हुए देश की चिंता करना है। हम ईश्वर से यह कामना करें कि हमारा भारत दुनिया में सबसे आगे रहे।

देश का हर नागरिक खुशहाल जीवन जिए, हमें इसकी चिंता करनी होगी। आमजन की बेहतरी के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी जो काम कर रहे हैं, जिस तरह से प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव लगातार प्रदेश को आगे ले जाने का काम कर रहे हैं। हमें केंद्र और राज्य सरकार के कार्यों को जनता तक पहुंचाने के लिए सेतु का कार्य करना है। हम सभी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के सपनों को साकार करें और देश को मजबूत बनाते हुए उसे बुलंदियों पर ले जाएं। ▪

मोदी जी ने बदल दी राजनीति की संस्कृति-जगत प्रकाश नड्डा

देश में वैचारिक राजनीति पर आधारित दल समाप्त हो गए हैं, सिर्फ भाजपा ही ऐसा राजनीतिक दल है, जो वैचारिक है। हमारे लिए गर्व का विषय है कि हम ऐसी पार्टी के कार्यकर्ता हैं। हम जो बात 1951-52 में कहते थे, वही बात आज भी कह रहे हैं। हमने सत्ता के लिए समझौते नहीं किए, रास्ता नहीं बदला।

- मोदी जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में क्रांतिकारी विकास हुआ।
- कांग्रेस अमावस्या है, भाजपा पूर्णमासी।
- 2014, भारतीय राजनीति का टर्निंग पाइंट।
- मोदी जी ने शुरू किया रिस्पाँसिबल, रिस्पाँसिव और रिपोर्ट कॉर्ड वाली सरकारों का दौर।
- हमारी अर्थव्यवस्था को डेड इकॉनामी बता रहे डेड कांग्रेस के डेड लीडर।
- विरोधी भी मानते हैं राष्ट्रीयता और संगठन तंत्र में भाजपा का मुकाबला नहीं, यही हमारी ताकत है।
- देश का इकलौता वैचारिक दल है भारतीय जनता पार्टी।
- हमने सत्ता के लिए समझौते नहीं किए, अपने रास्ते नहीं बदले।
- प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक जिम्मेदार सरकार बनी, जिसने देश की दिशा बदल दी।
- पहले राजनीतिक दलों के मेनिफैस्टो की कोई वैल्यू नहीं होती थी, आज देश का रोडमैप है।
- पहले सरकार एक व्यक्ति, जाति, क्षेत्र व वर्ग की होती थी, आज जनता की सरकार है।
- हमें कांग्रेस के कारनामों का हिसाब-किताब जनता को बताना होगा।
- भाजपा ने जो कहा- अवसर मिलते ही करके दिखाया।
- मोदी जी का विरोध करते-करते देश का विरोध करने लगे विपक्षी नेता।

लोगों की स्मृति छोटी होती है इसलिए अपनी बात बार-बार कहने की जरूरत है। 2014 के पहले सरकारें आती थीं और जाती थीं। चुनावी घोषणा पत्र का कोई महत्व नहीं होता था। लेकिन 2014 के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जिम्मेदार और रिपोर्ट कॉर्ड वाली सरकारों का दौर शुरू किया। उन्होंने राजनीति की संस्कृति बदल दी। पहले सरकारें किसी एक समुदाय की, जाति की, वर्ग की या इलाके की हुआ करती थीं। लेकिन 2014 के बाद ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास'' का दौर शुरू हुआ। अब जो सरकार है, वो किसी एक वर्ग या जाति की नहीं, बल्कि सभी की सरकार है। हमारे विरोधी भी यह मानते हैं कि राष्ट्रीयता और संगठन के मामले में भाजपा का कोई मुकाबला नहीं है। इसलिए सरकार के कार्यों को जनता तक पहुंचाना हमारी जिम्मेदारी है। संगठन के कार्यों से सरकारों को यश मिलता है।

देश में वैचारिक राजनीति पर आधारित दल समाप्त हो गए हैं, सिर्फ भाजपा ही ऐसा राजनीतिक दल है, जो वैचारिक है। हमारे लिए गर्व का विषय है कि हम ऐसी पार्टी के कार्यकर्ता हैं। हम जो बात 1951-52 में कहते थे, वही बात आज भी कह रहे हैं। हमने सत्ता के लिए समझौते नहीं किए, रास्ता नहीं बदला। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कश्मीर से धारा 370 की समाप्ति के लिए 1953 में अपना बलिदान दिया। उसके बाद हमने इसी को लेकर अनेकों यात्राएं निकालीं, कई बार आंदोलन किए, कई राष्ट्रीय अध्यक्ष बदल गए। अंततः 5 अगस्त, 2019 को मोदी जी की सरकार ने धारा 370 हटा दी। 1989 में हमने पालनपुर में राम मंदिर के निर्माण का रास्ता प्रशस्त करने का प्रस्ताव पारित किया। इसके बाद कई आंदोलन हुए, लंबी लड़ाई चली। हमारे विरोधी हम पर कटाक्ष करने लगे थे। आखिरकार 2024 में भव्य राम मंदिर बनकर तैयार हो गया। हमने जब ट्रिपल तलाक हटाने की बात कही, तो विरोधियों ने हमें प्रतिक्रियावादी और सांप्रदायिक कहा। लेकिन लोगों की ताकत और प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की इच्छा शक्ति से इस बुराई को हटा दिया गया। आश्चर्य की बात है कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, सीरिया, ईरान जैसे मुस्लिम देशों में भी जिसका प्रावधान नहीं था, उसे भारत में तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों ने जिंदा रखा। हमने वक्फ बोर्ड एक्ट भी पारित किया। जब-जब हमें अवसर मिला, हमने वो करके दिखाया, जो हम कहते हैं।

वैचारिक प्रतिबद्धता और मजबूत हुई- डॉ. मोहन यादव

भाजपा अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के समय से जिस भी दायित्व को संभाला, अपने कार्य और निष्ठा से उस पद को और गरिमापूर्ण और प्रशंसनीय बना दिया है। हम सबके लिए यह बड़े सौभाग्य का दिन है कि हमारी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी कार्यकर्ताओं का मार्ग दर्शन करने बैठक को संबोधित कर रहे हैं। यह कार्य संस्कृति भाजपा के अलावा देश के किसी अन्य राजनीतिक दल में नहीं है। श्री नड्डा जी ने नेशनल मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया की स्थापना कर स्वास्थ्य के क्षेत्र में ऐतिहासिक सुधार किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में भाजपा सरकार आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार तेजी से कर रही है। स्वास्थ्य सुविधाओं की सौगात भाजपा की जनजातियों के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दिखाता है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने मध्यप्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं की बारिश की है।

जिन मुद्दों को लेकर जनसंघ की स्थापना हुई जो वर्तमान में भाजपा है, उसने अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया। जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने का जो संकल्प लिया था, उसे पार्टी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के इसी कार्यकाल में पूरा किया गया है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पूरा जम्मू-कश्मीर देश के साथ मिलकर केंद्र सरकार के साथ खड़ा था, यह भाजपा की वैचारिक प्रतिबद्धता की मजबूती को दिखाता है। पार्टी कार्यकर्ताओं की अथक मेहनत व परिश्रम से वर्ष 2023 के विधानसभा और वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में पार्टी को ऐतिहासिक विजय मिली है। पार्टी कार्यकर्ता केंद्र और मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार के जनहितैषी कार्यों और योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाकर पार्टी संगठन को और मजबूती प्रदान करें।

नगरीय निकाय चुनाव व पंचायत के चुनाव अब सीधे होंगे। पार्टी है तो सरकार है और सरकार है तो प्रतिष्ठा है, इसलिए जनता के हित में कार्य करें। आने वाले समय में नगरीय निकाय, पंचायतों के चुनाव हैं, इसलिए इसके लिए प्रतिबद्ध रहें। ▪

हमें जनता को कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी का फर्क बार-बार बताना होगा। आपातकाल के दौरान प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने यह कानून पारित कराया था कि प्रधानमंत्री और लोकसभा स्पीकर पर कोई कानून लागू नहीं होगा। लेकिन हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने यह प्रस्ताव रखा है कि प्रधानमंत्री समेत कोई भी मंत्री या मुख्यमंत्री अगर 30 दिन तक जेल में रहता है, तो 31 वें दिन उसे अपना पद छोड़ना होगा।

कांग्रेस के शासनकाल में आतंकवाद चरम पर था, लेकिन अब मोदी जी के कार्यकाल में आतंकवाद समाप्ति की ओर है। भाजपा देश को मजबूत बनाने के लिए काम कर रही है, तो कांग्रेस हमेशा उन लोगों के साथ खड़ी होती है, जो देश को कमजोर करना चाहते हैं, अशांति फैलाना चाहते हैं। मैंने संसद में भाजपा और कांग्रेस का फर्क बताते हुए कहा था कि कांग्रेस अमावस्या है और भाजपा पूर्णमासी। लेकिन लोग पूर्णमासी को महसूस कर सकें, इसके लिए हमें उन्हें बार-बार अमावस्या की याद दिलानी होगी।

भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़ा कार्यकर्ता आधारित दल है। हमारे 14 करोड़ कार्यकर्ता हैं और 2 करोड़ सक्रिय सदस्य हैं। हम 8.25 लाख बूथों पर काम करते हैं। हमारे 240 लोकसभा और 102 राज्यसभा सदस्य हैं। गुजरात में छठी बार और मध्यप्रदेश में चौथी बार हमारी सरकारें बनी हैं। गोवा और हरियाणा में तीसरी बार हमारी सरकार बनी है। उत्तरप्रदेश में 35 साल बाद हमारी सरकार रिपीट हुई है। उत्तराखंड, मणिपुर, असम और त्रिपुरा में भी हमारी सरकारें रिपीट हुई हैं। लंबे समय बाद दिल्ली में हमारी सरकार बनी है।

सभी ने राहुल बाबा के वक्तव्य को सुना होगा, जिसमें उन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को डेड इक्नॉमी बताया था। नेता विपक्ष का पद कितना जिम्मेदारी वाला होता है, लेकिन राहुल बाबा का ये वक्तव्य नितांत गैर जिम्मेदाराना था। राहुल गांधी किस की भाषा बोल रहे हैं?

भारत दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है और तीसरी अर्थव्यवस्था बनने की तरफ आगे बढ़ रहा है। वर्ल्ड बैंक ने ये भी माना है कि वैश्विक स्लोडाउन के बावजूद भारत की

हर बूथ पर कमल - हेमंत खण्डेलवाल

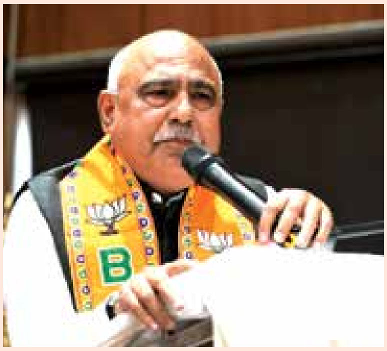

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा जी का जबलपुर और मध्यप्रदेश से दिल का नाता रहा है, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश नई ऊंचाइयों पर जा रहा है। यह डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पं. दीनदयाल उपाध्याय के आदर्शों पर चलने वाला प्रदेश है, यह स्व. अटलजी और स्व. ठाकरे जी की कर्मभूमि वाला प्रदेश है। मध्यप्रदेश का संगठन लगातार ऊंचाइयों पर रहा है और पहले से ही मजबूत है। लेकिन हमारा प्रयास होगा कि यहां हर दिल में भाजपा रहे, कोई बूथ, विधानसभा हम से न छूटे, कोई समाज हमारी पहुंच से दूर न रहे। प्रदेश के सभी कार्यकर्ता हर बूथ में कमल खिलाने के लिए जुटे रहें।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश नई ऊंचाइयों पर पहुंच रहा है और दुनिया में मजबूती से खड़ा है। हर गरीब के आंसू पोंछने का काम प्रधानमंत्री जी कर रहे हैं। उनके नेतृत्व में हम वह सारे काम कर पाए हैं जिसकी उम्मीद आज से 15 साल पहले का समाज नहीं करता था। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव लगातार इंफ्रास्ट्रक्चर, उद्योग और रोजगार के मामले में मध्यप्रदेश को आगे बढ़ाने का काम कर रहे हैं। प्रदेश के कार्यकर्ता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और डॉ. मोहन यादव के कामों को जनता तक पहुंचाने का काम करेंगे। नड्डा जी के नेतृत्व में पार्टी को जो मजबूती मिली है, उसे बरकरार रखते हुए हम प्रदेश के कोने-कोने में भारतीय जनता पार्टी को पहुंचाने का काम करेंगे। आपके मार्गदर्शन में हम हर व्यक्ति को पार्टी से जोड़ने का काम करेंगे। भाजपा में पद सिर्फ एक दायित्व होता है। हर कार्यकर्ता का वही महत्व है, जो किसी बड़े नेता का होता है। हम सब एक परिवार की तरह इस दल को मजबूत करने का काम करेंगे और देश के अन्य हिस्सों में जिस तरह से कमल खिला है, उसे मध्यप्रदेश में भी पूरी मजबूती से खिलाने के लिए पार्टी का हर कार्यकर्ता जुटेगा। भाजपा का हर कार्यकर्ता इस देश के लिए और पार्टी के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार है। भारतीय जनता पार्टी एक परिवार की तरह है और हम सब मिलकर दल के आदर्शों पर चलने का प्रयास करेंगे। ▪

अर्थव्यवस्था स्ट्रांग है। हम थर्ड मोस्ट पॉवरफुल नेशन हैं। देश में खुदरा महंगाई दर ऑल टाइम लो पर है। आज देश के 98 प्रतिशत मोबाइल मेड इन इंडिया होते हैं। खिलौनों और ऑटोमोबाइल के निर्यात में हम तीसरे नंबर पर हैं। हमारा रक्षा उत्पादन और निर्यात लगातार बढ़ रहा है। सारी दुनिया हमारी ब्रह्मोस की तारीफ करती है। क्या ये बढ़ता भारत नहीं है?

मध्यप्रदेश में 80 स्टेशन अमृत भारत स्टेशन बन रहे हैं। 10 साल पहले जबलपुर का एयरपोर्ट छपरे की तरह था और सिर्फ 1 विमान आता था। आज यहां 450 करोड़ का नया टर्मिनल बन गया है। ग्वालियर एयरपोर्ट बन गया है। रीवा में एशिया का सबसे बड़ा 750 मेगावाट का सोलर प्लांट लगा है। इंदौर में मेट्रो रेल शुरू हो गई है और उज्जैन का महाकाल महालोक प्रोजेक्ट 856 करोड़ का है। लाड़ली बहना योजना में हर माह 1250 रुपये की राशि दी जा रही है। हजारों आदिवासी छात्रों को स्कॉलरशिप दी जा रही है। सिकल सेल एनीमिया को लेकर लगातार काम चल रहा है। प्रदेश के 80 लाख किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि मिलती है। क्या ये परिवर्तन नहीं है?

आज जैसा विपक्ष है, उतना गैर जिम्मेदाराना विपक्ष पहले कभी नहीं रहा। भाजपा और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का विरोध करते-करते विपक्ष देश का विरोध करने लगा है। हमें इनका ये व्यवहार जनता को बताना होगा। ▪

17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक 'सेवा पखवाड़ा' - हितानंद जी

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की 'मन की बात' कार्यक्रम मध्यप्रदेश में जन-जन को जोड़कर लगातार सफलता हासिल कर रहा है। हर बूथ स्तर पर मन की बात कार्यक्रम को सुनकर और प्रभावी बनाना है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिन पर 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक 'सेवा पखवाड़ा' मनाया जाएगा। इस दौरान स्वच्छता अभियान, 'एक पेड़ मां के नाम' के साथ प्रदेश सरकार द्वारा संचालित 'एक बगिया मां के नाम' एवं 'नमो वन' और 'नमो पथ' अभियान को आगे बढ़ाना है। युवा मोर्चा रक्तदान शिविर और स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करेगा। विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत पर प्रबुद्धजनों के साथ संवाद कर प्रधानमंत्री जी पर बनी डॉक्यूमेंट्री को प्रदर्शित किया जाएगा। प्रधानमंत्री जी विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए तेजी से काम कर रहे हैं। गणेश उत्सव हमारे लिए स्वदेशी को बढ़ावा देने के लिए अच्छा माध्यम है। मिट्टी के गणेश जी की स्थापना से लेकर गणेश जी के विसर्जन तक स्वदेशी वस्तुओं का ही इस्तेमाल किया जाए। पंडाल में स्वदेशी की झांकी और स्थानीय कलाकारों को महत्व देकर नुक्कड़ नाटक सहित अन्य आयोजन किए जाए। उसके बाद नवरात्र और दशहरा-दिवाली पर भी हम स्वदेशी को ही बढ़ावा दें। 25 सिंतबर को श्रद्धेय दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती पर उनकी प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। 2 अक्टूबर को गांधी जयंती पर खादी को बढ़ावा देकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के स्वदेशी अपनाने के आव्हान को और मजबूती दें। लाल बहादुर शास्त्री जी की भी जयंती है उनकी प्रतिमा पर भी माल्यार्पण और श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें याद करना है। ▪

मोदी सरकार ने अभूतपूर्व विकास और उत्थान किया है - अमित शाह

2014 में श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद राजनीति की दिशा बदली। जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टिकरण की जगह परफॉर्मेंस की राजनीति का नया युग शुरू हुआ, जिसे आज पूरा देश अनुभव कर रहा है। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए सिस्टम और नीतिगत स्तर पर कठोर प्रयास किए गए।

- **मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद देश में जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टीकरण की जगह politics of performance के नए युग की शुरुआत।**
- **केरल सरकार ने PFI जैसे संगठन को समय पर क्यों नहीं रोका, यदि मोदी सरकार नहीं होती, तो शायद केरल सरकार आज भी PFI पर प्रतिबंध नहीं लगाती।**
- **मैं भाजपा से आता हूँ, RSS का स्वयंसेवक हूँ, जब तक भारत महान नहीं बन जाता, तब तक हमें आराम करने का अधिकार नहीं है।**
- **कम्युनिस्ट विचारधारा से उत्पन्न उदासीन विकास मॉडल केरल की प्रगति को रोक रहा है।**
- **वोट बैंक की राजनीति के कारण केरल में राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता किया गया, कानून और व्यवस्था की स्थिति भी निम्न स्तर तक पहुंच गई, भाजपा इस स्थिति को सुधारेगी।**
- **केरल की जनता यह तय कर चुकी है कि वह कैडर के लिए काम करने वाली LDF की सरकार नहीं, बल्कि जनता के लिए काम करने वाली सरकार चाहती है।**
- **कांग्रेस ने वामपंथियों के दबाव में एक ऐसे व्यक्ति को उपराष्ट्रपति उम्मीदवार बनाया है, जो नक्सलियों के समर्थक हैं।**
- **जब भी डीलिमिटेशन होगा, दक्षिण के राज्यों को कोई अन्याय नहीं होगा।**
- **जनता UDF और LDF के कॉपरेटिव बैंक घोटाला, गोल्ड स्कैम, एआई कैमरा घोटालों का जवाब देगी।**
- **केरल में भाजपा स्थानीय चुनावों में 25 फीसद वोट हासिल करेगी।**
- **लालू जी को बचाने कि लिए लाए गए अध्यादेश को फाड़ने वाले राहुल गांधी आज उन्हीं लालू जी को गले लगा रहे हैं।**
- **जब से राहुल जी कांग्रेस के मुखिया बने हैं, हर एक संवैधानिक संस्थाओं को शक के दायरे में लाने का काम कर रहे हैं।**
- **राहुल गांधी चुनाव आयोग में SIR के सम्बन्ध में शिकायत न करके, जनता के बीच भ्रम फैला रहे हैं।**
- **दामादों और बेटों की राजनीति के जमाने में मोदी जी राजनीति में परिवार और घर त्यागकर देश सेवा करने के आदर्श उदाहरण हैं।**

15 अगस्त 1947 से लेकर आज तक के आजाद भारत की यात्रा को जब हम बारीकी से देखते हैं तो पाते हैं कि जिस मल्टी पार्टी पार्लियामेंटरी डेमोक्रेटिक सिस्टम को हमने अपनाया, उसमें आजादी के तीसरे दशक से ही कुछ दूषक तत्व दिखाई देने लगे थे। जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टिकरण नासूर की तरह जनता के जनादेश को प्रभावित करते रहे। चौथा बड़ा मुद्दा था भ्रष्टाचार, जिसने देश की प्रगति को रोका और लोकतांत्रिक जनादेश का मजाक उड़ाया। इन सबके कारण देश में अस्थिरता बनी रही और लंबे समय की नीतियां धरातल पर उतर नहीं पाईं। 2014 में श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद राजनीति की दिशा बदली। जातिवाद, परिवारवाद और तुष्टिकरण की जगह परफॉर्मेंस की राजनीति का नया युग शुरू हुआ, जिसे आज पूरा देश अनुभव कर रहा है। भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए सिस्टम और नीतिगत स्तर पर कठोर प्रयास किए गए। स्थिरता के कारण देश में लंबे समय की स्पष्ट नीतियों का दौर शुरू हुआ, चाहे आंतरिक और बाहरी सुरक्षा को मजबूत करना हो, इंफ्रास्ट्रक्चर का नया युग लाना हो या देश को समृद्ध बनाने के लिए दूरदृष्टि वाली नीतियाँ लागू करनी हों। इसी का परिणाम है कि जब इन 11 वर्षों

को पीछे मुड़कर देखा जाता है तो साफ दिखाई देता है कि 11 वर्ष पहले देश की जनता के मन में भविष्य को लेकर प्रश्न थे, लेकिन आज हर भारतीय के मन में एक विश्वास है कि भारत का कल उज्ज्वल है।

आज देश के 140 करोड़ लोगों के मन में कोई भ्रम नहीं है। सब मानते हैं कि वर्ष 2047 में भारत विश्व की सबसे बड़ी शक्ति बनेगा और भारत को कोई रोक नहीं सकता। कभी भारत आर्थिक ठहराव का शिकार था। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी जब गए तो भारत की अर्थव्यवस्था 11वें स्थान पर थी। डॉ. मनमोहन सिंह ने इसे वहीं बनाए रखा, न ऊपर गए न नीचे। लेकिन पिछले 11 वर्षों में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भारत को 11वें स्थान से उठाकर दुनिया की टॉप चार अर्थव्यवस्थाओं में लाकर खड़ा किया है। इंफ्रास्ट्रक्चर हो, नई तकनीक हो, आने वाले 25 वर्ष की विश्व अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाली इंडस्ट्री हो या युवाओं के लिए स्टार्टअप नीति और सपोर्ट सिस्टम, हर क्षेत्र में मोदी सरकार ने सुधार भी किए और साहसिक फैसले भी लिए। जीएसटी जैसे असंभव लगने वाले काम को भी सफलतापूर्वक पूरा किया। इसी कारण आज भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। सुरक्षा के मामले में सेना का आधुनिकीकरण हुआ, आत्मनिर्भरता की दिशा में निर्णायक कदम उठाए गए और आंतरिक सुरक्षा के लिए कठोर और सतत नीति अपनाई गई। कांग्रेस के शासन में जम्मू कश्मीर, नॉर्थ ईस्ट और वामपंथी उग्रवाद तीन बड़े संकट बने रहे लेकिन आज उन क्षेत्रों को लेकर पूरा देश आश्वस्त है कि जल्द ही इनसे हमेशा के लिए मुक्ति मिलेगी। मोदी सरकार ने नागरिक जीवन को सरल बनाने के लिए ढेर सारी जटिलताओं को खत्म किया। पहले जहां कम आय का प्रमाण पत्र विधायक के पास बनवाना पड़ता था, आज माता-पिता का प्रमाण ही पर्याप्त है। सरकार ने नागरिक पर भरोसा किया कि वह सच बोलेगा। जेल संबंधी कई प्रावधान हटाए गए, पेनल्टी को चेतावनी में बदला गया।

इंफ्रास्ट्रक्चर पर किए जा रहे निवेश ने दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया है। केरल का बंदरगाह इसका उदाहरण है। केवल 11 लाख करोड़ रुपये का बजट इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए अलग रखा गया है, जो अर्थव्यवस्था को नई गति देगा। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के 11 वर्षों का शासन विकास और शांति दोनों दृष्टियों से ऐतिहासिक रहा है। जब भी भारत का विकास इतिहास लिखा जाएगा, इन वर्षों को स्वर्ण अक्षरों से अंकित किया जाएगा। दुर्भाग्यवश, केरल आज भी वहीं खड़ा है जहाँ 11 साल पहले था। वहां ढेर सारी संभावनाएँ हैं, लेकिन अवसरों को दोहन करने की उदासीनता, वामपंथी विचारधारा से उपजी विकास विरोधी मानसिकता, राज्य को पीछे खींच रही है। आने वाले दिनों में केरल की जनता भी विकास यात्रा में शामिल होगी और अपनी आकांक्षाओं को मत के माध्यम से प्रकट करेगी। 140 करोड़ भारतीयों के लिए जब तक हम दुनिया में शीर्ष पर नहीं पहुँचते और महान भारत की रचना नहीं करते, तब तक किसी को भी आराम करने का अधिकार नहीं है। हमें लगातार सपनों पर काम करना है। आजादी का अमृत महोत्सव जब मनाया गया था, तब यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लक्ष्य रखा था कि 75 से 100 वर्ष की इस यात्रा में 140 करोड़ भारतीय परिश्रम की पराकाष्ठा करेंगे और भारत को हर क्षेत्र में दुनिया के शीर्ष पर पहुँचाने के लिए प्रयास करेंगे।

आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का यह आह्वान 140 करोड़ भारतीयों का संकल्प बन चुका है। वैसे भी, मैं भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक हूँ। हम सब मिलकर ऐसे भारत के निर्माण की कल्पना लेकर चल रहे हैं, जिसे पूरा विश्व सम्मान करे और जो विश्व का सबसे समृद्ध राष्ट्र बने। इसके लिए न आपको, न मुझे और न ही किसी को आराम करने का अधिकार है। दो बातें बहुत स्पष्ट हैं। हमारे संगठन ने केरल में लंबे समय तक संघर्ष किया है। वामपंथी हिंसा के कारण हमारे सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने अपनी जान गंवाई, अनेक कार्यकर्ता दिव्यांग होकर जीवन बिता रहे हैं। अभी हाल ही में राष्ट्रपति महोदया ने सदन में जिन सदानंद मास्टर जी को नॉमिनेट किया है, वे इसका जीवंत उदाहरण हैं। उनके दोनों पैर काट दिए गए थे। यह संघर्ष केवल हमारी विचारधारा या पार्टी के लिए नहीं किया गया, बल्कि केरल के विकास की संभावनाओं को तलाशने और राज्य को देश की मुख्यधारा से जोड़कर सबसे विकसित बनाने के लिए किया गया। दुर्भाग्य से अत्याचार और हिंसा के कारण संगठन का विस्तार सीमित रहा। लोग भय के कारण हमारे साथ नहीं जुड़ पाते थे। लेकिन अब हालात बदल रहे हैं। संगठन विस्तार कर रहा है और जनता एलडीएफ और यूडीएफ के भ्रम से बाहर आ रही है।

आने वाले स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा 25 प्रतिशत वोट प्राप्त करेगी और यह भाजपा के लिए बड़ी शुरुआत होगी। त्रिपुरा में 1 प्रतिशत वोट से भाजपा दो-तिहाई बहुमत की सरकार लेकर आई। असम में सिर्फ 2 विधायक थे, लेकिन पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। केरल में तो वैसे भी भाजपा के पास मजबूत आधार है और विचारधारा को मानने वाले बड़ी संख्या में लोग हैं। इसलिए इस बार 25 प्रतिशत वोट अवश्य मिलेंगे और आने वाले विधानसभा चुनाव में जनता को यूडीएफ और एलडीएफ के बीच चुनाव करने की मजबूरी से मुक्ति मिलेगी। जहां तक केंद्रीय थीम की बात है, तो भाजपा विकास, सुशासन और भ्रष्टाचार-मुक्त राजनीति के मुद्दे पर चुनाव लड़ेगी। हम यह संदेश देंगे कि केरल की जनता को अब केवल दो विकल्पों में से चुनने की मजबूरी नहीं है, बल्कि एक सशक्त और सकारात्मक विकल्प भारतीय जनता पार्टी के रूप में उनके सामने मौजूद है। केरल की जनता ने यूडीएफ और एलडीएफ दोनों का कार्यकाल देखा है। यूडीएफ के समय हुए घोटाले और लॉ एंड ऑर्डर की स्थिति सबके सामने है। एलडीएफ के समय भी हालात अलग

नहीं रहे। गोल्ड स्मगलिंग का मामला सर्वोच्च पद तक जा पहुँचा। कोऑपरेटिव बैंक घोटाला, एक्स-लॉजिक्स घोटाला, एआई कैमरा घोटाला जैसे कई बड़े घोटाले जनता के सामने हैं। यह स्पष्ट है कि केरल की जनता भ्रष्टाचार को स्वीकार नहीं करती। दूसरा बड़ा मुद्दा राष्ट्रीय सुरक्षा और कानून-व्यवस्था का है। वोट बैंक की राजनीति के चलते यहां राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता किया गया। लॉ एंड ऑर्डर की स्थिति लगातार कैडर के दबाव में बिगड़ती चली गई। पीएफआई नाम का संगठन, जो देश विरोधी गतिविधियों में शामिल था, केरल से उत्तर प्रदेश, बिहार और गुजरात तक फैल गया। सवाल है कि समय रहते उस पर कार्रवाई क्यों नहीं हुई? अगर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सरकार न होती, तो आज भी केरल सरकार पीएफआई पर बैन न लगाती। क्या जनता यह बर्दाश्त कर सकती है कि सत्ता के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता हो? यहां की साक्षरता दर शत प्रतिशत है, लेकिन बेरोजगारी भी देश में सबसे ज्यादा है। जब सबसे ज्यादा पढ़े-लिखे लोग केरल में हैं, तो सबसे ज्यादा बेरोजगारी क्यों है? वजह यह है कि भौगोलिक स्थिति के कारण टूरिज्म और प्रवासियों से आने वाले धन पर निर्भरता बढ़ी, जिससे एक तरह की सुस्ती आ गई।

सच्चाई यह है कि केरल में अपार संभावनाएं हैं। आईटी इंडस्ट्री, सेमीकंडक्टर, पोर्ट-बेस्ड इंडस्ट्री और नॉलेज-बेस्ड इंडस्ट्री के लिए यहाँ असीम अवसर मौजूद हैं। दुर्भाग्य से इन्हें कभी सही दिशा में एक्सप्लोर नहीं किया गया। अब जनता चाहती है कि ये संभावनाएँ हकीकत बनें और केरल विकास की नई ऊँचाइयों तक पहुंचे क्योंकि यहां की राजनीति कैडर की नाक बचाने तक सीमित रही है। सरकार जनता की भलाई के लिए काम करने के बजाय केवल कैडर के हित साधने में लगी रही। लेकिन अब केरल की जनता मान चुकी है कि उन्हें कैडर-आधारित नहीं, जनता-आधारित सरकार चाहिए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश में जो मॉडल स्थापित किया है, वह विकास का है, जातिविहीन राजनीति का है, तुष्टिकरण रहित राजनीति का है और वही है पॉलिटिक्स ऑफ परफॉरमेंस। मुझे पूरा भरोसा है कि केरल के युवा, चाहे किसी भी समुदाय से हों, प्रदर्शन और परिणाम आधारित राजनीति को ही चुनेंगे। इसी रास्ते से हमारा समर्थन आधार पहले बढ़ेगा और फिर यहां भाजपा की सरकार भी बनेगी। 2004 से 2014 के बीच लगभग 1342 करोड़ रुपये केंद्र सरकार ने केरल के लिए जारी किए थे। वहीं आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार ने पिछले 10 वर्ष में 5100 करोड़ रुपये डिजास्टर मैनेजमेंट के लिए दिए। सवाल यह है कि हम जो पैसा भेजते हैं, वह राज्य सरकार के पास जाता है। अगर राज्य सरकार उस पैसे को अपनी कैडर राजनीति की भेंट चढ़ा देगी, तो जनता तक उसका लाभ कभी नहीं पहुंचेगा और डिजास्टर मैनेजमेंट का असली काम नहीं हो पाएगा।

उपराष्ट्रपति चुनाव को साउथ वर्सेज साउथ कहना उचित नहीं है। उपराष्ट्रपति पूरे देश का होता है और कोई भी उम्मीदवार देश के किसी भी राज्य या क्षेत्र से आ सकता है। इस दृष्टि से सोचना सही नहीं है। कांग्रेस की इस पसंद से केरल में उसकी बची-खुची संभावनाएं भी समाप्त हो गई हैं, क्योंकि विपक्ष के प्रत्याशी श्रीमान सुदर्शन रेड्डी वही हैं जिन्होंने वामपंथी उग्रवाद और नक्सलवाद को सहारा देने वाला सलवा जुडुम पर जजमेंट दिया था। अगर वह जजमेंट न होता तो वामपंथी उग्रवाद 2020 तक खत्म हो गया होता। यही व्यक्ति विचारधारा से प्रेरित होकर सुप्रीम कोर्ट जैसे पवित्र मंच का इस्तेमाल करते हुए सलवा जुडुम के खिलाफ फैसला देने वाले थे। केरल नक्सलवाद और उग्रवाद का दर्द झेल चुका है। ऐसे में केरल की जनता जरूर देखेगी कि कांग्रेस पार्टी वामपंथियों के दबाव में आकर कैसे ऐसे प्रत्याशी को चुनती है, जिसने नक्सलवाद का समर्थन करने जैसा काम किया। परिसीमन को लेकर जो आशंका तमिलनाडु में पैदा जा रही है, वह बिल्कुल बेबुनियाद है। यह आशंका केवल इस कारण से उठाई जा रही है कि दक्षिण के राज्यों के साथ अन्याय होगा, जबकि हकीकत यह है कि यह तमिलनाडु की जनता का ध्यान वहां हुए बेहिसाब भ्रष्टाचार और स्टालिन की अपने बेटे को मुख्यमंत्री बनाने की महत्वाकांक्षा से भटकाने की कोशिश है। लोकसभा चुनाव के समय भी इसे नहीं उठाया गया, क्योंकि तब भी चुनाव सामने नहीं थे। अभी तो जनगणना होनी है, उसके बाद ही डिलिमिटेशन एक्ट लागू होगा। परिसीमन की चर्चा अभी से करना उचित नहीं है। जब भी डिलिमिटेशन होगा, तब भाजपा की ही सरकार सत्ता में होगी और दक्षिण के राज्यों के साथ किसी प्रकार का अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। यह हमारी सरकार का दक्षिण की जनता से वादा है, इसलिए किसी को चिंता करने की आवश्यकता नहीं है।

मैंने संसद में देश की जनता से सवाल पूछा है कि क्या वे चाहती हैं कि कोई मुख्यमंत्री जेल में रहकर सरकार चलाए? क्या वे चाहती हैं कि कोई प्रधानमंत्री जेल में रहकर सरकार चलाए? यह चर्चा समझ से परे है क्योंकि यह नैतिकता का सवाल है। अब यह पूछा जा रहा है कि संविधान में पहले ऐसा प्रावधान क्यों नहीं हुआ। संविधान जब बना था तब ऐसे निर्लज्ज आचरण की कल्पना भी नहीं की गई थी कि कोई जेल में रहते हुए भी इस्तीफा न दे। पिछले 75 वर्षों में कई मुख्यमंत्री और मंत्री जेल गए हैं, सबने इस्तीफा दिया है। मगर अब दिल्ली में पहली बार ऐसा हुआ है कि मुख्यमंत्री जेल में रहते हुए सरकार चला रहे हैं। तो सवाल उठता है कि संविधान बदला जाना चाहिए या नहीं। अब तक भाजपा की भी सरकारें रहीं लेकिन हमने बदलाव नहीं किया क्योंकि कभी इसकी जरूरत नहीं पड़ी। अगर केजरीवाल इस्तीफा दे देते तो आज भी बदलाव की नौबत न आती। लोकतंत्र में नैतिकता का स्तर बनाए रखना पक्ष और विपक्ष दोनों की जिम्मेदारी है। यही राहुल गांधी थे जिन्होंने उस समय लालू यादव को बचाने के लिए मनमोहन सरकार द्वारा लाए गए ऑर्डिनेंस की कॉपी सार्वजनिक मंच पर फाड़ दी थी। उस ऑर्डिनेंस में यह प्रावधान था कि दोष सिद्ध सांसद-विधायक

अपनी सदस्यता से बच सकते हैं। तब राहुल गांधी ने नैतिकता की दुहाई दी थी। लेकिन आज वही राहुल गांधी लालू यादव को गले लगाते हैं, जबकि लालू जी जेल से स्वास्थ्य आधार पर जमानत पर बाहर हैं। राहुल गांधी को बताना चाहिए कि आखिर क्या बदल गया है? जिस ऑर्डिनेंस को उन्होंने खुद फाड़ा था, आज उसी तरह के प्रावधान के खिलाफ वे संसद में अभद्रता के साथ विरोध कर रहे हैं। क्या सिर्फ इसलिए कि वे लगातार चुनाव हार रहे हैं? यह प्रावधान किसी पार्टी विशेष के लिए नहीं, भाजपा के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री पर भी लागू होगा। एक समय इंदिरा गांधी ने संविधान संशोधन कर प्रधानमंत्री को चुनावी मामलों में केस से बचाने का प्रावधान किया था। लेकिन आज माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी खुद को पूरी तरह कानून के दायरे में रखते हैं। इसके बावजूद विपक्ष विरोध कर रहा है। जनता को सोचना चाहिए कि क्या सरकार जेल से चल सकती है? क्या मुख्य सचिव, डीजीपी, सचिव या गृह विभाग की फाइलें जेल में मुख्यमंत्री से साइन कराई जाएंगी? यह दृश्य लोकतंत्र की नैतिकता को कितना गिरा देगा। विपक्ष को संयुक्त संसदीय समिति में अपने सुझाव देकर लोकतंत्र में नैतिकता के मूल्यों को ऊपर उठाने में सहयोग करना चाहिए।

राहुल गांधी जब से कांग्रेस के मुखिया बने हैं, तब से हर संवैधानिक संस्था को शक के दायरे में खड़ा करने का काम कर रहे हैं। अभी जो एसआईआर की प्रक्रिया चल रही है, वैसी ही 2003 में भी हुई थी, 2006-11 में भी हुई थी और 2017 में भी हुई थी। तब कोई समस्या नहीं थी, तो अब अचानक आपत्ति क्यों? अगर एसआईआर से किसी भी नागरिक या राजनीतिक दल को दिक्कत है, तो उसके लिए तीन स्तरीय अपील व्यवस्था है। पहले विधानसभा के रिटर्निंग ऑफिसर के सामने अपील कर सकते हैं, फिर जिला कलेक्टर के पास जा सकते हैं और अगर वहाँ भी संतुष्टि न मिले तो राज्य के चीफ इलेक्शन ऑफिसर तक अपील की जा सकती है। लेकिन आज तक कांग्रेस ने इन मंचों पर एक भी शिकायत दर्ज नहीं कराई। शिकायत का फोरम इस्तेमाल नहीं करना और जनता के बीच में संदेह फैलाना, ये जनता को गुमराह करने की राजनीति है। जहां तक पूरे देश में एसआईआर का सवाल है, ये कोई सरकार का नहीं बल्कि चुनाव आयोग का नियमित अभ्यास है। उदाहरण के लिए, बिहार की मतदाता सूची में लगभग 22 लाख मृतक व्यक्तियों के नाम थे। अगर उन्हें हटाया न जाए तो उनके नाम से फर्जी वोट पड़ने की संभावना रहती है। क्या ऐसे नाम हटाने चाहिए या नहीं, यह सामान्य समझ का सवाल है। लोग समय-समय पर एक राज्य से दूसरे राज्य में बसते हैं। कोई केरल से मुंबई जाता है या मुंबई से केरल आता है, तो उसके वोटिंग अधिकार वहीं दर्ज होंगे जहां वह वर्तमान में रह रहा है। इसलिए मतदाता सूची का पुनरीक्षण एक-दो दशक में होना बिल्कुल जरूरी है। इस पर राजनीति करके जनता को गुमराह करना कांग्रेस की आदत है। लेकिन देश की जनता परिपक्व है, वो सब समझती है। अभी मामला सुप्रीम कोर्ट में है और जब भी हम जनता के बीच जाएंगे, यह भी बताएंगे कि किस तरह से कांग्रेस संवैधानिक संस्थाओं और प्रधानमंत्री तक के लिए असम्मानजनक भाषा का प्रयोग कर रही है।

अगर कांग्रेस को वाकई कोई आपत्ति है तो उन्हें चुनाव आयोग के सामने जाना चाहिए। अगर चुनाव आयोग उनकी सुनवाई नहीं करता, तो वही एक्सपोज हो जाएगा। लेकिन कांग्रेस चुनाव आयोग के सामने अपनी बात रखने के बजाय सड़कों पर जाती है। सड़क पर कही हुई बात को चुनाव आयोग जवाब नहीं दे सकता। जहाँ तक मेरी पार्टी का सवाल है, हम व्यावहारिक दृष्टिकोण रखते हैं। इसी कारण संयुक्त संसदीय समिति बनाई गई है। अगर प्रैक्टिकैलिटी या लोकतंत्र के सिद्धांतों की दृष्टि से कोई कठिनाई महसूस होती है, तो वह मुद्दा जेपीसी के सामने रखा जा सकता है और वहाँ चर्चा हो सकती है। लेकिन सच यह है कि देश में दशकों तक चुनावी सुधार लाए ही नहीं गए और बार-बार आचार संहिता लगने के कारण विकास के काम अटकते रहे। क्या यह पद्धति लोकतंत्र के लिए उचित है?

जहाँ तक ''वन नेशन, वन इलेक्शन'' का सवाल है, अगर इसमें किसी को कठिनाई होगी तो हमें भी होगी, भारतीय जनता पार्टी को भी होगी। यह व्यवस्था सबके लिए समान है। आज देश के दो तिहाई हिस्से में भारतीय जनता पार्टी और एनडीए की सरकार है। अगर सच में अल्पसंख्यकों को डर या तकलीफ होती तो सबसे पहले उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में दिखती, जहाँ अल्पसंख्यकों की संख्या सबसे अधिक है। लेकिन वहाँ कुछ भी ऐसा नहीं है। 2014 में भी यही कहा गया था कि अगर भाजपा सत्ता में आई तो बहुत कुछ बदल जाएगा, अल्पसंख्यकों पर असर होगा। लेकिन हुआ क्या? कुछ भी नहीं हुआ। असल में जिनके पास प्रदर्शन की कोई ठोस उपलब्धियां नहीं हैं और जिनका व्यक्तिगत राजनीतिक बायोडाटा कमजोर है, वही लोग ऐसी बातें फैलाते हैं। जब भी भाजपा की सरकार बनेगी, वह संविधान के अनुसार चलेगी और सबके अधिकार सुरक्षित रखेगी।

मणिपुर में जब हिंसा हुई तो उसके अगले ही दिन भाजपा की सरकार नहीं आई थी। मैं पहले यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि मणिपुर में भाजपा की छह साल की सरकार में न एक भी बंद हुआ, न हड़ताल हुई, आतंकवाद समाप्त हो गया और नस्ली हिंसा भी नहीं हुई। लेकिन एक अदालत के फैसले के कारण अचानक हिंसा भड़क गई। मणिपुर में नस्ली हिंसा का पुराना इतिहास रहा है। कांग्रेस के समय में इससे कहीं ज्यादा हिंसा हुई थी। मैं यह जस्टिफाई करने के लिए नहीं कह रहा, बल्कि इतिहास बताने के लिए कह रहा हूँ। पहले हिंसा एक साल, डेढ़ साल, ढाई साल तक चलती थी। अब वहाँ शांति है। भारत सरकार का गृह मंत्रालय लगातार दोनों समुदायों से अलग-अलग भी और संयुक्त रूप से भी बैठकों में मिला है। मुझे विश्वास है कि बहुत जल्द हम पूरी तरह सामान्य स्थिति बहाल करने में सफल होंगे। हमारी प्राथमिकता शांति बहाल करना रही है, क्योंकि जब तक शांति स्थापित नहीं होती, तब तक समुदायों के बीच की खाई नहीं भरी जा सकती। अब शांति बहाल हो चुकी है और मैं फिर स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मणिपुर की हिंसा का धर्म से कोई संबंध नहीं है। यह एथनिक वायलेंस है, इसे धार्मिक रंग देकर बदनाम नहीं करना चाहिए। अब अगर जम्मू कश्मीर की स्थिति देखें तो माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने बड़ा बदलाव किया है। तीन क्षेत्र हमारे लिए सबसे बड़े सुरक्षा-चुनौती थे- नॉर्थ ईस्ट, वामपंथी उग्रवाद और जम्मू कश्मीर। इन तीनों में हिंसा की घटनाओं में लगभग 70 प्रतिशत कमी आई है। मौतों में 70 प्रतिशत और सुरक्षा बलों की शहादतों में 74 प्रतिशत की कमी आई है। हालात सामान्य हो रहे हैं।

जम्मू कश्मीर की सीमा बेहद दुर्गम है। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के रास्ते आतंकियों की घुसपैठ कराना पाकिस्तान के लिए आसान था। पहले उन्हें बाहर से आतंकवादी भेजने की जरूरत भी नहीं पड़ती थी, यहीं के स्थानीय युवाओं को हथियार पकड़ाए जाते थे। मगर मोदी सरकार के समय स्थिति यह हो गई है कि 2024 और 2025 में स्थानीय कश्मीरी युवाओं की भर्ती आतंकवाद में शून्य हो गई है। चार साल से पत्थरबाजी की घटनाएँ नहीं हुईं। पाकिस्तान के बंद के कॉल अब घाटी में कोई नहीं मानता। हमने आतंकवाद के खिलाफ एक मजबूत इकोसिस्टम बनाया है। पाकिस्तान ने तीन बार कोशिश की, उरी, पुलवामा और पहलगाम। लेकिन हर बार हमने करारा जवाब दिया। पहले सर्जिकल स्ट्राइक, फिर एयर स्ट्राइक और अब ऑपरेशन सिंदूर कर के हमारी सेना ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के भीतर जाकर आतंकियों के हेडक्वार्टर तबाह किए। यह भारत की बड़ी सफलता है। पूरी दुनिया ने यह संदेश देखा। सिर्फ इतना ही नहीं, जिन आतंकियों ने भारत में हमला किया था, उन्हें भी हमारे सुरक्षा बलों ने ऑपरेशन महादेव में खत्म कर दिया। यह पाकिस्तान को सख्त संदेश है। आज आतंकवाद के तीनों मोर्चे नॉर्थ ईस्ट, नक्सलवाद और कश्मीर मोदी सरकार की जीरो टॉलरेंस नीति के कारण समाप्ति की ओर हैं। हमने पीएफआई पर बैन

लगाया, एनआईए और यूएपीए को मजबूत किया, एटीएस के लिए समान SOP लागू किए और टेरर नेटवर्क तोड़ने के लिए कठोर कदम उठाए। मोदी जी के आने के बाद देश में कश्मीर छोड़कर कहीं भी आतंकवाद कोई बड़ी घटना नहीं कर पाया। जहाँ तक विपक्ष द्वारा ऑपरेशन के नाम पर सवाल उठाने की बात है तो यह निराधार है। आज भी मराठा रेजिमेंट का नारा 'हर हर महादेव' है, सिख रेजिमेंट का नारा 'जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' है। तो सुरक्षा बलों को यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वे अपने अभियान का नाम, समय और तरीका खुद तय करें। इसमें राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

मेरा कोई अलग रोल नहीं है। मैं भी बूथ स्तर के कार्यकर्ता जितना ही जिम्मेदार कार्यकर्ता हूँ और करोड़ों कार्यकर्ताओं की तरह मोदी जी के नेतृत्व में देश के विकास और पार्टी को मजबूत करने के लिए दिन-रात मेहनत करता हूँ। जहाँ तक क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम के सुधार की बात है, यह सिर्फ नाम बदलने का मामला नहीं है। पहले जो तीन कानून भारत को गवर्न करते थे, वे अंग्रेजों की संसद में बने थे और उनका उद्देश्य भारत के नागरिकों की सुरक्षा नहीं बल्कि अंग्रेजी शासन को मजबूत करना था। इसलिए हमने इंडियन पीनल कोड का नाम बदलकर भारतीय न्याय संहिता रखा। नाम के साथ-साथ इसमें अनेक गहरे बदलाव किए गए हैं। इन नए कानूनों को पूरी तरह लागू कर देने के बाद भारत दुनिया का सबसे आधुनिक क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम वाला देश बनेगा। आने वाले वर्षों की टेक्नोलॉजी को ध्यान में रखते हुए कानूनी परिभाषाएँ तय की गई हैं। ट्रायल ऑनलाइन होगा, पेमेंट ऑनलाइन होगी और एफआईआर दर्ज होने के तीन साल के भीतर नागरिक को न्याय मिलेगा। न्यायपालिका, अभियोजन और आरोपियों सभी को समयबद्ध प्रक्रिया में बाँधा गया है ताकि तारीख पर तारीख वाली स्थिति खत्म हो। भारत सरकार इस पर लगभग 30 हजार करोड़ रुपये खर्च कर रही है, जिसमें से 12 हजार करोड़ खर्च हो चुके हैं। सात साल से अधिक की सजा वाले मामलों में एफएसएल रिपोर्ट को अनिवार्य कर दिया गया है जिससे सजा की दर बढ़ेगी। महिलाओं की सुरक्षा के लिए पूरा नया अध्याय जोड़ा गया है। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि आज तक भारत में आतंकवाद की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं थी, अब पहली बार टेररिज्म की कानूनी परिभाषा दी गई है। राजद्रोह की जगह देशद्रोह की परिभाषा तय की गई है। अब किसी व्यक्ति के खिलाफ बोलना अपराध नहीं है, बल्कि देश और तिरंगे का अपमान करना अपराध है। यह राजनीतिक नहीं बल्कि राष्ट्रीय झंडे और राष्ट्र की गरिमा से जुड़ा है। इसके अलावा, अगर कोई आरोपी देश से भाग जाता है तो उसके खिलाफ अनुपस्थिति में ही ट्रायल (ट्रायल इन एब्सेंटिया) का प्रावधान किया गया है। आतंकवाद की परिभाषा के साथ-साथ उसकी सजा की प्रक्रिया को भी और कठोर किया गया है।

आने वाले तीन वर्षों में जब ये कानून पूरी तरह लागू हो जाएंगे तो भारत की आपराधिक न्याय व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन होगा। यह इक्कीसवीं सदी का सबसे बड़ा सुधार है, जो आम आदमी को सबसे ज्यादा राहत देगा। जहाँ तक आतंकवाद और संगठनों पर बैन की बात है, हमने यूएपीए के तहत कई आतंकी संगठनों पर प्रतिबंध लगाया है। हमारी जीरो टॉलरेंस पॉलिसी के कारण आतंकवाद लगातार कमजोर हुआ है और यह बीमारी भी समाप्त होने की ओर है। निश्चित रूप से आतंकवाद और हिंसा को पूरी तरह खत्म करना संभव है। कम से कम इतना तो किया ही जा सकता है कि इसके खिलाफ मजबूत इकोसिस्टम खड़ा करके इसकी मात्रा को शून्य के बराबर लाया जाए। अगर कहीं इक्का-दुक्का घटनाएँ भी होंगी तो वे सिलसिलेवार नहीं होंगी और उन इक्का-दुक्का घटनाओं को भी हम समाप्त करेंगे। हमने सिर्फ संगठनों पर प्रतिबंध नहीं लगाए, बल्कि नॉर्थ-ईस्ट में 20 से ज्यादा समझौते किए हैं। इसके परिणामस्वरूप लगभग 10,000 युवक हथियार छोड़कर मुख्यधारा में लौटे हैं। पिछले डेढ़ साल में करीब 2200 माओवादी हिंसा करने वाले या तो पकड़े गए हैं या उन्होंने आत्मसमर्पण किया है। हमारा उद्देश्य शांति स्थापित करना है। जो लोग अपनी गलतियाँ स्वीकार कर प्रशासन के सामने आते हैं, उन्हें मुख्यधारा में लाने का हम हर संभव प्रयास करते हैं। लेकिन जिनके हाथ में हथियार है, उनसे बातचीत संभव नहीं है। हथियार लेकर बातचीत करने का मतलब है ब्लैकमेल करना। बातचीत केवल तभी होगी जब आप संविधान की चौखट में आकर और हथियार डालकर बात करेंगे। यही हमारी दृढ़ नीति है और इसी में हमारी नम्रता भी निहित है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का व्यक्तित्व पूरा देश जानता है। मोदी जी ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने बहुत कम उम्र में अपना परिवार, घर और निजी हितों को त्यागकर देश की सेवा का मार्ग चुना। लंबे समय तक उन्होंने आरएसएस में काम किया और बाद में भारतीय जनता पार्टी में सक्रिय भूमिका निभाई। शायद वे देश के अकेले ऐसे मुख्यमंत्री रहे होंगे जिन्होंने कभी पंचायत का चुनाव तक नहीं लड़ा और सीधे मुख्यमंत्री बने। संगठन के काम से शुरुआत कर उन्होंने न सिर्फ सबसे सफल मुख्यमंत्री के रूप में पहचान बनाई बल्कि सबसे सफल प्रधानमंत्री बने और सबसे लंबे समय तक राज्य और देश दोनों का नेतृत्व करने वाले नेता बने। वे बेहद सरल स्वभाव के इंसान हैं, अच्छे श्रोता हैं और परिवारवाद के दौर में उनके परिवार का जीवन देखकर समझ आता है कि वे कितने सादगीपूर्ण और अनुशासित जीवन जीते हैं। देश में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलेंगे। अगर ढूंढना भी हो तो तीन चार दशक पीछे जाना पड़ेगा, आज के समय में ऐसे उदाहरण मिलना कठिन है। जहाँ दूसरे नेताओं के दामाद और बेटों की लंबी कतारें दिखती हैं, वहाँ नरेंद्र मोदी जी का ऐसा सार्वजनिक जीवन है कि पूरे सभागार में कोई नहीं कह सकता कि वह उनके परिवार के किसी सदस्य को जानता है। इतने कठोर सार्वजनिक जीवन के नियमों का पालन करना बेहद कठिन है। मोदी जी का अपना कोई नहीं है, उनके लिए पूरा देश ही उनका परिवार है। 140 करोड़ भारतीय उनके अपने हैं और इस सोच के साथ जीना आसान नहीं होता। मैंने उन्हें बहुत नजदीक से देखा है। हमारी पार्टी की विचारधारा के प्रति उनका शत-प्रतिशत समर्पण है, संगठन के प्रति अटूट सम्मान है, कार्यकर्ताओं के प्रति गहरी संवेदनशीलता और देश के गरीबों को गरीबी से मुक्त करने का दृढ़ संकल्प है।

देश की सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ ही उनके नेतृत्व में ऐतिहासिक काम हुए हैं। चाहे राम मंदिर का निर्माण हो, धारा 370 का हटना, सीएए का आना, पीएफआई पर बैन लगाना, नक्सलवाद और पूवोत्तर की समस्याओं का समाधान करना, आतंकवाद और पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देना हो या 27 से अधिक देशों से भारत को सर्वोच्च नागरिक सम्मान दिलाना हो, ये सब नरेंद्र मोदी जी के कार्यकाल में संभव हुआ है। आज पूरे देश में जिस तरह से उन्हें स्वीकृति मिली है, वे आने वाले समय में राजनीति में कदम रखने वाले युवाओं के लिए और करोड़ों भाजपा कार्यकर्ताओं के लिए एक महान प्रेरणा स्रोत बनेंगे। किसी भी प्रकार का व्यापारिक समझौता भारत के हितों से ऊपर जाकर नहीं होगा। मोदी जी ने स्पष्ट कर दिया है कि भारत के हितों की अवहेलना या उन्हें नजर अंदाज करके कोई निर्णय नहीं लिया जाएगा और किसानों के हितों के साथ समझौते की तो बिल्कुल गुंजाइश नहीं है। हम जो भी करेंगे, वह केवल भारत के राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर ही करेंगे। जहाँ तक साइबर सुरक्षा की स्थिति का सवाल है, अभी भी हेल्पलाइनों की कमी है। लोग फोन करते हैं तो उनकी समस्या का समाधान नहीं हो पाता। जिस गति से डिजिटल अपराध बढ़ रहे हैं, उसी अनुपात में हमारा साइबर इन्फ्रास्ट्रक्चर पर्याप्त रूप से विकसित नहीं दिख रहा है।

1930 पर कॉल आते ही कुछ सेकंडों में ही जहाँ पैसा पड़ा है, वहाँ फ्रीज हो सकता है, पाँच मिनट बहुत ज्यादा समय है। इसलिए मैं जनता से भी कहना चाहता हूँ कि यदि दुर्भाग्यवश साइबर फ्रॉड का सामना करना पड़े तो तुरंत 1930 डायल करें। ▪

भारत दुनिया के लिए आशा की किरण-नरेन्द्र मोदी

- भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है और जल्द ही वैश्विक स्तर पर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर आगे बढ़ रहा है।
- भारत अपनी सहनीयता और मजबूती के साथ दुनिया के लिए आशा की किरण है।
- हमारी सरकार भारत के अंतरिक्ष क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार कर रही है।
- हम केवल क्रमिक परिवर्तन नहीं, बल्कि एक बड़ी छलांग के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ रहे हैं।
- हमारे लिए, सुधार न तो कोई मजबूरी है और न ही संकट से प्रेरित है, बल्कि प्रतिबद्धता और दृढ़ विश्वास का विषय है।
- जो हासिल हो चुका है, उससे संतुष्ट होना मेरे स्वभाव में नहीं है, यही दृष्टिकोण हमारे सुधारों का मार्गदर्शन करता है।
- जीएसटी में एक बड़ा सुधार किया जा रहा है, जो इस दिवाली तक पूरा हो जाएगा, जिससे जीएसटी सरल हो जाएगा और कीमतें कम हो जायेंगी।
- विकसित भारत की आधारशिला आत्मनिर्भर भारत है।
- छात्रों के लिए एक राष्ट्र, एक सदस्यता ने विश्वस्तरीय शोध पत्रिकाओं तक पहुँच को आसान बना दिया है।
- सुधार, प्रदर्शन, परिवर्तन के मंत्र के मार्गदर्शन में, भारत आज दुनिया को विकास की धीमी वृद्धि से उबारने की स्थिति में है।

आज भारत दुनिया की Fastest Growing मेजर इकॉनॉमी है। हम बहुत जल्द दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकॉनॉमी बनने वाले हैं।

एक्सपर्ट कह रहे हैं कि दुनिया की ग्रोथ में भारत का कंट्रीब्यूशन बहुत जल्द, करीब 20 परसेंट होने जा रहा है। ये ग्रोथ, ये रेजीलियन्स, जो हम भारत की इकॉनॉमी में देख रहे हैं, इसके पीछे बीते एक दशक में भारत में आई Macro-Economic Stability है।

- **भारत समय की धारा को भी मोड़ने की ताकत रखता है।**

जब हम ग्लोबल Context में देखते हैं, तो भारत की इकॉनॉमी की मजबूती का एहसास होता है। आज भारत दुनिया की Fastest Growing मेजर इकॉनॉमी है। हम बहुत जल्द दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकॉनॉमी बनने वाले हैं। एक्सपर्ट कह रहे हैं कि दुनिया की ग्रोथ में भारत का कंट्रीब्यूशन बहुत जल्द, करीब 20 परसेंट होने जा रहा है। ये ग्रोथ, ये रेजीलियन्स, जो हम भारत की इकॉनॉमी में देख रहे हैं, इसके पीछे बीते एक दशक में भारत में आई Macro-Economic Stability है। आज हमारा फिस्कल डेफिसिट घटकर Four Point Four परसेंट तक पहुंचने का अनुमान है। और ये तब है, जब हमने कोविड का इतना बड़ा संकट झेला है। आज हमारी कंपनियां,Capital Markets से Record Funds जुटा रही हैं। आज हमारे Banks, पहले से कहीं ज्यादा मजबूत हैं। Inflation बहुत Low है,Interest Rates कम हैं। आज हमारा Current Account Deficit कंट्रोल में है। Forex Reserves भी बहुत मजबूत हैं। इतना ही नहीं, हर महीने लाखों Domestic Investors, S.I.P's के जरिये हजारों करोड़ रुपए मार्केट में लगा रहे हैं।

जब इकॉनॉमी के फंडामेंटल्स मजबूत होते हैं, उसकी बुनियाद मजबूत होती है, तो उसका प्रभाव भी हर तरफ होता है। 15 अगस्त के आसपास और उसके बाद एक हफ्ते में जो कुछ हुआ है, वो अपने आप में भारत की ग्रोथ स्टोरी का शानदार उदाहरण है।

अकेले जून के महीने में E.P.F.O डेटा में 22 लाख फॉर्मल जॉब्स जुड़ी हैं, और ये संख्या अब तक के किसी भी महीने से ज्यादा है। भारत की रिटेल इंफ्लेशन 2017 के बाद सबसे कम स्तर पर है। हमारे Foreign Exchange Reserves अपने रिकार्ड हाई के करीब है। 2014 में हमारी Solar PV Module Manufacturing Capacity करीब ढाई गीगावॉट थी, ताजा आंकड़ा है कि आज ये कैपिसिटी 100 गीगावॉट के ऐतिहासिक पड़ाव तक पहुंच चुकी है। दिल्ली का हमारा एयरपोर्ट भी ग्लोबल एयरपोर्ट्स के elite Hundred-Million-Plus Club में पहुंच गया है। आज इस एयरपोर्ट की एनुअल पैसेंजर हैंडलिंग कैपिसिटी 100 मिलियन Plus की है। दुनिया के सिर्फ 6 एयरपोर्ट्स इस Exclusive Group का हिस्सा हैं।

S&P Global Ratings ने भारत की Credit Rating Upgrade की है। और ऐसा करीब 2 दशकों के बाद हुआ है। यानी भारत अपनी Resilience और Strength से बाकी दुनिया की उम्मीद बना हुआ है।

कहा जाता है - Missing The Bus. यानी कोई अवसर आए, और वो निकल जाए। हमारे देश में पहले की सरकारों ने टेक्नोलॉजी और इंडस्ट्री के अवसरों की ऐसी कई Buses छोड़ी हैं। किसी की आलोचना नहीं, लेकिन लोकतंत्र में कई बार तुलनात्मक बात करने से स्थिति और स्पष्ट होती है।

पहले की सरकारों ने देश को वोटबैंक की राजनीति में उलझाकर रखा, उनकी सोच चुनाव से आगे सोचने की ही नहीं थी। वो सोचते थे, जो Cutting Edge Technology है, वो बनाने का काम विकसित देशों का है। हमें कभी जरूरत होगी, तो वहां से इंपोर्ट कर लेंगे। यही वजह थी कि सालों तक हमारे देश को दुनिया के बहुत से देशों से पीछे रहना पड़ा, हम Bus Miss करते रहे। जैसे हमारा कम्यूनिकेशन सेक्टर है। जब दुनिया में इंटरनेट का दौर शुरु हुआ, तो उस वक्त की सरकार असमंजस में थी। फिर 2G का दौर आया, तो क्या-क्या हुआ, ये हम सबने देखा है। हमने वो Bus मिस कर दी। हम 2G, 3G और 4G के लिए भी विदेशों पर निर्भर रहे। आखिर कब तक ऐसे चलता रहता? इसलिए 2014 के बाद भारत ने अपनी अप्रोच बदली, भारत ने तय कर लिया कि हम कोई भी Bus छोड़ेंगे नहीं, बल्कि ड्राइविंग सीट पर बैठकर आगे बढ़ेंगे। और इसलिए हमने पूरा अपना 5G स्टैक देश में ही विकसित किया। हमने मेड इन इंडिया 5G बनाया भी, और सबसे तेजी से देश भर में पहुंचाया भी। अब हम मेड इन इंडिया 6G पर तेजी से काम कर रहे हैं।

भारत में सेमीकंडक्टर बनने की शुरुआत भी 50-60 साल पहले हो सकती थी। लेकिन भारत ने वो Bus भी मिस कर दी, और आने वाले कई बरसों तक ऐसा ही होता रहा। आज हमने ये स्थिति बदली है। भारत में सेमीकंडक्टर से जुड़ी फैक्ट्रियां लगनी शुरु हो चुकी हैं, इस साल के अंत तक पहली मेड इन इंडिया चिप, बाजार में आ जाएगी।

2014 से पहले स्पेस मिशन्स भी सीमित होते थे, और उनका दायरा भी सीमित था। आज 21वीं सदी में जब हर बड़ा देश अंतरिक्ष की संभावनाओं को तलाश रहा है, तो भारत कैसे पीछे रहता? इसलिए हमने स्पेस सेक्टर में रिफॉर्म भी किए और इसे प्राइवेट सेक्टर के लिए ओपन भी कर दिया। 1979 से 2014 तक भारत में सिर्फ 42 Missions हुए थे, यानी 35 वर्षों में 42 मिशन्स, जबकि पिछले 11 सालों में 60 से ज्यादा Missions पूरे हो चुके हैं। आने वाले समय में कई सारे मिशन लाइन्ड अप हैं। इसी साल हमने, स्पेस डॉकिंग का सामर्थ्य भी हासिल किया है। ये हमारे फ्यूचर के मिशन्स के लिए बहुत बड़ी अचीवमेंट है। अब भारत गगनयान मिशन से अपने Astronauts को Space में भेजने की तैयारी में है।

स्पेस सेक्टर को नई एनर्जी देने के लिए उसे हर बंधन से आजाद करना जरूरी था। इसलिए हमने पहली बार Private Participation के लिए Clear Rules बनाए, पहली बार Spectrum Allocation Transparent हुआ, पहली बार Foreign Investment Liberalise हुआ, और इस साल के बजट में हमने Space Startups के लिए 1,000 करोड़ रुपए का Venture Capital Fund भी दिया है।

आज भारत का स्पेस सेक्टर इन रीफॉर्म्स की सफलता देख रहा है। साल 2014 में भारत में सिर्फ एक Space Startup था, आज 300 से ज्यादा हैं। और वो समय भी दूर नहीं जब अंतरिक्ष में हमारा अपना स्पेस स्टेशन होगा।

हम इंक्रीमेंटल चेंज के लिए नहीं बल्कि क्वांटम जंप का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहे हैं और रिफॉर्म्स हमारे लिए न कंपल्शन हैं, न क्राइसिस ड्रिवेन हैं, ये हमारा कमिटमेंट है, हमारा कन्विक्शन है! हम होलिस्टिक अप्रोच के साथ किसी एक सेक्टर की गहरी समीक्षा करते हैं, और फिर One By One उस सेक्टर में रीफॉर्म्स किए जाते हैं।

संसद के मानसून सत्र में Reforms की निरंतरता दिखेगी। विपक्ष द्वारा अनेक व्यवधान

पैदा करने के बावजूद हम पूरे कमिटमेंट के साथ Reforms में जुटे रहे। इसी मानसून सत्र में जन विश्वास 2.0 है, यह ट्रस्ट बेस्ड गवर्नेंस और प्रो पीपल गवर्नेंस से जुड़ा बहुत बड़ा रिफॉर्म हुआ है। जन विश्वास के पहले एडिशन में हमने करीब 200 minor offences को डी-क्रिमिनलाइज किया था। अब इस कानून के दूसरे एडिशन में हमने 300 से ज्यादा minor offences को डी-क्रिमिनलाइज कर दिया है। इसी सेशन में इनकम टैक्स कानून में भी रीफॉर्म किया गया है। 60 साल से चले आ रहे इस कानून को अब और सरल बनाया गया है। और इसमें भी एक खास बात है, पहले इस कानून की भाषा ऐसी थी कि सिर्फ वकील या CA ही इसे ठीक से समझ पाते थे। लेकिन अब इनकम टैक्स बिल को देश के सामान्य टैक्सपेयर की भाषा में तैयार किया गया है। यह दिखाता है कि नागरिकों के हितों को लेकर हमारी सरकार कितनी संवेदनशील है।

इसी मानसून सेशन में माइनिंग से जुड़े कानूनों में भी बहुत संशोधन किया गया है। शिपिंग और पोर्ट्स से जुड़े कानून भी बदले गए हैं। यह कानून भी अंग्रेजों के जमाने से ऐसे ही चले आ रहे थे। अब जो सुधार हुए हैं, वह भारत की ब्लू इकॉनॉमी को, पोर्ट लेड डेवलपमेंट को बढ़ावा देंगे। इसी तरह स्पोर्ट्स सेक्टर में भी नए रीफॉर्म किए गए हैं। हम भारत को बड़े इवेंट्स के लिए तैयार कर रहे हैं। स्पोर्ट्स इकोनॉमी के पूरे इकोसिस्टम का निर्माण कर रहे हैं। इसलिए सरकार, नई नेशनल स्पोर्ट्स पॉलिसी- खेलो भारत नीति लेकर भी आई है।

जो लक्ष्य हासिल कर लिया, उसी में संतुष्ट हो जाऊं, वो इतना करके बहुत हो गया, मोदी आराम कर लेगा! यह मेरे स्वभाव में नहीं है। रिफॉर्म्स को लेकर भी हमारी यही सोच हैं। हम आगे के लिए तैयारी करते रहते हैं, हमें और आगे बढ़ना हैं। अब रिफॉर्म्स का एक और पूरा आर्सेनल लेकर आने वाला हूं। इसके लिए हम कई मोर्चों पर काम कर रहे हैं। हम बेवजह के कानूनों को खत्म कर

रहे हैं। नियमों और प्रक्रियाओं को सरल बना रहे हैं। प्रोसीजर्स और अप्रूवल्स को डिजिटल कर रहे हैं। अनेक प्रावधानों को डिक्रिमनलाइज कर रहे हैं। इसी कड़ी में GST में भी बहुत बड़ा रिफॉर्म किया जा रहा है। इस दीवाली तक ये प्रक्रिया पूरी हो जाएगी। इससे GST और आसान बनेगा और कीमतें भी कम होंगी।

नेक्स्ट जनरेशन रिफॉर्म्स के लिए इसके इस आर्सनल से भारत में मैन्युफैक्चरिंग बढ़ेगी, मार्केट में डिमांड बढ़ेगी, इंडस्ट्री को नई एनर्जी मिलेगी, Employment के नए अवसर बनेंगे और Ease Of Living, Ease of Doing Business दोनों इंप्रूव होंगे।

भारत 2047 तक विकसित होने के लिए पूरी शक्ति से जुटा है और विकसित भारत का आधार आत्मनिर्भर भारत है। आत्मनिर्भर भारत को भी हमें तीन पैरामीटर्स पर देखने की जरूरत है। यह पैरामीटर हैं- स्पीड, स्केल और स्कोप। आपने ग्लोबल पेंडेमिक के दौरान भारत की स्पीड भी देखी है, स्केल भी देखा है और स्कोप भी महसूस किया है। आपको याद होगा, उस समय कैसे एकदम बहुत सारी चीजों की जरूरत पड़ गई थी और दूसरी तरफ ग्लोबल सप्लाई चेन भी एकदम ठप हो गई थी। तब हमने देश में ही जरूरी चीजें बनाने के लिए कदम उठाए। देखते ही देखते, हमने बहुत बड़ी मात्रा में टेस्टिंग किट्स बनाए, वेंटिलेटर्स बनाए, देशभर के अस्पतालों में ऑक्सीजन प्लांट्स लगाए। इन सारे कामों में भारत की स्पीड दिखाई दी। हमने देश के कोने-कोने में जाकर, अपने नागरिकों को 220 करोड़ से ज्यादा मेड इन इंडिया वैक्सीन लगाईं और वो भी बिल्कुल मुफ्त। इसमें भारत का स्केल दिखाई देता है। हमने करोड़ों लोगों को तेजी से वैक्सीन लगाने के लिए कोविन जैसा प्लेटफॉर्म बनाया। इसमें भारत का स्कोप नजर आता है। यह दुनिया का सबसे अनूठा सिस्टम था, जिसके चलते रिकॉर्ड समय में हमने वैक्सीनेशन भी पूरा कर लिया।

ऐसे ही, एनर्जी के क्षेत्र में भारत की स्पीड, स्केल और स्कोप को दुनिया देख रही है। हमने तय किया था कि 2030 तक हम अपनी टोटल पावर कैपेसिटी का फिफ्टी परसेंट, नॉन फॉसिल फ्यूल से जनरेट करेंगे, यह 2030 तक का लक्ष्य था। यह टारगेट हमने पांच साल पहले इसी साल 2025 में ही अचीव कर लिया।

पहले के समय जो नीतियां थीं, उसमें इंपोर्ट पर बहुत जोर रहा। लोगों के अपने फायदे थे, अपने खेल थे। लेकिन आज आत्मनिर्भर होता भारत, एक्सपोर्ट में भी नए रिकॉर्ड बना रहा है। पिछले एक साल में हमने चार लाख करोड़ रुपए के एग्रीकल्चर प्रॉडक्ट एक्सपोर्ट किए हैं। पिछले एक साल में पूरी दुनिया में 800 करोड़ वैक्सीन डोज बनी है। इसमें 400 करोड़ भारत में ही बनी हैं। आजादी के साढ़े छह दशक में हमारा इलेक्ट्रॉनिक्स एक्सपोर्ट, 35 हजार करोड़ रुपए के आस-पास पहुंच पाया था। आज ये करीब सवा तीन लाख करोड़ रुपए तक पहुंच रहा है।

2014 तक भारत 50 हजार करोड़ रुपए के आसपास के ऑटोमोबाइल एक्सपोर्ट करता था। आज भारत एक साल में एक लाख बीस हजार करोड़ रुपए के ऑटोमोबाइल एक्सपोर्ट कर रहा है। आज हम मेट्रो कोच, रेल कोच से लेकर रेल लोकोमोटिव तक एक्सपोर्ट करने लगे हैं। भारत अब दुनिया के 100 देशों को इलेक्ट्रिक व्हीकल भी एक्सपोर्ट करने जा रहा है।

देश की प्रगति का बहुत बड़ा आधार रिसर्च भी है। इंपोर्टेड रिसर्च से गुजारा तो हो सकता है, लेकिन जो हमारा संकल्प है, वह सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए, रिसर्च फील्ड में हमें Urgency चाहिए, वैसा Mindset चाहिए। हमने रिसर्च को प्रोत्साहित करने के लिए बहुत तेजी से काम किया है। इसके लिए जो जरूरी पॉलिसी और प्लेटफार्म चाहिए, उस पर भी हम लगातार काम कर रहे हैं। आज, रिसर्च और डेवलपमेंट पर होने वाला खर्च 2014 की तुलना में दोगुने से भी अधिक हो गया है। 2014 की तुलना में फाइल किए जाने वाले पेटेंट्स की संख्या भी 17 टाइम ज्यादा हो गई है। हमने करीब 6,000 हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूट्स में रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेल स्थापित किए गए हैं। 'वन नेशन, वन सब्सक्रिप्शन' से भी आप परिचित हैं। इसने छात्रों के लिए विश्वस्तरीय रिसर्च जर्नल्स तक पहुँचने में उनको बहुत आसान बना दिया है। हमने 50 हजार करोड़ रुपए के बजट के साथ नेशनल रिसर्च फाउंडेशन बनाया है। एक लाख करोड़ रुपए की रिसर्च डेवलपमेंट एंड इनोवेशन स्कीम को भी मंजूरी दे दी है। लक्ष्य ये है कि प्राइवेट सेक्टर में, विशेषकर Sunrise और Strategic Sectors में नई रिसर्च को सपोर्ट मिले।

आज समय की मांग है कि इंडस्ट्री और प्राइवेट सेक्टर आगे आएं, विशेषकर Clean Energy, Quantum Technology, Battery Storage, Advanced Materials और Biotechnology और Biotechnology जैसे सेक्टर्स में रिसर्च पर अपना काम और अपना निवेश और बढ़ाएँ। इससे विकसित भारत के संकल्प को नई एनर्जी मिलेगी।

रिफॉर्म, परफॉर्म, ट्रांसफॉर्म के मंत्र पर चल रहा भारत आज उस स्थिति में है कि वो दुनिया को धीमी ग्रोथ से बाहर निकाल सकता है। हम ठहरे हुए पानी में किनारे पर बैठकर के कंकड़ मारकर एंजॉय करने वाले लोग नहीं हैं, हम बहती तेज धारा को मोड़ने वाले लोग हैं और भारत... समय को भी मोड़ देने का सामर्थ्य लेकर चल रहा है। ▪

आओ फिर से दिया जलाएँ

अटल बिहारी वाजपेयी

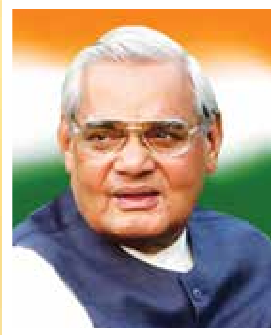

भरी दुपहरी में अँधियारा,
सूरज परछाईं से हारा,
अन्तरतम का नेह निचोड़ें,
बुझी हुई बाती सुलगाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

हम पड़ाव को समझे मंजिल,
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल,
वर्तमान के मोहजाल में
आने वाला कल न भुलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा,
अपनों के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का वज्र बनाने,
नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ।

भाजपा और एनडीए हमेशा नैतिक मूल्यों के पक्षधर - अमित शाह

मोदी सरकार की राजनीति में नैतिक मानकों को बहाल करने की प्रतिबद्धता और जनता में इस समस्या को लेकर गुस्से को देखते हुए, लोकसभा अध्यक्ष की अनुमति से ऐसे संवैधानिक संशोधन विधेयक पेश किए हैं जिनसे यह सुनिश्चित होगा कि कोई भी व्यक्ति जेल में रहते हुए प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या केंद्र और राज्य सरकार में मंत्री जैसे अहम संवैधानिक पदों पर कार्य नहीं कर सकेगा।

- **देश में राजनीतिक भ्रष्टाचार के विरुद्ध मोदी सरकार की प्रतिबद्धता और जनता के आक्रोश को देख कर लाया गया संवैधानिक संशोधन बिल।**
- **महत्वपूर्ण संवैधानिक पद, जैसे प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, केंद्र और राज्य सरकार के मंत्री जेल में रहते हुए सरकार नहीं चला सकेंगे।**
- **इस बिल का उद्देश्य सार्वजनिक जीवन में गिरते जा रहे नैतिकता के स्तर को ऊपर उठाना और राजनीति में शुचिता लाना है।**
- **विगत कुछ वर्षों में, देश में ऐसी आश्चर्यजनक स्थिति उत्पन्न हुई कि मुख्यमंत्री या मंत्री बिना इस्तीफा दिए जेल से अनैतिक रूप से सरकार चलाते रहे।**
- **देश की जनता को यह तय करना है कि क्या जेल में रहकर किसी मंत्री, मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री द्वारा सरकार चलाना उचित है?**
- **एक ओर मोदी जी ने अपने आप को कानून के दायरे में लाने का संविधान संशोधन पेश किया है और दूसरी ओर कानून के दायरे से बाहर रहने और जेल से सरकारें चलाने के लिए पूरे विपक्ष ने इसका विरोध किया।**
- **कांग्रेस की नीति है कि वे प्रधानमंत्री को संविधान संशोधन करके कानून से ऊपर करते हैं, जबकि भाजपा प्रधानमंत्री, मंत्री, मुख्यमंत्रियों को ही कानून के दायरे में ला रही है।**
- **जिन लालू जी को बचाने के लिए काँग्रेस अध्यादेश लाई, जिसका राहुल गांधी ने विरोध किया, आज वही राहुल गांधी लालू जी को गले लगा रहे हैं, विपक्ष का यह दोहरा चरित्र जनता समझ चुकी है।**
- **भ्रष्टाचारियों को बचाने के लिए, कांग्रेस के नेतृत्व में INDI गठबंधन ने जिस भद्दे व्यवहार से इस बिल का विरोध किया, उससे विपक्ष जनता के बीच पूरी तरह से expose हो गया है।**

इंदिरा गांधी ने अपने आप को कानून के दायरे में आने से बचाने के लिए संविधान में संशोधन लाया था और कांग्रेस उसी संस्कृति को आगे बढ़ाना चाहती है। जहां कांग्रेस की कार्यसंस्कृति और नीति प्रधानमंत्री को कानून से ऊपर रखने की रही है, वहीं भाजपा की नीति अपने प्रधानमंत्री, मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों को कानून के दायरे में लाने की है।

मोदी सरकार की राजनीति में नैतिक मानकों को बहाल करने की प्रतिबद्धता और जनता में इस समस्या को लेकर गुस्से को देखते हुए, लोकसभा अध्यक्ष की अनुमति से ऐसे संवैधानिक संशोधन विधेयक पेश किए हैं जिनसे यह सुनिश्चित होगा कि कोई भी व्यक्ति जेल में रहते हुए प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या केंद्र और राज्य सरकार में मंत्री जैसे अहम संवैधानिक पदों पर कार्य नहीं कर सकेगा। इन विधेयकों का उद्देश्य गिरते नैतिक मानकों को सुधारना और राजनीति में शुचिता बनाए रखना है। इन तीनों बिल से जो कानून अस्तित्व में आएगा, वह यह है कि-

1. कोई भी व्यक्ति अगर गिरफ्तार होकर जेल में है, तो वह प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या केंद्र/राज्य सरकार में मंत्री नहीं रह सकेगा।
2. जब संविधान बना था, तब उसके निर्माताओं ने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि भविष्य में कुछ नेता गिरफ्तारी के बाद भी नैतिक आधार पर इस्तीफा देने से इनकार करेंगे। हाल के वर्षों में देश ने देखा है कि कैसे कुछ मुख्यमंत्री या मंत्री जेल से ही सरकार चलाते रहे हैं।
3. विधेयक में यह भी प्रावधान है कि अगर कोई नेता गिरफ्तार होता है, तो उसे 30 दिनों के भीतर जमानत लेने का समय दिया जायेगा। यदि 30 दिन में जमानत नहीं मिली, तो 31वें दिन प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री को उसे पद से

हटाना होगा, अन्यथा वह स्वतः ही अयोग्य हो जाएगा। हालांकि, अगर बाद में विधिक प्रक्रिया से जमानत मिल जाती है तो उसे फिर से पद पर बहाल किया जा सकता है।

अब सवाल देश की जनता के सामने है कि क्या किसी मंत्री, मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री के लिए जेल से सरकार चलाना उचित है?

एक तरफ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने खुद को कानून के दायरे में लाने के लिए संवैधानिक संशोधन प्रस्तुत किया है, वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस के नेतृत्व में पूरा विपक्ष इसका विरोध कर रहा है ताकि वे कानून के दायरे में न आएं, जेल से सरकार चलाते रहें और सत्ता से चिपके रहें। राष्ट्र यह भी याद रखता है कि इसी सदन में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी जी ने 39 वें संवैधानिक संशोधन के जरिए प्रधानमंत्री को विशेषाधिकार दे दिया था, जिससे उन पर कोई कानूनी कार्यवाही न हो सके। जहां कांग्रेस की कार्य संस्कृति और नीति प्रधानमंत्री को कानून से ऊपर रखने की रही है, वहीं भाजपा की नीति अपने प्रधानमंत्री, मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों को कानून के दायरे में लाने की है।

सदन में कांग्रेस के एक नेता ने मेरे खिलाफ व्यक्तिगत टिप्पणी करते हुए कहा कि जब कांग्रेस ने मुझे पूरी तरह झूठे मामले में फंसाकर गिरफ्तार किया था, तब मैंने इस्तीफा नहीं दिया। मैं कांग्रेस को याद दिलाना चाहता हूँ कि मैंने गिरफ्तारी से पहले ही इस्तीफा दे दिया था। मैंने तब तक कोई संवैधानिक पद नहीं संभाला, जब तक अदालत ने मुझे पूर्णतः बरी नहीं कर दिया। अदालत ने साफ कहा था कि मेरे खिलाफ दर्ज यह झूठा मुकदमा राजनीतिक प्रतिशोध से प्रेरित था।

भाजपा और एनडीए हमेशा नैतिक मूल्यों के पक्षधर रहे हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने तो केवल आरोप लगने पर ही अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। दूसरी ओर कांग्रेस आज भी इंदिरा गांधी द्वारा शुरू की गई अनैतिक परंपरा को आगे बढ़ा रही है।

लालू प्रसाद यादव को कानून से बचाने के लिए कांग्रेस पार्टी द्वारा लाए गए अध्यादेश का विरोध स्वयं राहुल गांधी ने किया था और आज वही राहुल गांधी लालू यादव को पटना के गांधी मैदान में गले लगा रहे हैं। जनता उनके दोहरे व्यवहार को भली-भांति समझती है। यह पहले ही स्पष्ट कर दिया गया था कि इस विधेयक को विस्तृत चर्चा के लिए संसद की संयुक्त संसदीय समिति को भेजा जाएगा। इसके बावजूद कांग्रेस के नेतृत्व में पूरा इंडिया गठबंधन बेशर्मी से एकजुट होकर भ्रष्टाचारियों को ढाल देने के लिए इसका विरोध कर रहा है। विपक्ष देश की जनता के सामने पूरी तरह बेनकाब हो चुका है। ▪

विकसित भारत के विजन को साकार करेंगे - डॉ. यादव

▪ **प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना और जीएसटी रिफॉर्म लाने की घोषणा के लिए आभार।**

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने विरासतों के संरक्षण के साथ देश के विकास का संकल्प लिया है। उन्होंने अपने संभाषण में ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश के युवाओं को भरपूर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का एक संकल्प प्रकट किया है। इस योजना में 3.50 करोड़ से अधिक युवाओं को रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया है। युवाओं के कल्याण के साथ ही विकसित भारत का लक्ष्य पाने की संकल्पना सराहनीय है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने भाषण में कहा कि हम सभी परिश्रम की पराकाष्ठा करेंगे, न किसी के सामने झुकेंगे और न ही रुकेंगे। सरकार अपने नियम-परंपराओं में गुलामी का कोई अंश नहीं रहने देगी, यह मोदी जी का एक बड़ा संकल्प है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने दीपावली तक देश में जीएसटी रिफॉर्म लाने की मंशा प्रकट की है। यह देश के विकास में एक बड़ा कदम है। इससे आमजन के लिए जरूरी सभी प्रकार की रोजमर्रा की वस्तुओं की कीमतों पर भी बड़ा असर पड़ेगा। बाजार में वस्तुएं सस्ती होंगी और भारत एक सशक्त योजना के साथ आत्मनिर्भर बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ेगा।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कई प्रकार से भारत का मान बढ़ाया है। देश को विरासत से विकास का वैल्यूएबल विजन दिया है। मध्यप्रदेश सरकार निश्चित रूप से प्रधानमंत्री के विजन को पूरा करने के लिए मिशन की तरह कार्य करेगी और मध्यप्रदेश को तेज गति से विकास के पथ पर अग्रसर रखेगी। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने देश की भावनाओं के अनुरूप अपने भाव व्यक्त किए हैं। ▪

गणेश चतुर्थी सामाजिक एकता, सौहार्द्र और संस्कृति के संवर्धन का पर्व-हेमंत खण्डेलवाल

गणेश चतुर्थी सामाजिक एकता, सौहार्द्र और लोक संस्कृति के संवर्धन का पर्व है। विघ्नहर्ता, मंगलकर्ता बुद्धि, विवेक, समृद्धि और सौभाग्य के अधिष्ठाता देव भगवान श्री गणेश की पूजा, आराधना का उत्सव है। गणेशोत्सव आयोजन का उद्देश्य गणेश जी के सर्वव्यापी होने का अहसास कराना है। ▪

मिथिला संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र- अमित शाह

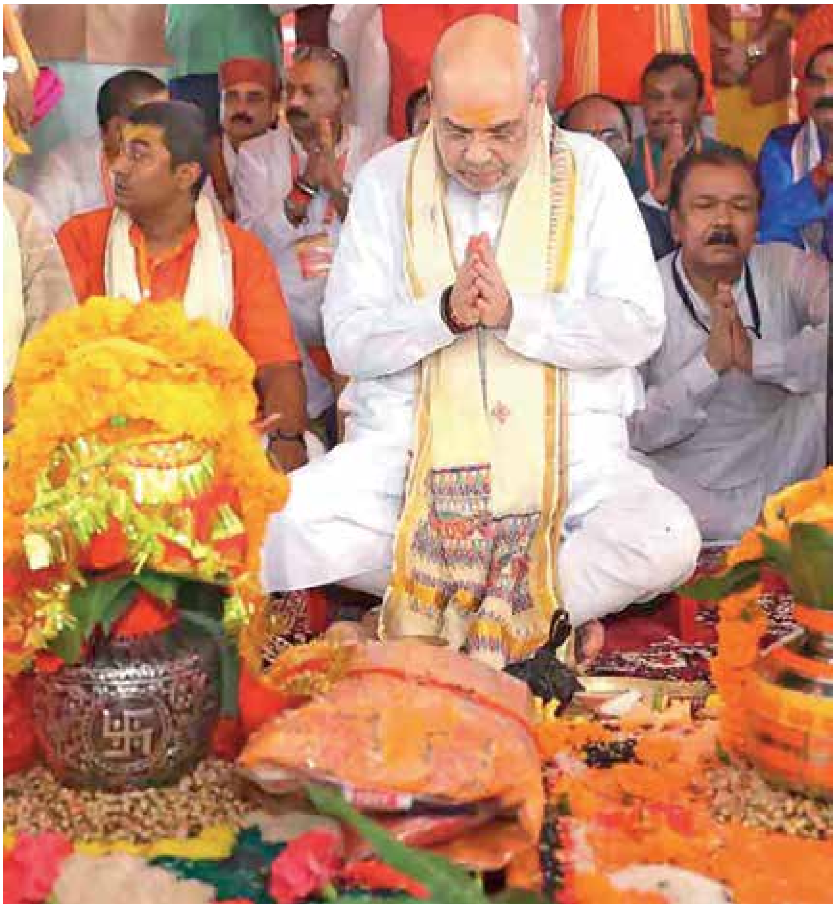

मिथिलांचल के उत्तर में पर्वतराज हिमालय है, दक्षिण में पाप विमोचनी मां गंगा, पूर्व में महानंदा नदी और पश्चिम में खंड की भूमि है। इन सभी के बीच माता जानकी का जन्म हुआ। रामायण काल में, वर्षों पहले जब अकाल पड़ा था, तब राजा जनक ने उस भूमि में सोने का हल चलाया था।

- **माता जानकी का जहां जन्म हुआ, उस पुनौरा धाम मंदिर के परिसर के समग्र विकास की 890 करोड़ रुपये की लागत से नींव डाली गई है।**
- **माँ जानकी की जन्मस्थली पर बनने जा रहा मंदिर, मिथिलांचल के भाग्योदय की शुरुआत है।**
- **माता सीता ने आदर्श बेटी, आदर्श पत्नी, आदर्श माँ और आदर्श राजमाता, इन सभी स्वरूपों को चरितार्थ किया है।**
- **मोदी जी ने वैश्विक मंच पर मिथिला की कला को आगे बढ़ा कर इसका गौरव बढ़ाया है।**

बिहार के सीतामढ़ी में मां जानकी के जन्म स्थल पुनौरा धाम मंदिर परिसर का भूमि पूजन किया गया। यह केवल सीतामढ़ी, मिथिलांचल या बिहार नहीं बल्कि पूरे देश और दुनिया के लिए बहुत ही शुभ अवसर है। मां जानकी की जन्मभूमि पर जो भव्य मंदिर बनने जा रहा है, यह केवल एक मंदिर नहीं है बल्कि मिथिलांचल और बिहार के भाग्योदय की शुरुआत है।

न केवल सीतामढ़ी, मिथिलांचल या बिहार, बल्कि पूरे देश और दुनिया के लिए बहुत ही शुभ अवसर है कि मां जानकी के जन्मस्थल पर पुनौरा धाम मंदिर परिसर के समग्र विकास की नींव रखी गई है। यह न केवल मिथिलांचल, बिहार, बल्कि पूरे देश के भक्तों के लिए अत्यंत आनंद की बात है। यहां की संस्कृति केवल मिथिलांचल की संस्कृति नहीं है, बल्कि पूरे भारतवर्ष की भारतीय संस्कृति का एक अनन्य गहना है।

मिथिलांचल के उत्तर में पर्वतराज हिमालय है, दक्षिण में पाप विमोचनी मां गंगा, पूर्व में महानंदा नदी और पश्चिम में खंड की भूमि है। इन सभी के बीच माता जानकी का जन्म हुआ। रामायण काल में, वर्षों पहले जब अकाल पड़ा था, तब राजा जनक ने उस भूमि में सोने का हल चलाया था। उसी हल से मां जानकी प्रकट हुई और बारिश के लिए हल चलाने का प्रतीकात्मक कार्य किया था। आज मां जानकी के जन्मस्थल के परिसर की भूमि पूजन के समय मां जानकी ने बारिश भेजकर आशीर्वाद दिया। यह बारिश और मां जानकी का यह आशीर्वाद न केवल बिहार के लिए, बल्कि पूरे भारतवर्ष के लिए शुभ संकेत बनने वाला है।

पुनौरा धाम में शक्ति स्वरूपा जगत जननी मां जानकी का यह भव्य मंदिर 68 एकड़ से अधिक क्षेत्र में बनेगा। लगभग 890 करोड़ की लागत से यहां मां जानकी का भव्य स्मारक और मंदिर निर्मित किया जाएगा। इस 890 करोड़ में से 137 करोड़ माता सीता के मौजूदा मंदिर के जीर्णोद्धार पर खर्च होंगे, जबकि 728 करोड़ परिक्रमा पथ और अन्य सभी निर्माण कार्यों पर लगाए जाएंगे। इस परियोजना में परिक्रमा पथ, ध्यान केंद्र, वाटिका, धार्मिक जलस्रोतों का पुनर्निर्माण, धर्मशालाएं, भोजनालय और चिकित्सा सुविधाएं शामिल होंगी। साथ ही, डिजिटल स्वरुप में मां सीता के जीवन चरित्र और रामायण की कथाओं को प्रदर्शित करने का एक बड़ा प्रयास होगा, जहां थ्री-डी अनुभव के माध्यम से हमारे युवा प्रभु श्री राम के

साथ-साथ माता जानकी के जीवन के सभी महत्वपूर्ण प्रसंग भी बारीकी से देख सकेंगे। इस परियोजना के अंतर्गत रामायण सर्किट के वाल्मीकि नगर का भी 52 करोड़ से विकास होगा। इसके अलावा, मधुबनी के फुलहर स्थान का 31 करोड़, सीतामढ़ी के पंथ पाकर का 24 करोड़, अहिल्या स्थान का 23 करोड़, राम रेखा घाट का 13 करोड़ और मुंगेर एवं गया के सीताकुंड का 7 करोड़ से विकास किया जाएगा। जहां पहली बार श्रीराम और माता सीता की भेंट हुई, वहां से लेकर लव-कुश के जन्मस्थान, माता सीता के अंतिम निवास स्थल और पंथ पाकर तक सभी स्थानों को पुनर्जीवित कर, मां सीता के जीवन और हमारे देश की मातृ शक्ति को समर्पित किया जाएगा।

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में माता सीता का स्थान अद्वितीय और पूजनीय है। अपने एक ही जीवन में उन्होंने यह प्रमाणित किया कि एक आदर्श पत्नी, आदर्श पुत्री, आदर्श मां और आदर्श राजमाता कैसी हो सकती हैं। वे इन सभी स्वरूपों की जीती-जागती प्रतिमूर्ति थीं। इसके साथ ही सीतामढ़ी से दिल्ली के लिए ''अमृत भारत ट्रेन'' की शुरुआत भी हुई है, जिससे रक्सौल, नरकटियागंज, बगहा और सीतामढ़ी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को सीधा लाभ मिलेगा। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में बिहार के रेल विकास को नई दिशा मिली है। जब लालू यादव रेल मंत्री थे, तब बिहार के लिए प्रति वर्ष मात्र 1132 करोड़ का प्रावधान होता था लेकिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने केवल वर्ष 2025-26 में ही बिहार के लिए 10,066 करोड़ की राशि रेल क्षेत्र में व्यय की है।

मिथिला सतपद ब्राह्मण ग्रंथों से लेकर वाल्मीकि रामायण, महाभारत, बौद्ध और जैन साहित्य तक हमारी संस्कृति का एक प्रमुख केंद्र रहा है। धर्मशास्त्र, ज्योतिष, साहित्य, संगीत, व्याकरण, भाषा और तंत्र ज्ञान का यह एक महान विद्या धाम रहा है। मां जानकी की जन्मभूमि पर जो भव्य मंदिर बनने जा रहा है, यह केवल एक मंदिर नहीं है बल्कि मिथिलांचल और बिहार के भाग्योदय की शुरुआत है। मिथिलांचल की वह गरिमा, वह विद्या का स्थान, जहां राजा जनक, याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी जैसे महान विद्वान हुए, जहां की परंपरा को आदि शंकराचार्य और मंडन मिश्र ने ऊंचाई पर पहुंचाया, जहां मुनि अष्टावक्र ने अष्टावक्र गीता का ज्ञान दिया, उस स्थान को पुनः विद्या, ध्यान और संस्कृति का केंद्र बनाने की आवश्यकता है और यह यहीं से शुरू होगी।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने मिथिला का अनेक रूप से सम्मान दिया है। बिहार कोकिला स्वर्गीय शारदा सिन्हा जी को 2018 में पद्मभूषण और 2025 में मरणोपरांत पद्मविभूषण से सम्मानित कर बिहार की कला को सम्मान दिया गया। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने मैथिली भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया और मोदी जी ने वैश्विक मंचों पर मिथिला की कला को आगे बढ़ाया।

प्रधानमंत्री जी ने अर्जेंटीना के उपराष्ट्रपति को मधुबनी पेंटिंग की भेंट दी, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति को भी मिथिलांचल की कला का नमूना भेंट स्वरूप देकर विदेशों में भी मिथिला को गौरव दिलाया गया। हमारी संस्कृति सदा से ही मातृ शक्ति का सम्मान करती रही है। एक छोटा बच्चा जब प्रभु श्री राम का नाम लेता है तो सीता-राम कहता है, राधे-श्याम कहता है, हम नाम रखते हैं तो गौरी-शंकर रखते हैं। इस देश ने हमेशा मातृ शक्ति की उपासना की है और माता सीता का यह मंदिर माता सीता, मैत्रेयी, गार्गी और विदूषी भारती जैसी विभूतियों का सम्मान बनेगा।

जब आचार्य शंकराचार्य और मण्डन मिश्र के बीच शास्त्रार्थ चल रहा था, तब इसकी अध्यक्षता मण्डन मिश्र की धर्मपत्नी, विदुषी भारती कर रही थीं, जो दोनों पक्षों के शास्त्र की गहराई को समझती थीं। यही विदुषी भारती पूरे विश्व को संदेश दे गई थीं कि भारत में मातृ शक्ति हर क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान रखती है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 5 अगस्त 2020 को अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण कराया, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर बनवाया, उज्जैन में महाकाल कॉरिडोर बनाया। श्री सोमनाथ का मंदिर फिर से स्वर्णिम रूप में खड़ा हो रहा है।

अनेक पवित्र स्थानों का उद्धार आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हुआ है और उनके नेतृत्व में यहां मां सीता का भव्य मंदिर और पूरा परिसर बन रहा है। यह सबके लिए गर्व और आनंद की बात है। देश की सुरक्षा के लिए यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी पूरी तरह प्रतिबद्ध हैं। एक समय था जब कांग्रेस का शासन था, तब देश भर में बम धमाके होते थे, आतंकवादी हमला करके पाकिस्तान भाग जाते थे और कोई जवाबदेही नहीं थी। लेकिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार आई, उरी में हमला हुआ, हमने सर्जिकल स्ट्राइक किया।

पुलवामा में हमला हुआ, हमने एयर स्ट्राइक किया। पहलगाम में हमला हुआ, ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारतीय सेना ने आतंकवादियों को उनके घर में घुसकर साफ किया लेकिन कांग्रेस पार्टी और लालू यादव की कंपनी संसद में ऑपरेशन सिंदूर का विरोध कर रही है। यह मोदी सरकार है, भारतीय जनता पार्टी और एनडीए की सरकार है, यहां देश की सुरक्षा के साथ कोई खिलवाड़ करने का अधिकार किसी को नहीं है। ▪

देश की कमान सशक्त और मजबूत हाथों में - हेमंत खण्डेलवाल

लाखों लोगों के बलिदान के बाद देश को आजादी मिली है। आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वालों का बलिदान व्यर्थ न जाए इसकी चिंता एक-एक कार्यकर्ता को करना है। आज देश और प्रदेश सशक्त और मजबूत हाथों में है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी हर वर्ग, हर क्षेत्र के विकास को ध्यान में रखकर योजनाएं बना रहे हैं और इसी का परिणाम है कि अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सरकार की योजनाएं पहुंच रही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में जो जनहित के कार्य हो रहे हैं, उन्हें जन-जन पहुंचाने का कार्य हम सबको करना है। मध्यप्रदेश को सशक्त और विकसित प्रदेश बनाने के लिए हमें अपना अमूल्य योगदान देना होगा। इस पावन पर्व पर पार्टी कार्यकर्ताओं और प्रदेशवासियों ने देश की आजादी को अक्षुण्ण बनाए रखने का संकल्प लिया है।

"वोकल फॉर लोकल" - त्योहारों को स्वदेशी गर्व के साथ मनायें

- "वोकल फॉर लोकल" - में पीएम मोदी ने त्योहारों को स्वदेशी गर्व के साथ मनाने की अपील की
- जहां भी संकट आया, हमारे NDRF-SDRF के जवान, अन्य सुरक्षा बल, सभी ने लोगों को बचाने के लिए दिन-रात मेहनत की।
- मैं हर उस नागरिक का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस कठिन समय में मानवता को सर्वोपरि रखा।
- जम्मू-कश्मीर के पुलवामा में पहली बार डे-नाइट क्रिकेट मैच देखने के लिए रिकॉर्ड संख्या में लोग स्टेडियम में एकत्र हुए।
- "एक भारत-श्रेष्ठ भारत" की भावना देश के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और इसमें खेलों की बड़ी भूमिका है।
- आज देश के अनेक राज्यों में सैकड़ों सोलर राइस मिल स्थापित हो चुकी हैं, जिससे किसानों की आय बढ़ी है।
- हमारे बढ़ई, लोहार, सुनार, कुम्हार, मूर्तिकार, हमेशा से भारत की समृद्धि का आधार रहे हैं।
- पूरा देश गणेश उत्सव को धूमधाम से मना रहा है। आने वाले दिनों में कई त्योहारों की रौनक चारों ओर फैलेगी।
- आज पूरे विश्व का ध्यान भारत की ओर है। पूरा विश्व भारत में छिपी असीम संभावनाओं पर निगाहें लगाए हुए है।
- हमें स्वदेशी भावना के साथ आगे बढ़ना है: - एक मंत्र - वोकल फॉर लोकल, एक मार्ग - आत्मनिर्भर भारत, एक लक्ष्य - विकसित भारत।
- रामायण और भारतीय संस्कृति के प्रति प्रेम अब दुनिया के हर कोने तक पहुंच रहा है।

देश में हुआ पहला 'Khelo India Water Sports Festival' और वो भी श्रीनगर की डल झील पर हुआ। सचमुच, ऐसा उत्सव आयोजित करने के लिए ये कितनी खास जगह है।

इसका उद्देश्य है जम्मू-कश्मीर में water sports को और लोकप्रिय बनाना। इसमें पूरे भारत से 800 से अधिक athletes ने हिस्सा लिया।

मॉनसून के इस मौसम में प्राकृतिक आपदाएं देश की कसौटी कर रही हैं। पिछले कुछ हफ्तों में हमने बाढ़ और भू-स्खलन का बड़ा कहर देखा है। कहीं घर उजड़ गए, कहीं खेत डूब गए, परिवार के परिवार उजड़ गए, पानी के तेज बहाव में कहीं पुल बह गए, सड़कें बह गईं, लोगों का जीवन संकट में फंस गया। इन घटनाओं ने हर हिन्दुस्तानी को दुखी किया है। जिन परिवारों ने अपने प्रियजन खोए, उनका दर्द हम सबका दर्द है। जहां भी संकट आया, वहाँ के लोगों को बचाने के लिए हमारे NDRF-SDRF के जवान, अन्य सुरक्षा बल हर कोई दिन-रात जुटे रहे। जवानों ने तकनीक का सहारा भी लिया है। Thermal कैमरे, Live Detector, Sniffer Dogs और Drone surveillance, ऐसे अनेक आधुनिक संसाधनों के सहारे राहत कार्य में तेजी लाने की भरपूर कोशिश की गई। इस दौरान helicopter से राहत सामग्री पहुंचाई गई, घायलों को airlift किया गया। आपदा की घड़ी में सेना मददगार बनकर सामने आई। स्थानीय लोग, सामाजिक कार्यकर्ता, डॉक्टर, प्रशासन, संकट की इस घड़ी में सभी ने हर संभव प्रयास किया। मैं ऐसे हर नागरिक को हृदय से धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस कठिन समय में मानवीयता को सबसे ऊपर रखा हुआ है।

बाढ़ और बारिश की इस तबाही के बीच जम्मू-कश्मीर ने दो बहुत खास उपलब्धियां भी हासिल की हैं। इन पर ज्यादा लोगों का ध्यान नहीं गया, लेकिन जब आप उन उपलब्धियों के बारे में जानेंगे तो आपको बहुत खुशी होगी। जम्मू-कश्मीर के पुलवामा के एक स्टेडियम में record संख्या में लोग इकट्ठा हुए। यहाँ

पुलवामा का पहला day-night cricket match खेला गया। पहले ये होना असंभव था, लेकिन अब मेरा देश बदल रहा है। ये match 'Royal Premier League' का हिस्सा है, जिसमें जम्मू-कश्मीर की अलग-अलग टीमें खेल रही हैं। इतने सारे लोग, खासकर युवा, पुलवामा में रात के समय, हजारों की तादाद में cricket का आनंद लेते हुए - ये नजारा वाकई देखने लायक था।

दूसरा आयोजन जिसने ध्यान खींचा, वो है देश में हुआ पहला 'Khelo India Water Sports Festival'और वो भी श्रीनगर की डल झील पर हुआ। सचमुच, ऐसा उत्सव आयोजित करने के लिए ये कितनी खास जगह है। इसका उद्देश्य है जम्मू-कश्मीर में water sports को और लोकप्रिय बनाना। इसमें पूरे भारत से 800 से अधिक athletes ने हिस्सा लिया। महिला athletes भी पीछे नहीं रही उनकी भागीदारी भी लगभग पुरुषों के बराबर थी। मैं उन सभी खिलाड़ियों को बधाई देना चाहता हूँ जिन्होंने इसमें भाग लिया। विशेष बधाई मध्य प्रदेश को, जिसने सबसे ज्यादा मेडल जीते, उसके बाद हरियाणा और ओडिशा का स्थान रहा। जम्मू-कश्मीर की सरकार और वहाँ की जनता की आत्मीयता और मेहमान नवाजी की मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ।

इस आयोजन से जुड़े अनुभव को आप तक पहुंचाने के लिए मैंने सोचा है कि ऐसे दो खिलाड़ियों से भी बात करूं, जिन्होंने इसमें हिस्सा लिया, उनमें से एक हैं ओडिशा की रश्मिता साहू और दूसरे हैं श्रीनगर के मोहसिन अली, आइए सुनते हैं वो क्या कहते हैं-

प्रधानमंत्री - रश्मिता जी, नमस्ते!

रश्मिता - नमस्ते सर।

प्रधानमंत्री - जय जगन्नाथ।

रश्मिता - जय जगन्नाथ सर।

प्रधानमंत्री - रश्मिता जी सबसे पहले तो आपको खेल जगत में सफलता के लिए बहुत-बहुत बधाई।

रश्मिता -Thank You Sir।

प्रधानमंत्री - रश्मिता, हमारे श्रोता आपके बारे में और आपकी खेल यात्रा के बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक हैं, मैं भी बहुत उत्सुक हूँ, बताइए!

रश्मिता - सर मैं रश्मिता साहू हूँ। ओडिशा से, और मैं canoeing player हूँ, मैं 2017 से sports join किया था, canoeing शुरू किया था और मैं National level में, National Championship और National Games में participate किया हूँ, मेरा 41 medals है, 13 Gold, 14 Silver और 14 Bronze

Medals, सर।

प्रधानमंत्री - इस खेल की रुचि कैसे बनी? सबसे पहले किसने आपको इस तरफ प्रेरित किया? आपके परिवार में खेल का वातावरण है क्या?

रश्मिता - नहीं सर, मैं जिस गाँव से आती हूँ उसमें खेल का कोई ये नहीं था, तो इधर नदी में boating हो रहा था, तो मैं ऐसे swimming के लिए गया था, तो ऐसे मैं और मेरा दोस्त लोग ऐसे swimming कर रहा था तो एक boat गया है canoeing- kayaking का तो मेरे को उसके बारे में कुछ पता नहीं था। तो मैंने मेरे दोस्त को पूछा कि ये क्या है? तो दोस्त ने बताया कि उधर जगतपुर में SAI Sports Centre है उसमें खेल का होता है उसमें मैं भी जाने वाली हूँ। मेरे को बहुत interesting लगा। तो ये क्या है मुझे पता भी नहीं था ये तो पानी में बच्चे लोग कैसे करते है? Boating करते है? मैं उसको बोला कि मुझे भी जाना है। कैसे-कैसे जाना है? मुझे भी बताओ? तो उधर जाके बात करो बोला है। फिर मैं तुरंत घर में जाके पापा मेरे को जाना है, पापा मेरे को जाना है। फिर पापा लोग ठीक है लेके आया। उस time trial तो नहीं था फिर coach लोग ने बोला कि trial February में होता है, February, March में आप उस time trial के time में आ जाओ। फिर मैं trial के time में आया।

प्रधानमंत्री - अच्छा रश्मिता, कश्मीर में हुए 'Khelo India Water Sports Festival' में आपका स्वयं का अनुभव कैसा रहा? पहली बार कश्मीर गई थी?

रश्मिता - हाँ सर, मैं पहली बार कश्मीर गई थी। हम लोगों को उधर Khelo India, First 'Khelo India Water Sports Festival' आयोजित किया गया था। उसमें मेरा दो Event था। Singles 200 meter और 500 meter doubles में। और मैं दोनों में gold medal हासिल किया हूँ सर।

प्रधानमंत्री - अरे वाह! दोनों में लाई हो।

रश्मिता - yes sir।

प्रधानमंत्री - बहुत-बहुत बधाई।

रश्मिता - thank you sir

प्रधानमंत्री - अच्छा रश्मिता Water Sports के अलावा आपकी क्या hobbies हैं?

रश्मिता - सर water sports के अलावा सर मेरे को sports में मेरे को running बहुत अच्छा लगता है। जब भी मैं छुट्टी में जाती हूँ तब मैं running के लिए जाती हूँ मेरा जो पुराना field है उधर मैं पहले थोड़ा-सा football खेलना सीखी थी तो उधर जब भी जाती थी मैं बहुत running करती हूँ और मैं football भी खेलती हूँ सर, थोड़ा बहुत।

प्रधानमंत्री - मतलब खेल आपके रगों में है।

रश्मिता - हाँ सर, मैं जब 1st class से 10th class तक जब school में था तो मैं जो भी participate करता था उसमें सब में 1st होता था champion होता था सर।

प्रधानमंत्री - रश्मिता जो लोग आपकी तरह खेलों में आगे बढ़ना चाहते हैं, अगर उनको कोई संदेश देना है तो आप क्या दोगी?

रश्मिता - सर बहुत सारे बच्चे, उनको घर से निकलना भी मना होता है और लड़की हो बाहर में कैसे जाओगे और किसी-किसी का पैसा का दिक्कत के वजह से वो लोग खेल छोड़ रहे हैं और ये जो Khelo India का scheme हो रहा है उसमें बहुत सारे बच्चों को पैसा का भी मदद मिलता है और बहुत सारे बच्चों को बहुत सारे help मिल रहा है, उसकी वजह से बहुत सारे बच्चे आगे जा पा रहे हैं। और मैं बोलूँगी

सबसे कि खेल को छोड़ो मत, खेल से बहुत आगे जा सकते हैं। तो खेल तो एक खेल है लेकिन उसमें शरीर का हर अंग स्वस्थ भी रहता है और खेल को आगे लेके India को medal दिलवाना हमारा कर्तव्य है सर।

प्रधानमंत्री - चलिए रश्मिता जी मुझे बहुत अच्छा लगा आपको फिर से एक बार बहुत-बहुत बधाई और आपके पिताजी को भी मेरी तरफ से प्रणाम कहिएगा क्योंकि उन्होंने इतनी कठिनाइयों के बीच भी एक बेटी को आगे बढ़ने के लिए इतना प्रोत्साहन दिया, मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं हैं।

रश्मिता -Thank You Sir।

प्रधानमंत्री - जय जगन्नाथ।

रश्मिता - जय जगन्नाथ सर।

प्रधानमंत्री - मोहसिन अली नमस्ते !

मोहसिन अली- नमस्ते सर !

प्रधानमंत्री - मोहसिन जी आपको बहुत-बहुत बधाई और आपके उज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

मोहसिन अली - Thank you sir.

प्रधानमंत्री - मोहसिन आपने पहले Khelo India Water Sports इसका festival और उसमें भी सबसे पहला Gold Medal जीतने वाले आप, आपको कैसा लगा?

मोहसिन अली - Sir, बहुत ही खुश हूँ मैं, मैंने Gold Medal जीता Khelo India में जो पहली बार हुआ है यहां पर, कश्मीर में।

प्रधानमंत्री - लोगों में क्या चर्चा है?

मोहसिन अली - बहुत ही चर्चे हैं Sir, पूरी family खुश है जी।

प्रधानमंत्री - आपके स्कूल वाले?

मोहसिन अली - स्कूल वाले भी सब खुश हैं, कश्मीर में सब बोलते हैं आप Gold Medallist हो।

प्रधानमंत्री - तो आप तो अब बड़े celebrity बन गए।

मोहसिन अली -Yes Sir !

प्रधानमंत्री - अच्छा water sports की रुचि कैसे बनी और उसके फायदे क्या नजर आ रहे हैं आपको?

मोहसिन अली - पहले बचपन में मैंने देखा वो boat चलती हुई वहां पर डल lake में, पापा ने बोला आप करोगे, हां मुझे भी शौक है, मैं भी फिर गया वहां पर centre में madam के पास, फिर madam ने मुझे सिखाया Bilquis mam ने।

प्रधानमंत्री - अच्छा, मोहसिन पूरे देश के लोग आए थे पहली बार water sports का कार्यक्रम हुआ और वो भी श्रीनगर में हुआ, वो भी डल झील में हुआ, इतने सारे, देश के लोग आए तो वहाँ के लोगों को क्या feel होता था?

मोहसिन अली - बहुत ही खुशी है सर, सब बोल रहे अच्छी जगह है पूरा अच्छा है यहां पर facility सब कुछ अच्छी है। सब यहां पर सब कुछ अच्छा रहा 'खेलो इंडिया' में।

प्रधानमंत्री - तो आप कहीं खेलने के लिए कश्मीर के बाहर गए हैं कभी?

मोहसिन अली - Yes Sir, मैं भोपाल गया हूं, Goa गया हूं, केरल गया हूं, हिमाचल गया हूं।

प्रधानमंत्री - अच्छा तो फिर आप तो पूरा हिंदुस्तान देख लिए हैं।

मोहसिन अली - Yes Sir,

प्रधानमंत्री - अच्छा इतने सारे खिलाड़ी वहां आए थे।

मोहसिन अली - Yes Sir,

प्रधानमंत्री - तो नए दोस्त बनाए कि नहीं बनाए।

मोहसिन अली - सर, बहुत दोस्त बना लिए, एक साथ भी घूमे हम यहां पर Dal Lake में, Lal Chowk में, पूरी जगह में घूमे हम सर, पहलगाम भी गए थे, yes sir पूरी जगह।

प्रधानमंत्री - देखिए मैंने तो देखा है कि जम्मू कश्मीर में sports talent बड़ा गजब का है जी।

मोहसिन अली - Yes Sir,

प्रधानमंत्री - हमारे जो जम्मू कश्मीर के नौजवान है वो देश का नाम रोशन करे इतना सामर्थ है उनके अंदर और आपने करके दिखाया है।

मोहसिन अली - Sir, मेरा dream है Olympic में medal जीतना, वही dream है।

प्रधानमंत्री - वाह शाबाश,

मोहसिन अली - वही dream है Sir,

प्रधानमंत्री - देखिए आपसे सुनकर के ही मेरे तो रोंगटे खड़े हो गए।

मोहसिन अली - Sir, वही dream है मेरा Olympic में medal जीतना। देश के लिए national anthem बजवाना, बस वही dream है मेरा।

प्रधानमंत्री - मेरे देश का एक मजदूर परिवार का बेटा इतने बड़े सपने देखता है मतलब ये देश बहुत आगे बढ़ने वाला है।

मोहसिन अली - Sir, बहुत आगे बढ़ने वाला है। हम शुक्रगुजार हैं India Government का जिन्होंने इतना यहां पर खेलो इंडिया किया है यहां पर पहली बार हुआ है sir.

प्रधानमंत्री - तभी तो तुम्हारा स्कूल में भी जय-जयकार चलता होगा।

मोहसिन अली - Yes Sir,

प्रधानमंत्री - चलिए मोहसिन, मुझे बहुत अच्छा लगा आपसे बात करके और मेरी तरफ से आपके पिताजी को विशेष रूप से मेरा धन्यवाद करना। क्योंकि उन्होंने मजदूरी की जिंदगी जी करके भी आपकी जिंदगी बनाई है और आपने अपने पिताजी के शब्दों पर बिल्कुल आराम किए बिना 10 साल तक तपस्या की है यह खिलाड़ी के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा होती है और आपके coach को भी मैं बहुत बधाई देता हूं कि जिन्होंने आपके पीछे इतनी मेहनत की, मेरी तरफ से बहुत-बहुत शुभकामनाएँ, बहुत-बहुत बधाई भैया।

मोहसिन अली - Thank you sir, Namaskar Sir, Jai Hind !

'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना, देश की एकता, देश के विकास के लिए बहुत जरूरी है और निश्चित तौर पर खेल इसमें बड़ी भूमिका निभाते हैं और इसलिए ही तो मैं कहता हूँ जो खेलता है, वो खिलता है। हमारा देश भी जितने tournament खेलेगा, उतना खिलेगा। आप

दोनों खिलाड़ियों को आपके साथियों को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

आपने UPSC का नाम तो जरूर सुना होगा। ये संस्था देश की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक Civil Services का exam भी लेती है। हम सबने Civil Services के Toppers की प्रेरणादायी बातें अनेक बार सुनी हैं। ये नौजवान कठिन परिस्थितियों में पढ़ाई के बाद अपनी मेहनत से इस service में जगह पाते हैं - लेकिन, UPSC की परीक्षा की एक सच्चाई और भी है। हजारों ऐसे उम्मीदवार भी होते हैं, जो बेहद काबिल होते हैं, उनकी मेहनत भी किसी से कम नहीं होती, पर मामूली अंतर से वो अंतिम सूची तक नहीं पहुंच पाते। इन उम्मीदवारों को दूसरी परीक्षाओं के लिए नए सिरे से तैयारी करनी पड़ती है। इसमें उनका समय और पैसा दोनों खर्च होता था। इसलिए अब ऐसे होनहार विद्यार्थियों के लिए भी एक digital platform बनाया गया है और इसका नाम है **'प्रतिभा सेतु'**।

'प्रतिभा सेतु' में उन उम्मीदवारों का data रखा गया है, जिन्होंने UPSC की अलग-अलग परीक्षाओं के सभी चरण पास किए, लेकिन, अंतिम Merit list में उनका नाम नहीं आ पाया। इस portal पर दस हजार से ज्यादा ऐसे होनहार युवाओं का databank मौजूद हैं। कोई civil services की तैयारी कर रहा था, कोई engineering services में जाना चाहता था, कोई medical services के हर पड़ाव को पार कर चुका था लेकिन final में उसका selection नहीं हुआ - ऐसे सभी उम्मीदवारों की जानकारी अब 'प्रतिभा सेतु' portal पर उपलब्ध कराई जा रही है। इस portal से private कंपनियां इन होनहार students की जानकारी लेकर उन्हें अपने यहां नियुक्ति दे सकती हैं। इस प्रयास के नतीजे भी आने लगे हैं। सैकड़ों उम्मीदवारों को इस portal की मदद से तुरंत नौकरी मिली है और वो युवा जो मामूली अंतर से रुक गए थे, अब नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

आज पूरी दुनिया का ध्यान भारत की तरफ है। भारत में छिपी संभावनाओं पर दुनिया-भर की नजर है। इसी से जुड़ा एक सुखद अनुभव मैं आपसे साझा करना चाहता हूँ। आपको पता है कि आजकल podcast का बहुत fashion है। विभिन्न विषयों से जुड़े podcast को भांति-भांति के लोग देखते और सुनते हैं। बीते दिनों मैं भी कुछ podcast में शामिल हुआ था। ऐसा ही एक podcast दुनिया के बहुत famous Podcaster Lex Fridman के साथ हुआ था। उस podcast में बहुत सारी बातें हुई

और दुनिया-भर के लोगों ने उसे सुना भी और जब podcast पर बात हो रही, तो बातों-बातों में ऐसे ही मैंने एक विषय उठाया था। जर्मनी के एक खिलाड़ी ने उस podcast को सुना और उसका ध्यान मैंने उसमें जो बात बताई थी उस पर केंद्रित हो गया। उन्होंने उस topic से इतना connect किया कि पहले उन्होंने उस topic पर research की, और फिर जर्मनी में भारतीय दूतावास से संपर्क किया और उन्होंने चिट्ठी लिखकर बताया कि वो उस विषय को लेकर भारत से जुड़ना चाहते हैं। आप सोच रहे होंगे कि मोदी जी ने podcast में ऐसा कैसा विषय कह दिया - जो जर्मनी के एक खिलाड़ी को प्रेरित कर गया, ये कौन-सा विषय था - मैं आपको याद कराता हूँ, मैंने podcast में बातों-बातों में मध्य प्रदेश के शहडोल के football के craze से जुड़ा एक गांव का वर्णन किया था। दरअसल दो साल पहले मैं शहडोल गया था, वहां के football players से मिला था। podcast के दौरान एक सवाल के उत्तर में मैंने शहडोल के football खिलाड़ियों का भी जिक्र किया था। यही बात जर्मनी के football खिलाड़ी और Coach Dietmar Beiersdorfer ने भी सुनी। शहडोल के युवा football खिलाड़ियों की life journey ने उन्हें बहुत प्रभावित और प्रेरित किया। सही में किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि वहां के प्रतिभाशाली football खिलाड़ी दूसरे देशों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेंगे। अब जर्मनी के इस coach ने शहडोल के कुछ खिलाड़ियों को जर्मनी की एक academy में training देने की पेशकश की है। इसके बाद मध्य प्रदेश की सरकार ने भी उनसे संपर्क किया है। जल्द ही शहडोल के हमारे कुछ युवा-साथी training course के लिए जर्मनी जाएंगे। मुझे यह देखकर भी बहुत आनंद आता है कि भारत में football की लोकप्रियता निरंतर बढ़ रही है। मैं football प्रेमियों से आग्रह करता हूँ कि जब समय मिले वे शहडोल जरूर जाएं और वहां हो रहे sporting revolution को करीब से देखें।

सूरत में रहने वाले जितेंद्र सिंह राठौड़ के बारे में जानकर आपको बहुत सुखद एहसास होगा। मन गर्व से भर जाएगा। जितेंद्र सिंह राठौड़ एक security guard हैं और उन्होंने एक ऐसी अद्भुत पहल की है जो हर देशभक्त के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा है। पिछले कुछ वर्षों से वो उन सभी जवानों के बारे में जानकारियां जुटा रहे हैं, जिन्होंने भारत माता की रक्षा में अपने प्राण न्योछावर किए हैं। आज उनके पास प्रथम विश्व युद्ध से लेकर अब तक शहीद हुए हजारों वीर जवानों के बारे में जानकारियां मौजूद हैं। उनके पास शहीदों की हजारों तस्वीरें भी हैं। एक बार एक शहीद के पिता की कही गई बातें उनके हृदय को छू गई। शहीद के पिता ने कहा था ''बेटा गया तो क्या हुआ, वतन तो सलामत है ना!।'' इस एक बात ने जितेंद्र सिंह जी के मन में देश-भक्ति का एक अद्भुत जुनून भर दिया। आज वो कई शहीदों के परिवारों के संपर्क में हैं। उन्होंने करीब ढाई हजार शहीदों के माता-पिता के चरणों की मिट्टी भी अपने पास लाकर रखी है। ये सशस्त्र बलों के प्रति उनके गहरे प्रेम और जुड़ाव का जीवंत उदाहरण है। जितेंद्र जी का जीवन हमें देश-भक्ति की वास्तविक सीख देता है।

आजकल आपने देखा होगा, अक्सर घर की छतों पर, बड़ी इमारतों पर, सरकारी दफ्तरों में solar panel चमकते हुए दिखाई देते हैं। लोग अब इसके महत्व को समझ रहे हैं और खुले मन से अपना रहे हैं। हमारे देश पर सूर्यदेव की इतनी कृपा है, तो क्यों न उनकी दी हुई उस ऊर्जा

का पूरा उपयोग करें।

solar power से किसानों की जिंदगी भी बदल रही है। वही खेत, वही मेहनत, वही किसान, लेकिन अब मेहनत का फल कहीं ज्यादा है। ये बदलाव आ रहा है solar pump से और solar rice mill से। आज देश के कई राज्यों में सैकड़ों solar rice mill लग चुकी हैं। इन solar rice मिलों ने किसानों की आय के साथ ही उनके चेहरे की रौनक भी बढ़ा दी है ।

बिहार की देवकी जी ने solar pump से गांव की किस्मत बदल दी है। मुजफ्फरपुर के रतनपुरा गांव की रहने वाली देवकी जी को लोग अब प्यार से ''Solar दीदी'' कहते हैं। देवकी जी, उनका जीवन आसान नहीं था। कम उम्र में शादी हो गई, छोटा सा खेत, चार बच्चों की जिम्मेदारी और भविष्य की कोई साफ तस्वीर नहीं। लेकिन उनका हौंसला कभी टूटा नहीं । वो एक self-help group से जुड़ी और वहीं उन्हें solar pump के बारे में जानकारी मिली। उन्होंने solar pump के लिए प्रयास शुरू किए और उसमें सफल भी रही। Solar दीदी के solar pump ने इसके बाद जैसे गांव की तस्वीर ही बदल दी। जहां पहले कुछ एकड़ में जमीन की सिंचाई हो पाती थी, अब solar दीदी के solar pump से 40 एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में पानी पहुँच रहा है। Solar दीदी के इस अभियान में गांव के दूसरे किसान भी जुड़ गए हैं। उनकी फसलें हरी-भरी होने लगी हैं आमदनी बढ़ने लगी।

पहले देवकी जी की जिंदगी चारदीवारी के भीतर सिमटी हुई थी। लेकिन आज वो पूरे आत्मविश्वास से अपना काम कर रही है, Solar दीदी बनकर पैसे कमा रहीं हैं और सबसे दिलचस्प बात कि वो क्षेत्र के किसानों से UPI के जरिए payment लेती हैं। अब पूरे गांव में उन्हें बहुत सम्मान से देखा जाता है। उनकी मेहनत और दूरदर्शिता ने दिखा दिया है कि सौर-ऊर्जा सिर्फ बिजली का साधन नहीं है, बल्कि ये गांव-गांव में नई रोशनी लाने वाली एक नई शक्ति भी है।

15 सितंबर को भारत के महान engineer मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया जी का जन्मदिन होता है। उस दिन को हम Engineers' Day के रूप में मनाते हैं। Engineer सिर्फ machine नहीं बनाते, वे सपनों को हकीकत में बदल देने वाले कर्मयोगी होते हैं । मैं भारत के हर engineer की सराहना करता हूँ। उन्हें अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ ।

सितंबर में ही भगवान विश्वकर्मा की पूजा का पवित्र अवसर भी आने वाला है। 17 सितंबर को विश्वकर्मा जयंती है। ये दिन हमारे उन विश्वकर्मा बंधुओं को भी समर्पित है, जो पारंपरिक शिल्प, कौशल और ज्ञान-विज्ञान को अनवरत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचा रहे हैं। हमारे सुतार, लोहार, सोनार, कुम्हार, मूर्तिकार, बढ़ई- मिस्त्री, हमेशा से भारत की समृद्धि की बुनियाद रहे हैं। हमारे इन विश्वकर्मा बंधुओ की मदद के लिए ही सरकार ने विश्वकर्मा योजना भी चलाई है।

अब मैं आपको एक audio recording सुनाना चाहता हूं -

''तो ये जो मानपत्र में आपने लिखा है कि स्टेटों के बारे में मैंने जो कुछ किया या हैदराबाद के बारे में हमारी गवर्नमेंट ने जो कुछ किया, ठीक है किया, लेकिन आप जानते हैं कि ये हैदराबाद का किस्सा इस तरह से है, हमने किया, उसमें कितनी मुश्किल हुई। सब स्टेटों के साथ, सब Princes के साथ हमने वायदा दिया था कि भाई कोई Prince का कोई राजा का हम गलत फैसला नहीं करेंगे। सबका एक ही साथ जैसा सबका होता है वैसा उनका भी होगा। लेकिन उनके लिए हमने वहाँ तक अलग समझौता किया।''

ये आवाज लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की है। हैदराबाद की घटनाओं पर उनके स्वर में जो पीड़ा है, उसे आप महसूस कर सकते हैं। अगले महीने सितंबर में हम Hyderabad Liberation Day भी मनाएंगे। ये वही महीना है जब हम उन सभी वीरों के साहस को याद करते हैं जिन्होंने 'Operation Polo' में हिस्सा लिया था। आप सबको मालूम है कि जब अगस्त 1947 (Nineteen Forty Seven) में भारत को आजादी मिली, तो हैदराबाद अलग ही स्थिति में था। निजाम और रजाकारों के अत्याचार दिन-ब-दिन बढ़ते जा रहे थे। तिरंगा फहराने या 'वंदे मातरम्' कहने पर भी मौत के घाट उतार दिया जाता था। महिलाओं और गरीबों पर अत्याचार किए जाते थे। उस समय बाबा साहेब आंबेडकर ने भी चेतावनी दी थी कि ये समस्या बहुत बड़ी बनती जा रही है। आखिरकार, सरदार पटेल ने मामले को अपने हाथ में लिया। उन्होंने सरकार को 'Operation Polo' शुरू करने के लिए तैयार किया। रिकॉर्ड समय में हमारी सेनाओं ने हैदराबाद को निजाम की तानाशाही से आजाद कराया और उसे भारत का हिस्सा बनाया। पूरे देश ने इस सफलता का उत्सव मनाया।

आप दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएं, वहां आपको भारतीय संस्कृति का प्रभाव देखने को जरूर मिलेगा और ये प्रभाव केवल दुनिया के बड़े शहरों तक सीमित नहीं है बल्कि इसे छोटे-छोटे शहरों में भी देखा जा सकता है। इटली के एक छोटे से शहर कैम्प-रोतोंदो में ऐसा ही देखने को मिला है। यहां महर्षि वाल्मीकि जी की प्रतिमा का अनावरण किया गया। इस कार्यक्रम में वहां के स्थानीय मेयर सहित क्षेत्र के अनेक अहम व्यक्ति भी शामिल हुए। कैम्प-रोतोंदो में रहने वाले भारतीय मूल के लोग महर्षि वाल्मीकि जी की प्रतिमा लगने से बहुत खुश है। महर्षि वाल्मीकि के संदेश हम सभी को बहुत प्रेरित करते हैं।

इस महीने की शुरुआत में कनाडा के मिसीसागा में प्रभु श्री राम की 51 फीट ऊंची प्रतिमा का भी अनावरण किया गया है। इस आयोजन को लेकर लोगों में बहुत उत्साह था। social media पर प्रभु श्रीराम की भव्य प्रतिमा के Videos खूब share किए गए।

रामायण और भारतीय संस्कृति के प्रति ये प्रेम अब दुनिया के हर कोने में पहुंच रहा है। रूस में एक मशहूर स्थान है - Vladivostok. बहुत से लोग इसको ऐसी जगह के रूप में जानते हैं, जहां सर्दियों में तापमान -20 (minus twenty) से -30 (minus thirty) डिग्री Celsius तक गिर जाता है। इस महीने Vladivostok में एक अनूठी प्रदर्शनी लगी। इसमें रूसी बच्चों द्वारा रामायण की अलग-अलग Theme पर बनाई गई Paintings को भी showcase किया गया। यहां पर एक competition का भी आयोजन हुआ। दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ती जागरुकता देखकर वाकई बहुत प्रसन्नता होती है।

इस समय देश-भर में 'गणेश उत्सव' की धूम है। आने वाले दिनों में बहुत सारे त्योहारों की रौनक होगी। इन त्योहारों में आपको स्वदेशी की बात कभी भी भूलनी नहीं है। उपहार वही जो भारत में बना हो, पहनावा वही जो भारत में बुना हो, सजावट वही जो भारत में बने सामान से हो, रौशनी वही जो भारत में बनी झालरों से हो - और भी ऐसा बहुत कुछ, जीवन की हर जरूरत में सब कुछ स्वदेशी हो। गर्व से कहो 'ये स्वदेशी है', गर्व से कहो 'ये स्वदेशी है', गर्व से कहो ये स्वदेशी है'। इस भाव को लेकर हमें आगे चलना है। एक ही मंत्र 'Vocal for Local', एक ही रास्ता 'आत्मनिर्भर भारत', एक ही लक्ष्य 'विकसित भारत'।

इन खुशियों के बीच आप सभी स्वच्छता पर जोर देते रहें, क्योंकि जहां स्वच्छता है वहां त्योहारों का आनंद भी और बढ़ जाता है। 'मन की बात' के लिए मुझे इसी तरह बड़ी संख्या में अपने संदेश भेजते रहिए। आपका हर सुझाव इस कार्यक्रम के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अपना feedback मुझ तक जरूर पहुंचाते रहें। अगली बार जब हम मिलेंगे तो और भी नए विषयों की चर्चा होगी। ▪

संपूर्ण शिक्षक बिरादरी के सम्मान का दिन है शिक्षक दिवस

स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने राजनीति में आने से पूर्व अपने जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत किये। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे।

उन्होंने अपना जन्म दिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किये जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी जिसके परिणामस्वरूप आज भी सारे देश में उनका जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के नाम से ही मनाया जाता है।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति और द्वितीय राष्ट्रपति रहे। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, उत्कृष्ट वक्ता, महान दार्शनिक और एक आस्थावान हिन्दू विचारक थे। उन्हें 1931 में ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा सर की उपाधि प्रदान की गयी थी लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात उसका औचित्य डॉ. राधाकृष्णन के लिये समाप्त हो चुका था। जब वे उपराष्ट्रपति बन गये तो स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1954 में उन्हें उनकी महान दार्शनिक व शैक्षिक उपलिब्धयों के लिये देश का सर्वोच्च अलंकरण 'भारत रत्न' प्रदान किया।

डॉ. राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरूतनी ग्राम में, जो तत्कालीन मद्रास से लगभग 64 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, 5 सितम्बर 1888 को हुआ था। जिस परिवार में उन्होंने जन्म लिया वह एक गरीब किन्तु विद्वान ब्राह्मण परिवार था। उनका जन्म स्थान भी एक पवित्र तीर्थस्थल के रूप में विख्यात रहा है। राधाकृष्णन के पुरखे पहले कभी सर्वपल्ली नामक ग्राम में रहते थे और 18वीं शताब्दी के मध्य में उनका परिवार तिरूतनी ग्राम आ गया था, लेकिन उनके पुरखे चाहते थे कि उनके नाम के साथ उनके जन्मस्थल के ग्राम का बोध भी सदैव रहना चाहिये। इसी कारण उनके परिजन अपने नाम के पूर्व सर्वपल्ली धारण करने लगे थे। उनके पिता का नाम सर्वपल्ली वीरास्वामी और माता का नाम सीतामा था।

स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने राजनीति में आने से पूर्व अपने

जीवन के महत्वपूर्ण 40 वर्ष शिक्षक के रूप में व्यतीत किये। उनमें एक आदर्श शिक्षक के सारे गुण मौजूद थे। उन्होंने अपना जन्म दिन अपने व्यक्तिगत नाम से नहीं अपितु संपूर्ण शिक्षक बिरादरी को सम्मानित किये जाने के उद्देश्य से शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की इच्छा व्यक्त की थी, जिसके परिणामस्वरूप आज भी सारे देश में उनका जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के नाम से ही मनाया जाता है। इन दिनों जब शिक्षा की गुणात्मकता का ह्रास होता जा रहा है और गुरु-शिष्य सबन्धों की पवित्रता को ग्रहण लगता जा रहा है,उनका पुण्य स्मरण फिर एक नयी चेतना पैदा कर सकता है। 1962 में जब वे भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने, तो उनके कुछ शिष्य और प्रशंसक उनके पास गए। उन्होंने उनसे निवेदन किया की वे उनके जन्मदिन को एक समारोह के रूप में मनाना चाहते हैं। यह सुनकर उन्होंने कहा सिर्फ मेरा जन्मदिन मनाने से अच्छा अगर तुम इस दिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाओगे तो मुझे ज्यादा खुशी होगी। तब से 5 सितम्बर सारे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। उनकी यह इच्छा अध्यापन के प्रति उनके प्रेम को दर्शाती है। वे जीवनभर अपने आप को शिक्षक मानते रहे।

शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. राधाकृष्णन ने जो अमूल्य योगदान दिया वह निश्चय ही अविस्मरणीय रहेगा। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। यद्यपि वे एक जाने-माने विद्वान, शिक्षक, वक्ता, प्रशासक, राजनयिक, देशभक्त और शिक्षा शास्त्री थे, तथापि अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में अनेक उच्च पदों पर काम करते हुए भी वे शिक्षा के क्षेत्र में सतत योगदान करते रहे। उनकी मान्यता थी कि यदि सही तरीके से शिक्षा दी जाये तो समाज की अनेक बुराइयों को मिटाया जा सकता है। डॉ. राधाकृष्णन कहा करते थे कि मात्र जानकारियाँ देना शिक्षा नहीं है। यद्यपि जानकारी का अपना महत्व है और आधुनिक युग में तकनीक की जानकारी महत्वपूर्ण भी है तथापि व्यक्ति के बौद्धिक झुकाव और उसकी लोकतान्त्रिक भावना का

भी बड़ा महत्व है। ये बातें व्यक्ति को एक उत्तरदायी नागरिक बनाती हैं। शिक्षा का लक्ष्य है ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना और निरन्तर सीखते रहने की प्रवृत्ति। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को ज्ञान और कौशल दोनों प्रदान करती है तथा इनका जीवन में उपयोग करने का मार्ग प्रशस्त करती है। करुणा, प्रेम और श्रेष्ठ परंपराओं का विकास भी शिक्षा के उद्देश्य हैं।

वे कहते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती। एक आदर्श शिक्षक के सभी गुण उनमें विद्यमान थे। उनका कहना था कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनाया जाना चाहिये जो सबसे अधिक बुद्धिमान हों। शिक्षक को मात्र अच्छी तरह अध्यापन करके ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिये अपितु उसे अपने छात्रों का स्नेह और आदर भी अर्जित करना चाहिये। सम्मान शिक्षक होने भर से नहीं मिलता, उसे अर्जित करना पड़ता है।

हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन

शिक्षा का प्रभाव जहाँ प्रत्येक व्यक्ति पर निश्चित रूप से पड़ता है, वहीं शैक्षिक संस्थान की गुणवत्ता भी अपना प्रभाव छोड़ती है। क्रिश्चियन संस्थाओं द्वारा उस समय पश्चिमी जीवन मूल्यों को विद्यार्थियों के भीतर काफी गहराई तक स्थापित किया जाता था। यही कारण है कि क्रिश्चियन संस्थाओं में अध्ययन करते हुए राधाकृष्णन के जीवन में उच्च गुण समाहित हो गये। लेकिन उनमें एक अन्य परिवर्तन भी आया जो कि क्रिश्चियन संस्थाओं के कारण ही था। कुछ लोग हिन्दुत्ववादी विचारों को हेय दृष्टि से देखते थे और उनकी आलोचना करते थे। उनकी आलोचना को डॉ. राधाकृष्णन ने चुनौती की तरह लिया और हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन करना आरंभ कर दिया। डॉ. राधाकृष्णन यह जानना चाहते थे कि वस्तुतः किस संस्कृति के विचारों में चेतनता है और किस संस्कृति के विचारों में जड़ता है, तब स्वाभाविक अंतर्प्रज्ञा द्वारा इस बात पर दृढ़ता से विश्वास करना आरंभ कर दिया कि भारत के दूरस्थ स्थानों पर रहने वाले गरीब तथा अनपढ़ व्यक्ति भी प्राचीन सत्य को जानते थे। इस कारण राधाकृष्णन ने तुलनात्मक रूप से यह जान लिया कि भारतीय आध्यात्म काफी समृद्ध है और क्रिश्चियन मिशनरियों द्वारा हिन्दुत्व की आलोचनाएँ निराधार हैं। इससे इन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि भारतीय संस्कृति धर्म, ज्ञान और सत्य पर आधारित है जो प्राणी को जीवन का सच्चा सन्देश देती है।

भारतीय संस्कृति

डॉ. राधाकृष्णन ने यह भली भाँति जान लिया था कि जीवन बहुत ही छोटा है परन्तु इसमें व्याप्त खुशियाँ अनिश्चित हैं। इस कारण व्यक्ति को सुख-दुख में समभाव से रहना चाहिये। वस्तुतः मृत्यु एक अटल सच्चाई है, जो अमीर गरीब सभी को अपना ग्रास बनाती है तथा किसी प्रकार का वर्ग भेद नहीं करती। सच्चा ज्ञान वही है जो आपके अन्दर के अज्ञान को समाप्त कर सकता है। सादगी-पूर्ण, संतोष-प्रवृत्ति का जीवन अमीरों के अहंकारी जीवन से बेहतर है, जिनमें असन्तोष का निवास है।

एक शान्त मस्तिष्क बेहतर है, तालियों की उन गड़गड़ाहटों से, जो संसदों एवं दरबारों में सुनायी देती हैं। वस्तुतः इसी कारण डॉ. राधाकृष्णन भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों को समझ पाने में सफल रहे, क्योंकि वे विभिन्न समुदायों द्वारा की गई आलोचनाओं के सत्य को स्वयं परखना चाहते थे। इसीलिए कहा गया है कि आलोचनाएँ परिशुद्धि का कार्य करती हैं। सभी माताएँ अपने बच्चों में उच्च संस्कार देखना चाहती हैं। इसी कारण वे बच्चों को ईश्वर पर विश्वास रखने, पाप से दूर रहने एवं मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करने का पाठ पढ़ाती हैं। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने यह भी जाना कि भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों का आदर करना सिखाया गया है और सभी धर्मों के लिये समता का भाव भी हिन्दू संस्कृति की विशिष्ट पहचान है। इस प्रकार उन्होंने भारतीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान को समझा और उसके काफी नजदीक हो गये।

जीवन दर्शन एक आदर्श शिक्षक

डॉ. राधाकृष्णन समस्त विश्व को एक शिक्षालय मानते थे। उनकी मान्यता थी कि शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जाना संभव है। इसीलिए समस्त विश्व को एक इकाई समझकर ही शिक्षा का प्रबन्धन किया जाना चाहिये। एक बार ब्रिटेन के एडिनबरा विश्वविद्यालय में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था कि मानव की जाति एक होनी चाहिये।

मानव इतिहास का सम्पूर्ण लक्ष्य मानव जाति की मुक्ति है। यह तभी संभव है जब समस्त देशों की नीतियों का आधार विश्व शान्ति की स्थापना का प्रयत्न करना हो। वे अपनी बुद्धिमतापूर्ण व्याख्याओं, आनन्ददायी अभिव्यक्तियों और हँसाने व गुदगुदाने वाली कहानियों से अपने छात्रों को मन्त्रमुग्ध कर दिया करते थे। वे छात्रों को प्रेरित करते थे कि वे उच्च नैतिक मूल्यों को अपने आचरण में उतारें। वे जिस विषय को पढ़ाते थे, पढ़ाने के पहले स्वयं उसका अच्छा अध्ययन करते थे। दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी वे अपनी शैली की नवीनता से सरल और रोचक बना देते थे।

मात्र ढाई हजार वेतन!!

1952 से 1962 तक देश के उपराष्ट्रपति रहने के बाद सन् 1962 में वे भारत के राष्ट्रपति चुने गए। उन दिनों राष्ट्रपति का वेतन 10 हजार रुपए मासिक था लेकिन डॉ. राधाकृष्णन मात्र ढाई हजार रुपए ही लेते थे और शेष राशि प्रधानमंत्री के राष्ट्रीय राहत कोष में जमा करा देते थे। देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचकर भी वे सादगी भरा जीवन बिताते रहे। ▪

गुरु का महत्व

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पांय
बलिहारी गुरु आपकी गोविंद दियो बताए।

कबीरदास जी द्वारा लिखी गई उक्त पंक्तियाँ जीवन में गुरु के महत्व को वर्णित करने के लिए काफी हैं। भारत में प्राचीन समय से ही गुरु व शिक्षक परंपरा चली आ रही है। गुरुओं की महिमा का वृत्तांत ग्रंथों में भी मिलता है। जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता, क्योंकि वे ही हमें इस रंगीन खूबसूरत दुनिया में लाते हैं। उनका ऋण हम किसी भी रूप में उतार नहीं सकते, लेकिन जिस समाज में रहना है, उसके योग्य हमें केवल शिक्षक ही बनाते हैं। यद्यपि परिवार को बच्चे के प्रारंभिक विद्यालय का दर्जा दिया जाता है, लेकिन जीने का असली सलीका उसे शिक्षक ही सिखाता है। समाज के शिल्पकार कहे जाने वाले शिक्षकों का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता, क्योंकि वह ना सिर्फ विद्यार्थी को सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं,बल्कि उसके सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है। ▪

देश सेवा में डॉ. विश्वेश्वरैया

अभियंता दिवस भारत में प्रत्येक वर्ष 15 सितम्बर को मनाया जाता है। इसी दिन भारत के महान अभियंता और भारतरत्न प्राप्त मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म दिवस होता है। आज भी मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को आधुनिक भारत के विश्वकर्मा के रूप में बड़े सम्मान के साथ स्मरण किया जाता है। अपने समय के बहुत बड़े इंजीनियर, वैज्ञानिक और निर्माता के रूप में देश की सेवा में अपना जीवन समर्पित करने वाले डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया को भारत ही नहीं, वरन विश्व की महान प्रतिभाओं में गिना जाता है।

एक सौ एक वर्ष का यशस्वी जीवन जीने वाले मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया सदैव भारतीय आकाश में अपना प्रकाश बिखेरते रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 1968 ई. में डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की जन्म तिथि को अभियंता दिवस घोषित किया गया था। तब से हर वर्ष इस पुनीत अवसर पर सभी भारतीय अभियंता एकत्रित होकर उनकी प्रेरणादायिनी कृतित्व एवं आदर्शों के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित कर अपने कार्य-कलापों का आत्म विमोचन करते हैं और इसे संकल्प दिवस के रूप में मनाने का प्रण लेते हैं। संकल्प अपने दायित्वों एवं कर्तव्यों का समर्पित भाव से निर्वहन करते हैं।

भारत की आजादी के बाद नये भारत के निर्माण और विकास में प्रतिभावान इंजीनियरों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। गांव एवं शहरों के समग्र विकास के लिए सड़कों, पुल-पुलियों और सिंचाई जलाशयों सहित अधोसंरचना निर्माण के अनेक कार्य हो रहे हैं। हमारे इंजीनियरों ने अपनी कुशलता से इन सभी निर्माण कार्यों को गति प्रदान की है। राज्य और देश के विकास में इंजीनियरों के इस योगदान के साथ-साथ अभियंता दिवस के इस मौके पर भारतरत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की प्रेरणादायक जीवन गाथा को भी याद किया जाता है। विश्वेश्वरैया का जन्म मैसूर, जो कि अब कर्नाटक में है, के मुद्देनाहल्ली नामक स्थान पर 15 सितम्बर, 1861 को हुआ था। बहुत ही गरीब परिवार में जन्मे विश्वेश्वरैया का बाल्यकाल बहुत ही आर्थिक संकट में व्यतीत हुआ था। उनके पिता वैद्य थे। वर्षों पहले उनके पूर्वज आंध्र प्रदेश के मोक्षगुंडम नामक स्थान से मैसूर में आकर बस गये थे। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने प्रारंभिक शिक्षा

जन्म स्थान से ही पूरी की। आगे की पढ़ाई के लिए उन्होंने बंगलूर के सेंट्रल कॉलेज में दाखिला लिया। लेकिन यहाँ उनके पास धन का अभाव था। अतः उन्हें ट्यूशन करना पड़ा। विश्वेश्वरैया ने 1881 में बी.ए. की परीक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त किया। इसके बाद मैसूर सरकार की मदद से इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए पूना के साइंस कॉलेज में दाखिला लिया। 1883 की एल.सी.ई. व एफ.सी.ई. (वर्तमान समय की बीई उपाधि) की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके अपनी योग्यता का परिचय दिया। इसी उपलिब्ध के चलते महाराष्ट्र की सरकार ने इन्हें नासिक में सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त किया था।

दक्षिण भारत के मैसूर, कर्नाटक को एक विकसित एवं समृद्धशाली क्षेत्र बनाने में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का अभूतपूर्व योगदान रहा है। जब देश स्वंतत्र नहीं था, तब कृष्ण राज सागर बांध, भद्रावती आयरन एंड स्टील वर्क्स, मैसूर संदल ऑयल एंड सोप फैक्टरी, मैसूर विश्वविद्यालय, बैंक ऑफ मैसूर समेत अन्य कई महान् उपलिब्धयां मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के कड़े प्रयास से ही संभव हो पाई। इसीलिए इन्हें कर्नाटक का भगीरथ भी कहते हैं। जब वह केवल 32 वर्ष के थे, उन्होंने सिंधु नदी से सुक्कुर कस्बे को पानी की पूर्ति भेजने का प्लान तैयार किया, जो सभी इंजीनियरों को पसंद आया। सरकार ने सिंचाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के उपायों को ढूंढने के लिए समिति बनाई। इसके लिए विश्वेश्वरैया ने एक नए लॉक सिस्टम को ईजाद किया। उन्होंने स्टील के दरवाजे बनाए, जो कि बांध से पानी के बहाव को रोकने में मदद करता था। उनके इस सिस्टम की प्रशंसा ब्रिटिश अधिकारियों ने मुक्त कंठ से की थी। आज यह प्रणाली पूरे विश्व में प्रयोग में लाई जा रही है। विश्वेश्वरैया ने मूसा व इसा नामक दो नदियों के पानी को बांधने के लिए भी प्लान तैयार किए। इसके बाद उन्हें मैसूर का चीफ इंजीनियर नियुक्त किया गया। मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया के जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य भी हैं, जो आज किसी भी अभियन्ता को प्रेरणा प्रदान करने की अभूतपूर्व सामर्थ्य रखते हैं।

जब भारत में अंग्रेजों का शासन था, खचाखच भरी एक रेलगाड़ी चली जा रही थी। यात्रियों में अधिकतर अंग्रेज थे। एक डिब्बे में एक भारतीय मुसाफिर गंभीर मुद्रा में बैठा था। सांवले रंग और मंझले कद का वह यात्री साधारण वेशभूषा में था, इसलिए वहाँ बैठे अंग्रेज उसे मूर्ख और अनपढ़ समझ रहे थे और उसका मजाक उड़ा रहे थे। पर वह व्यक्ति किसी की बात पर ध्यान नहीं दे रहा था। अचानक उस व्यक्ति ने उठकर गाड़ी की जंजीर खींच दी।

तेज रफ्तार में दौड़ती वह गाड़ी तत्काल रुक गई। सभी यात्री उसे भला-बुरा कहने लगे। थोड़ी देर में गार्ड भी आ गया और उसने पूछा 'जंजीर किसने खींची है?' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया 'मैंने खींची है।' कारण पूछने पर उसने बताया 'मेरा अनुमान है कि यहाँ से लगभग एक फर्लांग की दूरी पर रेल की पटरी उखड़ी हुई है।' गार्ड ने पूछा 'आपको कैसे पता चला?' वह बोला 'श्रीमान! मैंने अनुभव किया कि गाड़ी की स्वाभाविक आवाज की गति में अंतर आ गया है। पटरी से गूंजने वाली आवाज की गति से मुझे खतरे का आभास हो रहा है।'

गार्ड उस व्यक्ति को साथ लेकर जब कुछ दूरी पर पहुँचा तो यह देखकर दंग रहा गया कि वास्तव में एक जगह से रेल की पटरी के जोड़ खुले हुए थे और सब नट-बोल्ट अलग बिखरे पड़े थे। दूसरे यात्री भी वहाँ आ पहुँचे। जब लोगों को पता चला कि उस व्यक्ति की सूझबूझ के कारण उनकी जान बच गई है तो वे उसकी प्रशंसा करने लगे। गार्ड ने पूछा 'आप कौन हैं?' उस व्यक्ति ने कहा 'मैं एक इंजीनियर हूँ और मेरा नाम है डॉ. एम. विश्वेश्वरैया।' नाम सुन कर सब स्तब्ध रह गए। दरअसल उस समय तक देश में डॉ. विश्वेश्वरैया की ख्याति फैल चुकी थी। लोग उनसे क्षमा मांगने लगे। डॉ. विश्वेश्वरैया का उत्तर था 'आप सब ने मुझे जो कुछ भी कहा होगा, मुझे तो बिल्कुल याद नहीं है।' ▪

राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल अर्थ-रचना

पं. दीनदयाल उपाध्याय

प्राचीन साहित्य में कहीं-कहीं जहाँ राजा का वर्णन किया गया है और राज्यधर्म का उसको उपदेश दिया गया है, वहाँ उसे अत्यन्त महत्वशाली अवश्य बताया गया है। यह शायद इसलिए कि उसे अपने कर्तव्य का भान रहे, अपने दायित्व की जानकारी रहे। वह संपूर्ण समाज जीवन के ऊपर प्रभाव डालने वाला व्यक्ति है। उसे अपने ऊपर पूरा ध्यान देना चाहिए। महाभारत में भीष्म ने यही बात कहीं। राजा काल का कारण है अथवा काल राजा का कारण? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने बिल्कुल निश्चयात्मक रूप से बतलाया। **राजा कालस्य कारणम् कि** राजा ही काल का कारण है। अब इसमें से कुछ लोग यह निष्कर्ष निकाल लेते हैं कि उन्होंने राजा को ही सर्वोपरि माना है, परन्तु यह बात सत्य नहीं है। भीष्म ने राजा को इतना महत्व देते हुए भी विधि से ऊपर नहीं बताया। राजा का प्रभाव होता है सत्य है और राजा, समाज में धर्म रहे, इस बात को देखने की जिम्मेदारी लेकर चलता है, यह भी सत्य है। किन्तु राजा धर्म का निर्माण करने वाला नहीं होता। धर्म का लोग पालन करें यही बात वह देखने वाला है। यानि एक प्रकार से कहा जाय तो राजा का स्थान उतना ही है, जितना आज के समय में कार्यपालिका का होता है।

जिम्मेदार कार्यपालिका

कार्यपालिका आज भी कानून नहीं बनाती, परन्तु राज्य ठीक प्रकार से चले यह जिम्मेदारी कार्यपालिका पर होती है। अगर कार्यपालिका ठीक न चले तो कानून की कैसी धज्जियां उड़ती हैं, वह आज हम अच्छी तरह से देख रहे है। आज भी हम कह सकते हैं कार्यपालिका **कालस्य कारणम् कि** आज जो बुराइयाँ चल रही हैं उसमें कार्यपालिका की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। आखिर नशाबन्दी क्यों असफल हो गई है? यहाँ उसके लिए कौन जिम्मेदार है? जिन लोगों पर इस बात का दायित्व डाला गया कि नशाबन्दी चलेगी कहाँ से? उसके लिए जिम्मेदारी कार्यपालिका पर आती है। इसी जिम्मेदारी के रूप में भीष्म की उपर्युक्त सर्वप्रभुता संपन्न माना है। अगर ऐसा होता तो फिर अत्याचारी राजा वेण को राज्यसिंहासन से हटाकर पृथु को गद्दी पर बिठाने का काम ऋषियों ने न किया होता। ऋषियों के इस कार्य को किसी भी शास्त्र ने, किसी भी इतिहास ने बुरा नहीं कहा, बल्कि अच्छा ही कहा। धर्म की प्रभुता स्वीकार करने पर ही ऋषियों को अधर्मी राजा को हटाने का अधिकार प्राप्त होता है, अन्यथा राजा को हटाना अवैध माना जाता। यदि राजा अपने कर्तव्य का पालन न करे तो राजा को हटाना धर्म है। किन्तु पश्चिम में एक राजा को दूसरे राजा ने संघर्ष करके हटाया या जनता ने उस समय हटाया जब उन्होंने तत्वतः राजपद्धति को अमान्य कर दिया। वहाँ राजा ईश्वर का प्रतिनिधि है और किसी भी परिस्थिति में नहीं हटाया जा सकता।

समाज व्यवस्था में अनेक संस्थायें

राजा या राज्य सर्वोपरि तो है ही नहीं, वह एकमेव संस्था भी नहीं है। समाज की व्यवस्था तथा उसके जीवन का नियमन करने वाली, समाज की व्यवस्था देखने वाली, अनेक संस्थायें हैं। उनका प्रादेशिक और व्यवसायिक दोनों आधारों पर गठन हुआ है। पंचायतें और जनपद सभायें हमारे यहाँ रही है। बड़े-से-बड़े चक्रवर्ती सार्वभौम राजा ने कभी पंचायतों को समाप्त नहीं किया। इसी प्रकार व्यवसायिक संगठन भी रहे हैं। उन्हें भी किसी ने समाप्त नहीं किया, अपितु उनकी स्वायात्तता को स्वीकार किया गया। अपने-अपने क्षेत्र में उन्होंने नियम बनाये। जाति की पंचायतें, श्रेणियाँ, निगम, ग्राम पंचायतें, जनपद सभायें आदि संस्थायें नियम बनाती थीं। राज्य का काम यही था कि इन नियमों का पालन होता है कि नहीं, यह देखें। राज्य ने कभी उनके मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया। इस प्रकार हमारे यहाँ राज्य तो जीवन के थोड़े से हिस्से को ही छूता था। इसी प्रकार आर्थिक क्षेत्र में भी अनेक संस्थाएं जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से हमें आज कुछ अर्थव्यवस्था का भी विचार करना पड़ेगा। अर्थव्यवस्था कैसी हो? हमें ऐसी व्यवस्था चाहिए जो हमारे मानवत्व को विकसित कर सके, हमारे मानव्य को समाप्त न करें, उसके ऊपर प्रतिकूल प्रभाव न डाले और जिसके द्वारा हम मानव से ऊँचे उठकर देवत्व को प्राप्त कर सकें। क्योंकि हमारे यहाँ पर मानव जीवन का पूर्ण विकास उसका देवत्व के रूप में आविर्भाव ही माना गया। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अर्थव्यवस्था की क्या मर्यादायें होनी चाहिए, इसका विचार करें।

अर्थव्यवस्था की मर्यादायें

लोगों के भरण-पोषण के लिए, जीवन के विकास के लिए और राष्ट्र की धारणा और विकास के लिए जिन मौलिक साधनों की आवश्यकता होती है उनका उत्पादन अर्थव्यवस्था का लक्ष्य होना चाहिए। न्यूनतम मर्यादा के बाद और अधिक समृद्धि एवं सुख के लिए अर्थोत्पादन करना चाहिए या नहीं, यह स्वाभाविक प्रश्न पैदा होता है। पश्चिम का अर्थशास्त्र तो इच्छाओं को बराबर समझता है। इस विषय में उसकी कोई अधिकतम मर्यादा नहीं है। सामान्यतयाः तो पहले इच्छा होती है और फिर उसकी पूर्ति के साधन जुटाये जाते है, उसके उपयोग हो इसके लिए लोगों में इच्छा पैदा की जाती है। बाजार के लिए माल पैदा करने के स्थान पर पैदा किये हुए के लिए बाजार ढूँढना, न मिले तो बाजार पैदा करना आज की अर्थनीति का प्रमुख अंग बन गया है। आरंभ में उत्पादन उपभोग का अनुसरण करता था, अब उपभोग

उत्पादन का अनुचर है।

हम चाय का ही उदाहरण लें। चाय की माँग थी, इसलिए चाय नहीं पैदा की गई। किन्तु चाय पैदा की गई और इसलिए हमें पीना सिखाई गई। हम जब चाय पीते हैं। वह हमारे जीवन का एक अंग बन गई है। इसी प्रकार हम आजकल वनस्पति तेल का उपभोग कर रहे हैं। क्या हमने कभी इसकी माँग की थी? वास्तव में वनस्पति पैदा किया गया और फिर हमें उसका उपभोग सिखाया गया। जो कुछ पैदा होता है यदि उसका उपभोग न करें तो वहाँ पर मन्दी आ जावेगी। 1930-32 की मन्दी का जमाना हमें याद होगा। उस समय माल तो था पर उसकी खपत नहीं थी, इसलिए धड़ाधड़ कारखाने बन्द होते जाते थे। दिवाले निकल रहे थे तथा बेकारी बढ़ती जाती थी। इसलिए आज महत्व की वस्तु यह हो गई है कि पैदा माल की खपत हो जाय।

अंग्रेजी के साप्ताहिक ऑर्गनाइजर के संपादक कुछ वर्ष पूर्व अमरीका गये थे। वहाँ से लौटने के बाद उन्होंने एक मजेदार घटना बताई। वहाँ आलू छीलने का चाकू बनाने का एक कारखाना है। उस कारखाने का उत्पादन इतना बढ़ गया कि लोगों की आवश्यकता से ज्यादा पैदा करने लगा। अतः प्रश्न पैदा हुआ कि लोग चाकू अधिक संख्या में खरीदें इसका कोई तरीका ढूंढा जाए। कारखाने के सेल्समेनों की बैठक हुई। एक सुझाव रखा गया कि यदि चाकू के बेंटे का रंग आलू के छिलके जैसा ही बनाया जाय तो आलू छीलने क बाद छिलके के साथ चाकू को भी कूड़े की टोकरी में फेंकने की संभावना बढ़ जाएगी। इस प्रकार माल की अधिक खपत होगी। चाकू को आकर्षक बनाने के लिए सुन्दर पैकिंग की भी व्यवस्था की गई। अब यह अर्थव्यवस्था उपभोग प्रधान न होकर विनाशोन्मुख है। पुराना फेंको और नया खरीदों। नया खरीदने की चाह उपभोक्ता में पैदा करना, मांग पूरी करना नहीं, मांग पैदा करना यही आज अर्थव्यवस्था का लक्ष्य हो गया है।

प्रकृति की मर्यादा न भूलें

किन्तु उत्पादन का संबंध प्राकृतिक साधनों से भी है। यदि अन्धाधुन्ध उत्पादन बढ़ाते गए तो ये प्राकृतिक साधन कब तक साथ देंगे? कुछ लोग यह कहकर समाधान कर देते हैं कि यदि एक प्रकार के साधन समाप्त हो गए तो दूसरी प्रकार की वस्तुओं की खोज हो जाएगी। नये इंस्टीट्यूट ढूँढे जा सकते हैं। उनके इस तर्क में निहित बल को स्वीकार करने के बाद भी यह कहना पड़ेगा कि प्रकृति की सम्पदा अपार होने पर भी उसकी मर्यादा है। यदि बड़ी तेजी के साथ आवश्यक रूप से हम उसका खर्च करते गए तो एक दिन हमें पछताना पड़ेगा।

प्रकृति से उच्छृंखलता

प्रकृति की संपदा की मर्यादा की चिन्ता न भी करें तो कम से कम इतना तो हमें मानना ही पड़ेगा कि प्रकृति में विभिन्न वस्तुओं के बीच एक परस्परावलंबी सबन्ध हैं। एक-दूसरे के सहारे खड़ी तीन लकड़ियों में से यदि हम एक की स्थिति में परिवर्तन कर दें तो शेष दो अपने आप गिर जाएंगी। आज की अर्थव्यवस्था और उत्पादन की पद्धति इस सामंजस्य को बड़ी तेजी से बिगाड़ती जा रही है। परिणामतः जहाँ एक ओर हम नये-नये प्रश्न हमारी संपूर्ण सभ्यता और मानवता को समाप्त करने के लिए पैदा होते जा रहे है। हम प्रकृति से उतना तथा इस प्रकार लें कि वह उस कमी को स्वयं पुनः पूरित कर ले। पेड़ से फल लेने में उसकी हानि नहीं होती, लाभ होता है। पर भूमि से अधिक फसल लेने के लोभ में हम ऐसे उर्वरकों का प्रयोग कर रहे हैं जिनसे कुछ दिनों के बाद उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो जाती है। आज अमरीका मे लाखों एकड़ भूमि इस प्रकार की खेती के कारण ऊसर हो चुकी है। यह विनाशलीला कब तक चलती रहेगी?

कारखानेदार मशीन आदि के लिए घिसाई-निधि की व्यवस्था करता है। परन्तु प्रकृति के इस कारखाने के लिए हम किसी भी घिसाई निधि की चिन्ता न करें, यह कैसे हो सकता है, इस दृष्टि से विचार किया जाए तो कहना होगा कि हमारी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य अमर्यादा उपभोग नहीं अपितु संयमित उपभोग होना चाहिए। सोद्देश्य, सुखी, विकासमान जीवन के लिए जिन भौतिक साधनों की आवश्यकता है वे अवश्य ही प्राप्त होने चाहिए। भगवान की सृष्टि का अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उतनी व्यवस्था उसने की है। किन्तु जब हम यह समझ कर कि भगवान ने मनुष्य को केवल उपभोग प्रवण प्राणी बनाया है और उसके लिए अन्धाधुन्ध उपभोग के लिए ही अपनी संपूर्ण शक्ति खर्च करें, तो यह ठीक नहीं। इंजिन को चलाने के लिए कोयला चाहिए। किन्तु कोयला खाने के लिए इंजिन नहीं बनाया गया।

प्रत्युत हमारा प्रयत्न तो यही रहता है कि कम से कम ईंधन से ज्यादा से ज्यादा शक्ति कैसे पैदा हो। यह बचत का दृष्टिकोण है। मानव जीवन के उद्देश्य का विचार करके हमें ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वह न्यूनतम ईंधन से अधिकतम गति के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकें। यह अर्थव्यवस्था माननी होगी। यह मानव के एक पहलू का विचार न कर उसके पूर्ण जीवन का तथा अन्तिम उद्देश्य का विचार करेगी। यह संहारात्मक न होकर सृजनात्मक होगी। यह प्रकृति के शोषण पर निर्भर न रहकर उसके पोषण पर निर्भर रहेगी। शोषण नहीं, दोहन हमारा आधार होना चाहिए था। प्रकृति का स्तन्य हमारे लिए जीवनदायी हो, यही व्यवस्था करनी चाहिए।

पश्चिम के घातक आर्थिक नारे

अर्थव्यवस्था का यह मानवी उद्देश्य रहा तो आर्थिक प्रश्नों की ओर देखने की हमारी दृष्टि बदल जायेगी। पश्चिम की अर्थव्यवस्था में, वह पूंजीवादी हो या समाजवादी, मूल्य को अत्यन्त महत्व का एवं केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। उसके चारों ओर ही संपूर्ण आर्थिक विचार चक्कर लगाता रहता है। एक नैयायिक की दृष्टि से मूल्य सबन्धी विश्लेषण का चाहे जो महत्व हो किन्तु उसके आधार पर जो जीवनदर्शन बने हैं वे बहुत ही अधूरे, अमानवीय एवं कुछ अंशों में नीति-विहीन भी हैं। एक उदाहरण लें। आजकल का नारा लगाया जाता है कमाने वाला खाएगा। सामान्यतया यह नारा कम्यूनिस्ट लगाते हैं, किन्तु पूंजीवादी भी इस नारे के मूल में निहित सिद्धान्त से असहमत नहीं। यदि दोनों में झगड़ा है तो इसी बात का कि कौन कितना कमाता है। पूंजीवादी साहस और पूँजी को महत्व देते हैं और इसलिए खाने में उनका प्रमुख भाग रहा तो उसे वे उचित ही मानते हैं। दूसरी ओर कम्यूनिस्ट श्रम को ही निर्माण मानते हैं, इसलिए वे श्रमिक को ही खाने का अधिकार देते हैं। ये दोनों ही विचार ठीक नहीं हैं। वास्तव में तो हमारा नारा होना चाहिए 'कमाने वाला खिलायेगा' तथा जन्मा सो खायेगा। खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त होता है। कमाने की पात्रता शिक्षा से आती है। समाज में जो कमाते नहीं वे भी खाते हैं। बच्चे, बूढ़े, रोगी, अपाहिज सबकी चिन्ता समाज को करनी पड़ती है। प्रत्येक समाज इस कर्तव्य का निर्वाह करता है। मानव की सामाजिकता और संस्कृति का मापदण्ड इस कर्तव्य के निर्वाह की तत्परता ही है। इस कर्तव्य के निर्वाह की क्षमता पैदा करना ही अर्थव्यवस्था का काम है। अर्थशास्त्र इस कर्तव्य की प्रेरणा का विचार नहीं कर पाता। काम तो मनुष्य अपने इस कर्तव्य के निर्वाह के लिए करता है, अन्यथा जिनकी भूख मिट गई है वे काम ही नहीं करेंगे।

न्यूनतम स्तर

मानव के नाते भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति किसी भी अर्थव्यवस्था का न्यूनतम स्तर है। रोटी, कपड़ा और मकान मोटे रूप में इन आवश्यकताओं की अभिव्यंजना करते हैं। इसी प्रकार व्यक्ति को समाज के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह करने के लिए सक्षम बनाना भी समाज का आधारभूत दायित्व है। और किसी भी प्रकार के अस्वास्थ्य की दशा में व्यक्ति को स्वस्थ्य बनाने की व्यवस्था करना तथा उसके निर्वाह की व्यवस्था करना भी समाज का काम है। इतना कम से कम जिस राज्य में हो वही धर्मराज्य है, नहीं तो अधर्म राज्य है। ▪

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत मुख्यमंत्री निवास पर तिरंगा लहराया।

▪ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत बैतूल स्थित अपने निवास पर तिरंगा ध्वज लगाया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी तिरंगा यात्रा में हुए शामिल हुए।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी, प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी एवं संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने मां नर्मदा की आरती की।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने लाड़ली बहनों के खातों में योजना की राशि के साथ रक्षाबंधन के शगुन की राशि भी अंतरित की।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने बैतूल में रक्षाबंधन का पर्व मनाया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी को सफाई कर्मी बहनों ने राखी बांधी।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने लोकमाता देवी अहिल्या बाई की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

"चरैवेति चरैवेति चरैवेति"

ना थको, ना रुको, ना झुको... बस चलते ही रहो...

पं. दीनदयाल उपाध्याय